पूजा अर्थ सहित

आभार -पंडित रत्न लाल जैन बैनाड़ा जी

पूजाएँ अर्थ सहित

भगवान् की पूजा करने से पुण्य बंध और कर्मों की निर्जरा दोनों होते है!कुछ लोग मानते है कि शुभोपयोग में कर्मों की निर्जरा नहीं होती,ऐसा नहीं है!पूजा के पुण्यबंध से समस्त संसारिख सुखो जैसे ६३ शलखा पुरुषों के रूप में जन्म मिलता है!इस शुभोपयोग से मोक्ष नहीं मिलेगा,यह शुभोपयोग,शुद्धोपयोग का कारण बनेगा,फिर शुद्धोपयोग से मोक्ष गमन होगा !जिसमें पूजा का पुण्य उसमे कारण है !

२-कभी सफ़र कर रहे हो तब भाव पूजा करनी चाहिए बिना द्रव्य अर्पित किये!आप पूजा सब सामान्य रूप से पढ़े किन्तु जब अर्घ अर्पित करे तब निर्वपामीति स्वाहा नहीं बोलकर नमो नम: बोलिये क्योकि आपके पास द्रव्य अर्पित करे को नहीं है !

1. समुच्य पूजा - श्री देव शास्त्र गुरु,विदेह क्षेत्र विराजमान बीस तीर्थंकर और अनन्तानत सिद्ध परमेष्ठी की समुच्चय पूजा

समुच्य पूजा

पञ्च परमेष्ठी भगवान कि जय!

सँतश्रोमणि आचार्यश्री विद्यासागर महाराज की जय !

विश्व धर्म "शाश्वत जैनधर्म की जय" !

आपके उत्साहपूर्वक दर्शन ,अभिषेक ,पूजा करने की श्रंखला में दर्शन ,पूजन ,अभिषेक विधि के पश्चात   अभिषेक पाठ (आचर्य माघनन्दि द्वारा विरचित),विनय पाठ,पूजा पीठिका, चत्तरि दण्डक,पञ्च कल्याणक अर्घ,पूजा प्रतिज्ञा पाठ,परम ऋषि स्वस्ति मंगल पाठ के अर्थ एवं भावों सहित प्रस्तुत करने के बाद इसी क्रम में आगे देव ,शास्त्र,गुरु की सम्मुचय पूजा के अर्थ से आरम्भ करते है !

आभार -पंडित रत्न लाल जैन बैनाड़ा जी

समुच्य पूजा

देव शास्त्र गुरु नमन करि,बीस तीर्थंकर ध्याय।

सिद्ध शुद्ध राजत सदा,नमूँ चित्त हुलसाय !!

शब्दार्थ: -

नमन-नमस्कार,करि-करके,ध्याय-ध्यान कर,राजत-विराजमान/सुशोभित,नमूँ-नमस्कार,चित्त-हृदय, हुलसाय-उल्हास पूर्वक!

भावार्थ: -

मै सच्चे देव,सच्चे शास्त्र और सच्चे गुरुओं को नमस्कार कर,सब तीर्थंकरों का ध्यान करके उल्लास पूर्वक हृदय से सदा के लिए सिद्धालय में विराजमान सुशोभित सिद्ध भगवान् को नमस्कार करता हूँ !

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरु समूह!अत्र अवतर अवतर संवौषट्!अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ:ठ:!अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं !

श्री विध्यमान विंशति तीर्थंकर समूह!अत्र अवतर अवतर संवौषट्!अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ:ठ:!अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं !

श्री अनंतानंत सिद्ध परमेष्ठी समूह!अत्र अवतर अवतर संवौषट्!अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ:ठ:!अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं !

अर्थ: -

पञ्च परमेष्ठी और २४ तीर्थंकर को नमस्कार करके देव शास्त्र गुरु के समूह को भक्त अपने पास आने के लिए अनुरोध करते हुए कहता है'कृपया आइये आइये',तदुपरांत उनकी स्थापना करते हुए कहता है मेरे मन मंदिर में विराजिये,उसके बाद उनसे अपने साथ सदा के लिए जुड़ने का अनुरोध करता है !

पञ्च परमेष्ठी और २४ तीर्थंकर को नमस्कार कर,विध्यमान श्री विंशति तीर्थंकरों के समूह को भक्त अपने पास आने के लिए अनुरोध करता हुआ कहता है 'कृपा करके आइये आइये',तदुपरांत उनकी स्थापना करते हुए कहता है मेरे मन मंदिर में विराजिये विराजिये ,तदुपरांत उनसे,अपने साथ सदा के लिए जुड़ने का अनुरोध करता है !

पूजा अर्थ सहित

आभार -पंडित रत्न लाल जैन बैनाड़ा जी

पञ्च परमेष्ठी और २४ तीर्थंकर को नमस्कार करके श्री अनंतानंत सिद्ध परमेष्ठी समूह,को भक्त अपने पास आने के लिए अनुरोध करते हुए कहता है 'कृपया आइये आइये'(आवाहनं) ,तदुपरांत उनकी (स्थापना)करते हुए कहता है मेरे मन मंदिर में विराजिये विराजिये,उसके बाद उनसे अपने साथ सदा के जुड़ने का अनुरोध करता है !

नोट: -

१: - नियम से ;१-देव,शास्त्र ,गुरु,२-विदेह क्षेत्र में विराजमान बीस तीर्थंकरों और ३-अंनतननत सिद्ध परमेष्ठियों की अलग अलग पूजाये करनी चाहिए!किन्तु समय के अभाव में,जैसे किसी विधान के साथ,यह सम्मुचय पूजा करी जा सकती है !

२: -त्रिकालवर्ती तीर्थंकर ५ भरत,५ ऐरावत क्षेत्रों,प्रत्येक में २४ -२४ होते है!यहाँ इन्ही नाम से सैदव,निरंतर पञ्च विदेह क्षेत्रों में प्रत्येक में ४-४ अर्थात कुल विराजमान न्यूनतम २० तीर्थंकरों की पूजा करी जा रही है न कि भरत और ऐरावत क्षेत्रों के २४ तीर्थंकरों की !जम्बू द्वीप के पूर्व,पश्चिम,उत्तर दक्षिण विदेह क्षेत्रों में सीमंधर,जुगमं- दर,बाहु और सुबाहु तीर्थंकर सदा विराजमान रहते है!जैसे जम्बूद्वीप के विदेह क्षेत्र के एक सीमंधर स्वामी को मोक्ष प्राप्त होते ही दुसरे सीमंधर नामक तीर्थंकर तुरंत बन जाते हैं!इसी प्रकार अन्य १९ तीर्थंकरों के मोक्ष प्राप्त होते ही उसी नाम से दुसरे तीर्थंकर तुरंत बन जाते है!५ -विदेह क्षेत्रों में,प्रत्येक में,३२ नगरी,अर्थात कुल १६० नगरी है!प्रत्येक नगरी में अधिकतम १-१ तीर्थंकर अर्थात कुल एक समय में १६० तीर्थंकर हो सकते है!

(सन्निधिकरण)

अनादिकाल से जग में स्वामिन्,जल से शुचिता को माना!
शुद्ध निजातम सम्यक् रत्नत्रय,निधि को नहीं पहिचाना !!
अब निर्मल रत्नत्रय-जल ले ,श्री देव शास्त्र गुरु को ध्याऊँ !
विध्यमान श्री बीस तीर्थंकर,सिद्ध प्रभु जी के गुण गाऊं !!१!!

शब्दार्थ:-

अनादिकाल-अनादिकाल से,जग-संसार में ,स्वामिन्-स्वामी (हे भगवान्),जल से शुचिता-पवित्रता,को माना!

शुद्धनिजातम-अपने आत्मा के,सम्यक् रत्नत्रय-सम्यकदर्शन,ज्ञान और चारित्र रूप,निधि-ख़ज़ाने,को नहीं पहि चाना !!

अब निर्मल-पवित्र, रत्नत्रय-रत्न तीनसम्यग(दर्शन ज्ञान,चारित्र) रूप जल ले ,श्री देव शास्त्र गुरु को ध्याऊँ !

पूजा अर्थ सहित

आभार -पंडित रत्न लाल जैन बैनाड़ा जी

विध्यमान-मौजूद,श्री बीस तीर्थंकर,सिद्ध प्रभु के गुण गाऊं!

भावार्थ: -

हे भगवान् मैं अनादिकाल से जल से ही स्नान और सफाई करने से शरीर की पवित्रता को ही पवित्र मानता रहा क्योकि अपनी शुद्धआत्मा की रत्नत्रय(सम्यक दर्शन सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र)रूप निधि-खजाने को नहीं पहिचान सका!अब निर्मल रत्नत्रय रूपी जल अर्पित कर सभी देवो शास्त्रों और गुरुओं के समूह को ध्याता हूँ समस्त विदेह क्षेत्रों मे विराजमान बीस तीर्थंकरो और अनंतानंत सिद्ध प्रभों को रत्नत्रय रूप निर्मल जल अर्पित कर के उनका गुणानुवाद करता हूँ !

ॐ ह्रीं देव शास्त्र गुरुभ्यो ! जन्म जरा मृत्यु विनाशाय जलं निर्वपामिति स्वाहा !

पञ्च परमेष्ठी और २४ तीर्थंकर को नमस्कार करके देव,शास्त्र,गुरु को अपने जन्म,जरा,मृत्यु के विनाश के लिए जल अर्पित करता हूँ !

श्री विध्यमान विंशति तीर्थंकरेभ्यो जन्म जरा मृत्यु विनाशाय जलं निर्वपामिति स्वाहा!

विदेह क्षेत्र में विराजमान २० श्री तीर्थकरों को अपनेजन्म,जरा,मृत्यु के विनाश के लिए जल अर्पित करता हूँ !

श्री अनंतानंत सिद्ध परमेष्ठीभ्यो जन्म जरा मृत्यु विनाशाय जलं निर्वपामिति स्वाहा!

अनंतानंत श्री सिद्ध परमेष्ठियों को अपने जन्म ,जरा ,मृत्यु के विनाश के लिए जल अर्पित करता हूँ !

भव आतप मिटावन की,निज में ही क्षमता समता है !
अनजाने अब तक मैंने,पर में की झूठी ममता है !!
चन्दन सम शीतलता पाने,श्रीदेव शास्त्र गुरु को ध्याऊँ !
विध्यमान श्री बीस तीर्थंकर,सिद्ध प्रभु के गुण गाऊं !!२ !!

शब्दार्थ:-

आतप-दुखों,मिटावन-समाप्त करने की,निज-अपने में,क्षमता-सामर्थ्य,पर-पर पदार्थों में,शीतलता-ठंडक,

भावार्थ-सांसारिक दुखों से मुक्त होने के लिए हम सब की आत्मा सक्षम है किन्तु अज्ञानता वश अभी तक मैंने पर-अन्य पदार्थों में मिथ्या 'ममत्व' भाव रखा!चन्दन के सामान शीतलता प्राप्त करने के लिए,मैं देव,शास्त्र गुरु को ध्याता हूँ,विदेह क्षेत्र में विराजमान समस्त २० तीर्थंकरों और अनन्तानत सिद्ध प्रभु का गुणानुवाद कर के सबको चन्दन अर्पित करता हूँ !

पूजा अर्थ सहित

आभार -पंडित रत्न लाल जैन बैनाड़ा जी

ॐ ह्रीं देव शास्त्र गुरुभ्यो!संसार ताप विनाशाय चंदनं निर्वपामिति स्वाहा !

पञ्चपरमेष्ठी और २४ तीर्थंकर को नमस्कार करके देव,शास्त्र,गुरु को अपने संसार ताप के विनाश के लिए चन्दन अर्पित करता हूँ !

श्री विध्यमान विंशति तीर्थंकरेभ्यो संसार ताप विनाशाय चंदनं निर्वपामिति स्वाहा!

विदेह क्षेत्र में विराजमान २० श्री तीर्थकरों को अपने संसार ताप के विनाश के लिए चन्दन अर्पित करता हूँ !

श्री अनंतानंत सिद्ध परमेष्ठीभ्यो संसार ताप विनाशाय चंदनं निर्वपामिति स्वाहा !

अनंतानंत श्री सिद्ध परमेष्ठियों को अपने संसार ताप के विनाश के लिए चंदन अर्पित करता हूँ !

अक्षय पद के बिन फिरा,जगत की लाख चौरासी योनि में !
अष्ट कर्म के नाश करन को,अक्षत तुम ढिंग लाया मैं !!
अक्षय पद निधि निज की पाने,श्रीदेव शास्त्र गुरु को ध्याऊँ !
विध्यमान श्री बीस तीर्थंकर,सिद्ध प्रभुजी के गुण गाऊं !!३ !!

शब्दार्थ:-

अक्षयपद-अविनाशी मोक्ष पद,फिरा-भटकता रहा ,जगत-संसार की,अक्षत-चावल,ढिंग लाया -पास लाया,अक्षय निधि-अविनाशी निधि अर्थात मोक्ष

भावार्थ: -

मैं अक्षय मोक्ष पद के अभाव में संसार में ८४ लाख योनियों में भटकता रहा!अपने अष्टकर्मों के क्षय कर मोक्ष प्राप्त करने के लिए आपके पास अक्षत लेकर आया हूँ!अपनी आत्मा के लिए इस अक्षय पद अर्थात मोक्ष रूपी खजाने की प्राप्ति के लिए,मैं देव शास्त्र और गुरु को ध्याता हूँ,विदेह क्षेत्र में विराजमान समस्त २० तीर्थकरों और अनन्तानत सिद्ध प्रभू का गुणानुवाद कर उनके समक्ष अक्षत अर्पित करता हूँ !

ॐ ह्रीं देव शास्त्र गुरुभ्यो!अक्षत पद प्राप्तये अक्षतं निर्वपामिति स्वाहा !

पञ्च परमेष्ठी और २४ तीर्थंकर को नमस्कार करके देव,शास्त्र,गुरु को मोक्ष पद प्राप्ति के लिए अक्षत अर्पित करता हूँ !

श्री विध्यमान विंशति तीर्थंकरेभ्यो अक्षत पद प्राप्तये अक्षतं निर्वपामिति स्वाहा!

पूजा अर्थ सहित

आभार -पंडित रत्न लाल जैन बैनाड़ा जी

विदेह क्षेत्र में विराजमान २० श्री तीर्थकरों को मोक्ष प्राप्ति के लिए अक्षत अर्पित करता हूँ !

श्री अनंतानंत सिद्ध परमेष्ठीभ्यो अक्षत पद प्राप्तये अक्षतं निर्वपामिति स्वाहा !

अनंतानंत श्री सिद्ध परमेष्ठियों को मोक्ष प्राप्ति के लिए अक्षत अर्पित करता हूँ !

पुष्प सुगंधी के आत्म ने,शील स्वभाव नशाया है !
मन्मथ बाणों से बिध करके,चहुँगति दुःख उपजाया है!!
स्थिरता निज में पाने को,श्री देव शास्त्र गुरु को ध्याऊँ !
विध्यमान श्री बीस तीर्थंकर,सिद्ध प्रभु के गुण गाऊं !!४ !!
शब्दार्थ:-

पुष्प सुगंधी-कामोत्तेजक पुष्प की सुगंध ने,आत-आत्मा का,शील-ब्रह्मचर्य रूप,स्वभाव-आत्मा का निज स्व- भाव,नशाया-नाश किया है,मन्मथ-कामदेव के,बिंध कर-पीड़ित होकर,चहुँ गति-चारों गतियों का,उपजाया-उत्प- न्न किया है,स्थिरता निज ने पाने को-अपनी आत्मा के स्वभाव में स्थिर होने के लिए

भावार्थ: -

पुष्पों की कामोत्तेजक सुगंध से आत्मा ने ब्रह्मचर्य स्वभाव का नाश किया है जिससे कामदेव के बाणों से पीड़ित होकर चार गतियों का दुःख हमने उत्पन्न किया है!अपनी आत्मा के निज स्वभाव में स्थिरता पाने के लिए देव, शास्त्र गुरु को ध्याता हूँ,विदेह क्षेत्र में विराजमान समस्त २० तीर्थकरों और अनन्तानत सिद्ध प्रभु का गुणानुवाद करता हूँ !

ॐ ह्रीं देव शास्त्र गुरुभ्यो!कामबाण विध्वंसाय पुष्पं निर्वपामिति स्वाहा !

पञ्च परमेष्ठी और २४ तीर्थंकर को नमस्कार करके देव शास्त्र गुरु को काम बाण के नाश के लिए पुष्प अर्पित करता हूँ !

श्री विध्यमान विंशति तीर्थंकरेभ्यो काम बाण विध्वंसाय पुष्पं निर्वपामिति स्वाहा !

विदेह क्षेत्र में विराजमान २० श्री तीर्थकरों को काम बाण के नाश के लिए पुष्प अर्पित करता हूँ !

श्री अनंतानंत सिद्ध परमेष्ठीभ्यो कामबाण विध्वंसाय पुष्पंनिर्वपामिति स्वाहा

अनंतानंत श्री सिद्ध परमेष्ठियों को कामबाण के नाश के लिए पुष्प अर्पित करता हूँ !

पूजा अर्थ सहित

आभार -पंडित रत्न लाल जैन बैनाड़ा जी

षट् रस मिश्रित भोजन से,ये भूख न मेरी शांत हुई !
आतम रस चखने से,इन्द्रिय मन-इच्छा शमन हुई !!
सर्वथा भूख के मेटन को,श्रीदेव शास्त्र गुरु को ध्याऊँ !
विध्यमान श्री बीस तीर्थंकर,सिद्ध प्रभु जी के गुण गाऊं !!५ !!

शब्दार्थ: -

षट् रस-छ रसो ,

भावार्थ: - छह रसो से मिश्रित भोजन करने से भी हमारी भूख,शांत/तृप्ति नहीं हुई !आत्मा रस/गुणों का आनंद/अनुभव करने से इन्द्रियो और मन की इच्छाओं का दमन हो जाता है!अपनी क्षुधा रोग को सदा के लिए समाप्त करने के लिए मैं देव शास्त्रो गुरु को ध्याता हूँ,विदेह क्षेत्र में विराजमान समस्त २० तीर्थकरों और अनन्तानत सिद्ध प्रभुजी का गुणानुवाद करता हूँ !

ॐ ह्रीं देव शास्त्र गुरुभ्यो!क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेध्य निर्वपामिति स्वाहा !

पञ्च परमेष्ठी और २४ तीर्थंकर को नमस्कार करके देव,शास्त्र,गुरु को क्षुधा रोग के नाश के लिए नैवेद्य अर्पित करता हूँ !

श्री विध्यमान विंशति तीर्थंकरेभ्यो क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेध्य निर्वपामिति स्वाहा !

विदेह क्षेत्र में विराजमान २० श्री तीर्थकरों को क्षुधा रोग के नाश के लिए नैवेद्य अर्पित करता हूँ !

श्री अनंतानंत सिद्ध परमेष्ठीभ्यो क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेध्य निर्वपामिति स्वाहा!

अनंतानंत श्री सिद्ध परमेष्ठियों को क्षुधा रोग के नाश के लिए नैवेद्य अर्पित करता हूँ !

जड़ दीप विनश्वर को अब तक समझा था मैंने उजियारा!
निज-गुण दरशायक ज्ञानदीपसे,मिटा मोह का अंधियारा!
ये दीप समर्पित कर के मैं ,श्री देव शास्त्र गुरु को ध्याऊँ !
विध्यमान श्री बीस तीर्थंकर,सिद्ध प्रभुजी के गुण गाऊं !!६!!

शब्दार्थ:-

जड़-पुद्गल,दीप-दीपक,विनश्वर-नाशवान,उजियारा-प्रकाशमान समझा,निज गुण-आत्मा के अपने गुण, दरशायक-बताया/दिखाया,ज्ञानदीप-ज्ञान रुपी दीपक,मिटा-क्षय,मोह-मोहनीय कर्म,अँधियारा-अन्धकार ,

भावार्थ: -

पूजा अर्थ सहित

आभार -पंडित रत्न लाल जैन बैनाड़ा जी

मैंने अभी तक पुद्गल नश्वर दीपक को प्रकाशित करने वाला समझा था किन्तु अब अपने आत्मा के गुणों को दिखने वाले,ज्ञान रूपी दीपक से अपनी आत्मा के गुण प्रकाशित होने से मोहनीयकर्म रुपी अन्धकार का क्षय हो गया इसलिए मैं दीप समर्पित कर श्री देव शास्त्र गुरु को ध्याता हूँ,विदेहक्षेत्र में विराजमान समस्त २० तीर्थकरों और अनन्तानत सिद्ध प्रभु का गुणानुवाद करता हूँ!

ॐ ह्रीं देव शास्त्र गुरुभ्यो!मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामिति स्वाहा !

पञ्च परमेष्ठी और २४ तीर्थंकर को नमस्कार करके देव शास्त्र गुरु को मोहान्धकार के नाश के लिए दीप अर्पित करता हूँ !

श्री विध्यमान विंशति तीर्थंकरेभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामिति स्वाहा !

विदेह क्षेत्र में विराजमान २० श्री तीर्थकरों को मोहान्धकार के नाश के लिए दीप अर्पित करता हूँ !

श्री अनंतानंत सिद्ध परमेष्ठीभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामिति स्वाहा!

अनंतानंत श्री सिद्ध परमेष्ठियों को मोहान्धकार के नाश के लिए दीप अर्पित करता हूँ !

ये धूप अनल में खेने से, कर्मों को नहीं जलायेगी !
निज में निज की शक्ति ज्वाला ,जो राग द्वेष नशायेगी !!
उस शक्ति दहन प्रगटाने को,श्री देव शास्त्र गुरु को ध्याऊँ !
विध्यमान श्री बीस तीर्थंकर,सिद्ध प्रभु के गुण गाऊं !!७!!

शब्दार्थ: - अनल-अग्नि,निज-आत्मा में,निज-आत्मा रूपी,दहन-अग्नि,नशायेगी-नष्ट होंगे

भावार्थ: - यह धुप अग्नि में खेने से कर्मों को नहीं जलायेगी/नष्ट करेगी,अपनी आत्मा में आत्मा की ध्यान रुपी अग्निकी शक्ति के द्वारा राग द्वेष नष्ट होंगे(जिससे अष्टकर्म नष्ट होंगे)!अपने में उस शक्ति रूपी अग्नि (जिस से मेरे अष्टकर्म नष्ट हो सके) को प्रगट करने के लिए श्री देव शास्त्र गुरु,विध्यमान २० तीर्थंकर और सिद्ध प्रभु का गुणानुवाद,पूजा करता हूँ !

ॐ ह्रीं देव शास्त्र गुरुभ्यो!अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्वपामिति स्वाहा !

पञ्च परमेष्ठी और २४ तीर्थंकर को नमस्कार करके देव शास्त्र गुरु को अष्टकर्मों के दहन के लिए धुप अर्पित करता हूँ !

श्री विध्यमान विंशति तीर्थंकरेभ्यो अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्वपामिति स्वाहा !

विदेहक्षेत्र में विराजमान २० श्री तीर्थकरों को अष्टकर्मों के नाश के लिए धुप अर्पित करता हूँ !

पूजा अर्थ सहित

आभार -पंडित रत्न लाल जैन बैनाड़ा जी

श्री अनंतानंत सिद्ध परमेष्ठीभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामिति स्वाहा!

अनंतानंत श्री सिद्ध परमेष्ठियों को अष्टकर्मों के नाश के लिए धुप अर्पित करता हूँ !

पिस्ता बदाम श्री फल लवंग,चरण तुम ढिंग मैं ले आया !
आतमरस भीने निज गुण फल,मम मन अब उनमे ललचाया !!
अब मोक्ष माह फल पाने को ,श्री देव शास्त्र गुरु को ध्याऊँ !
विध्यमान श्री बीस तीर्थंकर,सिद्ध प्रभु के गुण गाऊं !!८!!

शब्दार्थ: -लवंग-लौंग,श्री फल-नारियल,ढिंग-समीप/पास,आतमरस-आत्मा के रस में,भीने-भीगे,निज-आत्मा के,फल-प्राप्ति के लिए,मम-मेरा,ललचाया-ललायित हो रहा है

भावार्थ: -मै पिश्ता,बदाम,नारियल,लौंग आदि फल आपके चरणों के समीप लाया हूँ !आत्मा के रस में भीगे हुए अपनी आत्मा के गुणों की प्राप्ति के लिये मेरा मन ललायित हो रहा है इसलिए मैं,मोक्ष महाफल की प्राप्ति के लिए श्री देव शास्त्र गुरु,विध्यमान श्री बीस तीर्थंकर प्रभु और अनन्तानत सिद्ध प्रभु का गुणानुवाद कर फल समर्पित कर पूजाता हूँ !

ॐ ह्रीं देव शास्त्र गुरुभ्यो! श्री विध्यमान विंशति तीर्थंकरेभ्यो !श्री अनंतानंत सिद्ध परमेष्ठीभ्यो मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामिति स्वाहा!

पञ्च परमेष्ठी और २४ तीर्थंकर को नमस्कार करके देव शास्त्र गुरु !विदेह क्षेत्र में विराजमान २० श्रीतीर्थकरों! तीर्थकरों !अनंतानंत श्री सिद्ध परमेष्ठियों को मोक्षफल की प्राप्ति के लिए फल समर्पित करता हूँ !

अष्टम वसुधा पाने को,कर में ये आठों द्रव्य लिये !
सहज शुद्ध स्वाभाविकता से,निज में निजगुण प्रकट किये !!
यह अर्घ्य समर्पण करके मैं,श्री देव शास्त्र गुरु को ध्याऊँ !
विध्यमान श्री बीस तीर्थंकर,सिद्ध प्रभु के गुण गाऊं !!९!!

शब्दार्थ: - अष्टम वसुधा-आठवी पृथ्वी ;सिद्ध शिला,कर-हाथ,सहज-स्वभाव से,

अर्थ: -हे भगवान्! मैं सिद्धशिला की प्राप्ति के लिए हाथ में आठों द्रव्य लेकर,स्वाभाविक,शुद्ध स्वभाव की प्राप्ति   अर्थात अपनी आत्मा के स्वाभाविक गुणों(अनंत ज्ञान,दर्शन,सुख,वीर्य आदि) को प्रकट करने के लिए यह अर्घ्य देवशास्त्र गुरु,विदेह क्षेत्र में विराजमान २० श्रीतीर्थकरों!तीर्थकरों !अनंतानंत श्री सिद्ध परमेष्ठियों को   समर्पित कर रहा हूँ !

पूजा अर्थ सहित

आभार -पंडित रत्न लाल जैन बैनाड़ा जी

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरुभ्यो!विध्यमान विंशति तीर्थंकरेभ्यो!अनंतानंत सिद्ध परमेष्ठीभ्यो अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा!

पञ्चपरमेष्ठी और २४ तीर्थंकर को नमस्कार करके देव,शास्त्र,गुरु!विदेह क्षेत्र में विराजमान २० श्रीतीर्थकरों! अनंतानंत श्री सिद्ध परमेष्ठियों को अमूल्य पद की प्राप्ति के लिए अर्घ्य समर्पित करता हूँ !

नोट: -

१: -पांच विदेह क्षेत्र में २० तीर्थांकर; सीमंधर,जुगमंधर,बाहु,सुबाहु,आदि नाम के सदा विराजमान रहते है,इनके मोक्ष प्राप्ति के बाद भी इन्ही नाम से दुसरे आ जाते है इसलिए पूजा में २० विदेह क्षेत्र में विध्यमान तीर्थंकर कहा गया है !

२: -अष्टद्रव्य यदि समय की उपलब्धता हो तो तीनो;देव शास्त्र गुरु,२० तीर्थंकरों और अनन्तान्नत सिद्ध परमेष्ठियों के लिए अलग अलग अर्पित करने चाहिए जैसे सातवे छंद तक किये गए है और यदि कम समय है तब अन्तिप दो छंद की तरह तीनों को एक साथ अर्पित क्र सकते है!विशेष ध्यान रखने योग्य है कि पूजा जितने भी समय करे,शुद्ध उच्चारण करते हुए,पूजा के अर्थों और भाव को समझते हुए पूजन करना चाहिए,तभी पूजन से सातिशय पुण्यबंध हगा,असाता कर्मों का साता में परिणमन होगा और असाता कर्मों का अनुभाग अर्थात फल दान शक्ति कम होगी!

३: -यदि यदा कदा बहुत कम समय उपलब्ध हो तो आप जयमाला छोड़ सकते है,क्योकि इनमे गुणानुवाद ही होता है!किन्तु या क्रिया नित्य प्रक्टिस में नहीं होनी चाहिए !

जय माला

देव शास्त्र गुरु बीस तीर्थंकर,सिद्ध प्रभु भगवान् !
अब वरणूँ जय मालिका ,करूँ स्तवन गुणगान !

अर्थ: - देव शास्त्र गुरु बीस तीर्थंकर और सिद्ध भगवान् की जयमाला का वर्णन करता हूँ ,उनके गुणों का स्तवन और गान करता हूँ !

अरिहंत भगवान् का गुणानुवाद

नसे घातिया कर्म जु अर्हंत देवा, करे सुर असुर नर मुनि नित्य सेवा !
दरश ज्ञान सुख बल अनन्त के स्वामी,छियालीस गुणयुक्त महाईश नामी !!१!!

अर्थ:-

पूजा अर्थ सहित

आभार -पंडित रत्न लाल जैन बैनाड़ा जी

अरिहंत भगवान् का गुणानुवाद

अर्हन्त देव ने चार घातिया कर्मों का नाश कर लिया है,उनकी देवता,असुर,मनुष्य और मुनि रोज सेवा करते है ! वे अनंतदर्शन,अनंतज्ञान,अनंतबल और अनंतसुख के स्वामी है वे छयालीस गुणो सहित जगत में महानप्रभुत्व से प्रसिद्द है!

जिनवाणी का गुणानुवाद

तेरी दिव्य वाणी सदा भव्य मानी,महामोह विध्वंसिनी मोक्ष दानी !
अनेकांतमय द्वादशांगी बखानी,नमो लोक माता श्री जैन वाणी !!२!!

अर्थ: - भगवन आपकी दिव्यवाणी सदा भव्य को मान्य होती है,वह महामोह को नष्ट कर मोक्ष प्रदान करने वाली है!उसमे एकांत से नहीं अनेकांत से वर्णन है अर्थात वस्तु के अनेक धर्मो को बताने वाली है,द्वादशांगी,अर्थात ११ अंग और१४पूर्वरूप है,ऐसी समस्त लोक के जीवों की रक्षा करने वाली जिनवाणी माता को हम नमस्कार करते है

गुरु का गुणानुवाद -

विरागी अचारज उवज्झाया साधू ,दरस ज्ञान भण्डार समता अराधू !
नग्न वेशधारी सु एका विहारी,निजानन्द मंडित मुक्ति पथ प्रचारी!!३!!

शब्दार्थ: -समता-सम्यक चारित्र की,अराधू-अराधना करने वाले,निजानन्द-आत्मानन्द,मंडित-सुशोभित,पथ-मार्ग,प्रचारी-प्रचार करने वाले !

अर्थ: - वैरागी-जिन्हे संसार,शरीर और भोगों से राग नहीं रहा,ऐसे आचार्य,उपाध्याय और साधू परमेष्ठी है,सम्यग्दर्शन और सम्यग्ज्ञान के भण्डार है,सम्यक्चारित्र के आराधक है !दिगंबर मुद्रा के धारक है,अकेले ही विहार करते है,(उन्हें अन्य किसी की आवश्यकता नहीं होती) अकेले ही अपनी आत्मा में रमण करने वाले है,आत्मा के आनंद से सुशोभत है और मोक्ष मार्ग के प्रचारक है; (स्वयं मोक्ष मार्ग पर चलते है और अन्यों को चलने के लिए उपदेश देकर प्रेरित करते है) !

२० तीर्थंकर और सिद्ध भगवन्तो का गुणानुवाद -

विदेह क्षेत्र में तीर्थंकर बीस राजे ,बिहरमान वंदू सभई पाप भाजे !
नमूँ सिद्ध निर्भय निरामय सुधामी,अनाकुल समाधान सहजाभिरामी!!४!!

शब्दार्थ: -बिहरमान-निरंतर बिहार करने वाले,निरामय-निरोगी,अनाकुल -आकुलता रहित,समाधान-अच्छी प्रकार स्थित,सहजाभिरामी-आत्मा में लीन होकर आनंद लेने वाले

पूजा अर्थ सहित

आभार -पंडित रत्न लाल जैन बैनाड़ा जी

अर्थ: -विदेह क्षेत्र में २० तीर्थंकर विराजते है,उनका निरंतर बिहार होता रहता है,उनकी वंदना करता हूँ जिससे समस्त पाप दूर हो जाते है!

मैं निर्भय,निरोगी,अच्छे धाम;मोक्ष में विराजमान,आकुलता से रहित,भली प्रकार स्थित,अपनी आत्मा में लीन सिद्ध भगवान् को भी नमस्कार करता हूँ

देव शास्त्र गुरु बीस तीर्थंकर,सिद्ध हृदय बिच धर ले रे !
पूजन ध्यान गान गुण करके,भव सागर जिय तर ले रे!!५!!

शब्दार्थ: -धर ले -विराजमान कर लो ,

अर्थ: - हे जीव !देव शास्त्र गुरु,बीस तीर्थंकर और सिद्ध भगवान् को अपने हृदय में विराजमान कर इनकी पूजा , ध्यान और गुणानुवाद करके संसार सागर से पार हो जाओ!

ॐ ह्रीं देव शास्त्र गुरुभ्यो! श्री विध्यमान विंशति तीर्थंकरेभ्यो श्री अनंतानंत सिद्ध परमेष्ठीभ्यश्च अनर्घ्यपद प्राप्तये महार्घं निर्वपामिति स्वाहा!

अर्थ: -पञ्च परमेष्ठी और २४ तीर्थंकर को नमस्कार करके देव शास्त्र गुरु !विदेह क्षेत्र में विराजमान २० श्रीतीर्थकरों!अनंतानंत श्री सिद्ध परमेष्ठियों को अमूल्य पद की प्राप्ति के लिए महाअर्घ्य समर्पित करता हूँ

पूजा यहाँ सपूर्ण हो गयी !

तीस चौबीसी और लोक के समस्त चैत्यचैत्यलय की वंदना

भूत भविष्यत वर्तमान की ,तीस चौबीसी मैं ध्याऊँ !

चैत्य चैत्यालय कृत्रिमाकृत्रिम ,तीन लोक के मन लाऊँ !!

शब्दार्थ -भूत भविष्यत वर्तमान की ,तीस चौबीसी मैं ध्याऊँ- १-भूत ,१-भविष्य और १-वर्त्तमान कुल ३,५ भरत ५ ऐरावत (१०) ,कुल ३x १०=३० चौबीसी होती है,उन तीस चौबीसी को मैं ध्याता हूँ ,कृत्रिम-मनुष्य द्वारा निर्मित,अकृत्रिम-स्वयमेव प्राकृतिक बने हुए,चैत्य-प्रतिमा,चैत्यालय-जिन मंदिर

पूजा अर्थ सहित

आभार -पंडित रत्न लाल जैन बैनाड़ा जी

अर्थ-भूत,भविष्य और वर्त्तमान की ५ भरत और ५ ऐरावत क्षेत्र की ३० चौबीसी का मैं ध्यान करता हूँ!

लोक के समस्त कृत्रिम और अकृत्रिम प्रतिमाओं और मंदिरों को अपने मन में धारण करता हूँ

ॐ ह्रीं त्रिकाल सम्बन्धी तीस चौबीसी त्रिलोक सम्बन्धी ७२० तीर्थंकरों ,कृत्रिमाकृत्रिम चैत्यालयेभ्यो अर्घं निर्वपामिति स्वाहा!

पञ्च परमेष्ठी और २४ तीर्थंकर को नमस्कार कर त्रिलोक सम्बन्धी तीस चौबीसी के ७२० तीर्थंकरों,कृत्रिम और अकृत्रिम प्रतिमाओं और मंदिरों को अर्घ्य समर्पित करता हूँ

चैत्य भक्ति आलोचन चाहूँ ,कायोत्सर्ग अघ नाशन हेत !

कृत्रिमाकृत्रिम तीन लोक में,राजत हैं जिनबिम्ब अनेक !!

चतुर निकाय के देव जजें लें,अष्ट द्रव्य निज भक्ति समेत!

निज शक्ति अनुसार जजूँ मैं,कर समाधि पाऊँ शिवखेत !!

शब्दार्थ-अघ-पाप,निकाय-प्रकार,खेत -स्थान

अर्थ -

चैत्य भक्ति हो गयी अब मैं उसकी आलोचना करता हूँ !पाप नाशने के लिए कायोत्सर्ग करता हूँ तीनो लोक में कृत्रिम और अकृत्रिम जिनबिम्ब और चैत्यालय है उनकी पूजा करता हूँ !इनकी पूजा चार प्रकार के देव निरंतर अष्टद्रव्य से भक्तिपूर्वक करते है!मैं भी अपनी शक्ति अनुसार उनकी पूजा करता हूँ जिससे समाधी को प्राप्त कर मोक्ष स्थान को प्राप्त करू !

ॐ ह्रीं कृत्रिमाकृत्रिम चैत्यालय सम्बन्धि जिन बिम्बेभ्योऽर्घं निर्वपामिति स्वाहा!

पञ्च परमेष्ठी और २४ तीर्थंकर को नमस्कार कर कृत्रिम अकृत्रिम मंदिर सम्बन्धी जिनबिम्बों को अर्घ्य अर्पित करता हूँ !

पूर्व मध्य अपराह्न की बेला,पूर्वाचार्यों के अनुसार !

देव वंदना करूँ भाव से सकल कर्म की नाशन हार !!

पंच महा गुरु सुमरन करके, कायोत्सर्ग करूँ सुखकार !

पूजा अर्थ सहित

आभार -पंडित रत्न लाल जैन बैनाड़ा जी

सहज स्वभाव शुद्ध लख अपना जाउँगा अब मैं भव पार!!

भगवान् !मैंने जो पूजा करी है उसमे कोई दोष लगे हो तो वे दोष मिथ्या हो उसके लिए अब कायोत्सर्ग कर रहे है!

शब्दार्थ-पूर्व-प्रात:,मध्य-दोपहर,अपराहन-सायंकाल की,बेला-बेला में,सकल-सम्पूर्ण कायोत्सर्ग-नव बार णमो कार मंत्र पढ़ना

अर्थ -

प्रात:,दोपहर और सायंकाल की बेला में पूर्वाचार्यों के अनुसार सम्पूर्ण कर्मो के नाश के लिए भाव से देववंदना करता हूँ!पांच महा गुरु(पञ्च परमेष्ठी) का स्मरण करके सुख प्रदान करने वाला कायोत्सर्ग -(नव कार मंत्र पढ़ना) करता हूँ जिससे मैं अपने शुद्ध स्वभाव का दर्शन कर संसार से पार हो जाऊँ !

!!पुष्पांजलिं क्षिपेत !!

मैं पुष्प अर्पित करता हूँ

नोट -

१-कायोत्सर्ग करते समय-णमोकार मंत्र पढ़ते समय अपने शरीर से भी निर्ममत्व होकर पञ्चपरमेष्ठियों में ध्यान लगाकर कायोत्सर्ग करते है !इस प्रकार हे नौ बार णमोकार मंत्र (श्वासोच्छवास विधि)से पढ़ना है !

२-पूर्व मध्य और अपराहन बेला का तातपर्य-आचार्यों ने देव दर्शन और पूजा करने का प्रावधान तीन समय, प्रात:, दोपहर और सांयकाल रखा है!जो तीनो समय दर्शन और पूजा करते है उन्हें स्वयं ही स्वर्गों के सुख भोगने के बाद मोक्ष की प्राप्ति होती है !

2. देव-शास्त्र-गुरु पूजा-(आचार्य श्री माघ नंदी जी द्वारा रचित)

अथ देव-शास्त्र-गुरु पूजा

(आचार्य श्री माघ नंदी जी द्वारा रचित)

पंडित ज्ञानत राय जी
सह धर्मी बुजुर्गों,भाइयों बहिनो,बच्चो !
जैजिनेंद्र देवकी!
पञ्च परमेष्ठी की जय !

पूजा अर्थ सहित

आभार -पंडित रत्न लाल जैन बैनाड़ा जी

विश्व धर्म 'शाश्वत जैन धर्म की जय !
संत श्रोमणि विद्यासागर महाराज जय !
षष्टम पट्टाचार्य श्री ज्ञानसागर महाराज जय!

आपके उत्साहपूर्वक दर्शन,अभिषेक,पूजा करने की श्रंखला में मंगलाष्टक,दर्शन ,पूजन ,अभिषेक विधि के पश्चात अभिषेक पाठ (आचर्य माघनन्दि द्वारा विरचित),विनयपाठ,पूजापीठिका,चत्तरिदण्डक,पञ्च कल्याणक अर्घ,पूजा प्रतिज्ञा पाठ,परमऋषि स्वस्तिमंगलपाठ ,देव ,शास्त्र,गुरु की सम्मुचय पूजा के अर्थ एवं भावों सहित प्रस्तुत करने के बाद इसी क्रम में आगे देव ,शास्त्र,गुरु की पूजा (आचर्य माघनन्दी) के अर्थ से आरम्भ करते है !

अडिल्ल छन्द

प्रथम देव अरहंत, सुश्रुत सिद्धांत जू |गुरु निर्ग्रन्थ महन्त, मुकतिपुर पन्थ जू ||

तीन रतन जग मांहि सो ये भवि ध्याइये |तिनकी भक्ति प्रसाद परमपद पाइये ||

दोहा - पूजौं पद अरहंत के, पूजौं गुरुपद सार |

पूजौं देवी सरस्वती, नित प्रति अष्ट प्रकार

शब्दार्थ -

प्रथम देव अरहंत-प्रथम देव अरिहंत भगवान्,सुश्रुत सिद्धांत-जिनवाणी माता,जू |

गुरु-साधू, निर्ग्रन्थ-परिग्रह रहित,महन्त-महान,मुकतिपुर-मोक्ष,पन्थ-मार्ग,जू-इन के आश्रय से ही मिलता है ||

तीन-तीन, रतन-रत्न,जग-संसार, मांहि-में , सो-जो, ये-इन्हे, भवि-भव्य जीव, ध्याइये-ध्याते है |

तिनकी-उनकी, भक्ति-भक्ति के, प्रसाद-प्रसाद से, परमपद -मोक्ष परमपद ,पाइये-पाते है ||

दोहा -

पूजौं-पूजा करता हूँ ,पद-चरणों की,अरहंत के, पूजौं-पूजा करता हूँ गुरुपद-गुरु के चरणों की, सार-जो श्रेष्ठ है

पूजौं- की पूजा करता हूँ देवी-माँ , सरस्वती-जिनवाणी , नित-नित्य , प्रति-प्रति, अष्ट प्रकार-अष्ट द्रव्यों से !

पूजा अर्थ सहित

आभार -पंडित रत्न लाल जैन बैनाड़ा जी

ॐ ह्रीं देव-शास्त्र-गुरु-समूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् (आह्वाननं) |

ॐ ह्रीं देव-शास्त्र-गुरु-समूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः (स्थापनं) |

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् (सन्निधि करणं)|

शब्दार्थ -

ॐ ह्रीं सच्चे देव-शास्त्र-गुरु-समूह -पञ्च परमेष्ठी और २४ तीर्थंकरों को नमस्कार कर!हे सच्चे देव शास्त्र गुरु के समूह यहाँ आइये आइये संवौषट् (आह्वानन)

ॐ ह्रीं देव-शास्त्र-गुरु-समूह!-(हे सच्चे देव,सच्चेशास्त्र,सच्चेगुरु),अत्र-यहाँ,तिष्ठ-विराजमान, तिष्ठ-विराज मान, ठः-होइए ठः-होइए (स्थापनं) |

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुसमूह-(हे सच्चे देव ,सच्चे शास्त्र,सच्चे गुरु) अत्र-यहाँ ,मम-मेरे हृदय में , सन्निहितो-निकट आइये ,विराजिये !, भव भव वषट् (सन्निधि करणं)|

भावार्थ-प्रथम देव अरिहंत भगवान्,जिनवाणी माता(सिद्धांत शास्त्र),और महान निस्पृही(अपरिग्रही) गुरु-साधू,मोक्ष मार्ग (को बताने वाले) है! संसार के भव्य जीव जो इन तीन रत्नों को ध्याते (भक्ति से) है उन्हें इनकी भक्ति के परसाद से परम पद मोक्ष मिलता है!

मैं अष्ट विधि से नित्य अरिहंत भगवन् के चरणों की पूजा करता हूँ,फिर सार भूत गुरुओं के चरणो की पूजा करता हूँ और फिर जिनवाणी माता(सरसवती देवी) की पूजता करता हूँ!

पञ्च परमेष्ठी और २४ तीर्थंकरों को नमस्कार कर!हे सच्चे देव शास्त्र गुरु के समूह यहाँ पास आइये आइये संवौषट् (आह्वाननं)

पंचपरमेष्ठी और २४तीर्थंकरभगवान् को नमस्कार कर! हे सच्चे देव ,सच्चे शास्त्र,सच्चे गुरु)यहाँ विराजिये, विराजिये, ठः-होइए ठः-होइए (स्थापनं) |

पञ्च परमेष्ठी और २४ तीर्थंकर को नमस्कार कर, हे सच्चे देव ,सच्चे शास्त्र,सच्चे गुरु के समूह यहाँ मेरे हृदय में विराजिये !भव भव वषट् (सन्निधि करणं)

नोट - भगवान् वास्तव में हृदय में आते नहीं किन्तु भक्ति वश भक्त पूजा से पूर्व संकल्प करता है कि वे उसके निकट आकर उसके हृदय में विराजमान हो जाए जिससे वह उनकी आनंद पूर्वक पूजा कर सके !

गीता छन्द

पूजा अर्थ सहित

आभार -पंडित रत्न लाल जैन बैनाड़ा जी

सुरपति उरग नरनाथ तिनकर, वन्दनीक सुपद-प्रभा |अति शोभनीक सुवरण उज्ज्वल, देख छवि मोहित सभा ||

वर नीर क्षीर समुद्र घट भरि अग्र तसु बहुविधि नचूं |अरहंत, श्रुत-सिद्धांत, गुरु-निर्ग्रन्थ नित पूजा रचूं ||

दोहा -मलिन वस्तु हर लेत सब, जल स्वभाव मल छीन |

जासों पूजौं परमपद, देव शास्त्र गुरु तीन ||

ॐ ह्रीं देव-शास्त्र-गुरुभ्यः जन्म-जरा-मृत्यु-विनाशाय जलं निर्व0 स्वाहा |1|

शब्दार्थ-

सुरपति-देवताओं के पति उर्ध्व लोक का स्वामी ;इंद्र, उरग नाथ-सर्प;अधो लोक का स्वामी,धरणेन्द्र,नरनाथ-मध्य लोक का स्वामी चक्रवर्ती,तिनकर-उनके द्वारा,वन्दनीक-वंदनीय है,सुपद-सुन्दर चरणों की,प्रभा-कांति

अति-अत्यंत,शोभनीक-शोभनीय,सुवरण-अच्छे वरण वाली,उज्ज्वल-साफ़ है,देख छवि-छवि को देखक , मोहित सभा-सारी सभा मोहित हो रही है !

वर-मै,नीर-जल को,क्षीरसमुद्र-क्षीर समुद्र के,घट भरि-घड़े में भरकर,अग्र-आगे,तसु-आपके,बहुविधि-अनेक प्रकार से,नचूं-नृत्य करता हूँ |

अरहंत-अरिहंत भगवान् की,, श्रुत-सिद्धांत-जिनवाणी की,गुरु-निर्ग्रन्थ-निस्पृही गुरु की,नित-नित्य,पूजा -पूजा रचूं-करता हूँ !

दोहा -मलिन-मलीनता को,वस्तु-वस्तु की, हर लेत-हर लेता है,सब-समस्त,जल-जल,स्वभाव-स्वभाव से,मल-मल को,छीन-दूर कर देता है ! |

जासों -उनकी, पूजौं -पूजा कर,परमपद-श्रेष्ठ चरणों , देव, शास्त्र,गुरु तीन

ॐ-पञ्च परमेष्ठी , ह्रीं-२४ तीर्थंकरों को नमस्कार करके, , देव-शास्त्र-गुरुभ्यः-सच्चे देव शास्त्र गुरु के, जन्म-जरा-मृत्यु-विनाशाय-विनाश करने वाला,जलं-जल,निर्व0-अर्पित,स्वाहा-करता हूँ

भावार्थ-हे भगवान्!इंद्र धरणेन्द्र और चक्रवर्ती आपके चरणों में मस्तक झुकाकर नमस्कार करते है इसलिए आपके चरण निर्मल सुवरण के समान शोभायमान प्रतीत होते है ,इनकी छवि/काँती देखकर समवशरण की सभाए मोहित हो जाती है !क्षीर सागर के पवित्र जल का कलश भरकर आपके समक्ष नृत्य कर जल अर्पित करते है !मैं इस प्रकार अरिहंत भगवान्,जिनवाणी और निर्ग्रन्थ गुरुओं की नित्य पूजा करता हूँ !

पूजा अर्थ सहित

आभार -पंडित रत्न लाल जैन बैनाड़ा जी

जल का स्वभाव सभी मलीन पदार्थों के मल को नष्ट करने का है इसलिए मैं अपनी आत्मा से जनम,जरा और मृत्यु रुपी मल का नाश करने के लिए तीनों देव,शास्त्र,गुरु के श्रेष्ठ पदों की पूजा,जल अर्पित करके करता हूँ!

पञ्च परमेष्ठी और २४ तीर्थंकरों को नमस्कार करके जन्म जरा मृत्यु के विनाश के लिए सच्चे देव शास्त्र गुरु को जल अर्पित करता हूँ !

जे त्रिजग उदर मंझार प्राणी तपत अति दुद्धर खरे |तिन अहित-हरन सुवचन जिनके, परम शीतलता भरे

तसु भ्रमर-लोभित घ्राण पावन सरस चंदन घिसि सचूं अरहंत, श्रुत-सिद्धान्त, गुरु-निर्ग्रन्थ नित पूजा रचूं ||

दोहा - चंदन शीतलता करे, तपत वस्तु परवीन |

जासों पूजौं परमपद, देव शास्त्र गुरु तीन ||

ॐ ह्रीं देवशास्त्र गुरुभ्यः संसार-ताप-विनाशनाय चंदनं निर्व0 स्वाहा |2|

शब्दार्थ-

जे त्रिजग-तीनों लोको में ,उदर-ह्रदय के,मंझार-के मध्य में,प्राणी -जीव,तपत-तपन से, अति-अत्यंत, दुद्धर - दुखी हो,खरे-रहे है |

तिन उनके, अहित-हरन-अहित को दूर करने वाले, सुवचन-अच्छे वचन , जिनके-जिनके,, परम-अत्यंत , शीतलता-शीतलता , भरे -पूर्ण है ||

तसु-जिनके ऊपर,भ्रमर-भवरे,लोभित-गूँज रहे है, घ्राण-नाक को,पावन-पवित्र करने वाले,सरस-रसीले,चंदन - चन्दन को,घिसि-घिस कर,सचूं- पूजा करता हूँ |

अरहंत-अरिहंत भगवान्, श्रुत-सिद्धान्त-जिनवाणी ,गुरु-निर्ग्रन्थ-गुरु कि,नित पूजा रचूं-नित्य पूजा करता हु

दोहा - चंदन -चन्दन ,शीतलता-शीतलता प्रदान , करे-करने में, तपत -तप्ती हुई वस्तु, परवीन- |प्रवीण है

जासों-उससे , पूजौं-पूजा , परमपद-परम पद , देव शास्त्र गुरु तीन ||

ॐ ह्रीं देवशास्त्र गुरुभ्यः संसार-ताप-विनाशनाय चंदनं निर्व0 स्वाहा

पञ्च परमेष्ठी और २४ तीर्थंकरों को नमस्कार करके मैं सच्चे देव,शास्त्र और गुरु को अपने संसार के ताप के विनाश के लिए चंदन अर्पित करता हूँ

पूजा अर्थ सहित

आभार -पंडित रत्न लाल जैन बैनाड़ा जी

भावार्थ- हे भगवान्!तीनो लोक के प्राणी दुखों के ताप से अत्यंत दुखी है ,आपके प्रवचन इन दुखी प्राणियों के दुखो का हर कर शीतलता/शांति प्रदान करते है! इसलिए अत्यंत सुगन्धित चन्दन को घिस कर लाया हूँ ,जिस की पवित्र सुगंध सूंघ कर भवरे लोभित हो रहे है! उस चंदन से अरिहंत भगवान्, जिनवाणी और गुरु की, नित्य पूजा करता हूँ !

चन्दन तप्ती हुई वस्तु को शीतलता प्रदान करने में सामर्थ्यवान है

इसलिए तीनो श्रेष्ठ पदों देव,शास्त्र और गुरु की चन्दन से पूजा करता हूँ !

पञ्चपरमेष्ठी और २४ तीर्थंकरों को नमस्कार करके मैं सच्चे देव,सच्चे शास्त्र और सच्चे गुरु के लिए, अपने संसार के दुखों के विनाश करन के लिए चंदन अर्पित करता हूँ !

नोट -जब जल/चन्दन अर्पित करे तब कलश को उठाकर क्रमश तीन और एक धारा प्रवाहित करे !

यह भवसमुद्र अपार तारण के निमित्त सुविधि ठई |अति दृढ़ परमपावन जथारथ भक्ति वर नौका सही ||

उज्ज्वल अखंडित शालि तंदुल पुंज धरि त्रय गुण जचूं |अरहंत, श्रुत-सिद्धान्त, गुरु-निर्ग्रन्थ नित पूजा रचूं ||

दोहा - तंदुल शालि सुगंध अति, परम अखंडित बीन |

जासों पूजौं परमपद, देव शास्त्र गुरु तीन ||

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्व0 स्वाहा |3|

शब्दार्थ -

यह भवसमुद्र अपार- यह भव समुद्र अपार है, तारण-पार करने के लिए, के निमित्त सुविधि=अच्छी विधि , ठई-है |

अति दृढ़-अत्यंत मजबूत, परमपावन-परम पवित्र ,जथारथ-वास्तविक, भक्ति-भक्ति रुपी, वर-श्रेष्ठ, नौका - नौका ,सही ||

उज्ज्वल-स्वच्छ चमकते हुए, अखंडित-,खंडित, शालि-शाली धान के, तंदुल-चावलों के, पुंज-पुंज, धरि-धर क्र त्रय-तीनों -सम्यग्दर्शन,सम्यग्ज्ञान ,सम्यचारित्र ,गुण-गुणों , जचूं-याचना करता हूँ |

अरहंत, श्रुत-सिद्धान्त, गुरु-निर्ग्रन्थ नित पूजा रचूं- अरिहंत भगवान् ,जिन वाणी और गुरु की नित्य पूजा करता हूँ ||

दोहा - तंदुल शालि -चावल शाली वन के, सुगंध-सुगन्धित, अति-अत्यंत, परम अखंडित बीन-सबूत चावलो को बीनकर |

पूजा अर्थ सहित

आभार -पंडित रत्न लाल जैन बैनाड़ा जी

जासों पूजौं परमपद, देव शास्त्र गुरु तीन-उनसे देव शास्त्र गुरु तीन परम पदों की पूजा करता हूँ! ||

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्व0 स्वाहा

पञ्च परमेष्ठी और २४ तीर्थंकरों को नमस्कार करके अक्षय पद की प्राप्ति के लिए सच्चे देव,सच्चे शास्त्र और सच्चे गुरु को अक्षत अर्पित करता हूँ !

भावार्थ-हे भगवान् !यह संसार रुपी समुद्र अपार है इसको पार करने के लिए आपकी अत्यंत दृढ़ , परम पवित्र और सच्ची भक्ति रुपी नाव ही सामर्थ्यवान है!इसलिए मैं ताज़े और स्वच्छ चमकते हुए अखंडित शाली वन के चावलों के पुंजो को अर्पित कर सम्यग्दर्शन,सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र तीनों गुणो की याचना करता हूँ !इस प्रकार अरिहंत भगवान् ,जिनवाणी और गुरु की की नित्य पूजा करता हूँ!

मैं शालीधान के अत्यंत सुगन्धित,अखण्डित, श्रेष्ठ चावलों को एक एक बीन कर, देव शास्त्र गुरु तीन परम पदों की पूजा करता हूँ!

पञ्च परमेष्ठी और २४ तीर्थंकरों को नमस्कार करके अक्षय पद की प्राप्ति के लिए सच्चे देव,सच्चे शास्त्र और सच्चे गुरु को अक्षत अर्पित करता हूँ !

नोट - हाथ में लेकर घड़ी की सुई की दिशा में घूमा कर ,अक्षत मुट्ठी में पुंज बनाकर अर्पित करे!

जे विनयवंत सुभव्य-उर-अंबुज प्रकाशन भान हैं |जे एक मुख चारित्र भाषत त्रिजगमाहिं प्रधान हैं ||

लहि कुंद कमलादिक पुहुप, भव भव कुवेदनसों बचूं |अरहंत, श्रुत-सिद्धान्त, गुरु-निर्ग्रन्थ नित पूजा रचूं ||

दोहा -

विविध भांति परिमल सुमन, भ्रमर जास आधीन |जासों पूजौं परमपद देव शास्त्र गुरु तीन ||

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यः कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पं निर्व0 स्वाहा |4|

शब्दार्थ -

जे-जो,विनयवंत-भक्ति कर रहे,सुभव्य-भव्य जीवों के,उर-हृदय रुपी,अंबुज-कमलों को,प्रकाशन-प्रकाशित करने के लिय, भान-सूर्य के सामान हैं |

जे-जो, एक मुख-प्राधानता से,चारित्र-चारित्र का, भाषत-वर्णन करते है,त्रिजगमाहिं-तीनो लोकों में वे ,प्रधान हैं -सर्वश्रेष्ठ है ||

पूजा अर्थ सहित

आभार -पंडित रत्न लाल जैन बैनाड़ा जी

लहि-प्राप्त करके, कुंद- कमलादिक-कमल आदि, पुहुप-पुष्प को,भव भव- जन्म जन्म के, कुवेदन-खोटे वासना तीनों वेद खोते होते है ,सों बचूं-से बचने के लिए ।

अरहंत-अरिहंत भगवान् ,, श्रुत-सिद्धान्त-जिनवाणी,, गुरु-निर्ग्रन्थ-निर्ग्रन्थ गुरु की , नित पूजा रचूं-नित्य पूजा करता हूँ ! ||

दोहा-विविध-भिन्न भिन्न,भांति-प्रकार,परिमल-सुगन्धित,सुमन-पुष्प,भ्रमर-भवरे,जास-जिनके,आधीन-आधीन ।

जासों-उनसे,पूजौं -पूजा ,परमपद-परम,पदों-पदों ,देव,शास्त्र, गुरु ,तीन ||

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यः कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पं निर्व0 स्वाहा

पञ्च परमेष्ठी और २४ तीर्थंकरों को नमस्कार कर काम वासना को नष्ट करने के लिए देव शास्त्र और गुरु को पुष्प अर्पित करता हूँ !

भावार्थ -हे जिनेन्द्र देव !आप भक्ति कर रहे भव्य जीवों के ह्रदय रूपी कमलों को प्रकाशित करने के लिए सूर्य के सामान है, जैसे सूर्य के उदय होते ही कमल खिलते है,वैसे ही आप भव्यों का अज्ञान रूपी अन्धकार दूर करने वाले है ! जो प्रधानता से चारित्र का उपदेश देते है,वे तीनो लोको में सर्व श्रेष्ठ है! इसलिए मैं कुंद,कमल आदि पुष्पों को लेकर अनेक जन्मों के ;खोटे वेदों (तीनों वेद पुरुष,स्त्री और नपुंसक)काम विकार के कष्टों से बचने के लिए मैं अरिहंत भगवान् ,जिनवाणी और निर्ग्रथ गुरु की नित्य पूजा करता हूँ !

मेरे पास भिन्न भिन्न प्रकार के सुगन्धित पुष्प से जिनकी सुगंध वश भवरे हो जाते है, मैं तीनो परम पदों; देव, शास्त्र और गुरु की पूजा करता हूँ !

पञ्च परमेष्ठी और २४ तीर्थंकरों को नमस्कार कर काम विकारों को नष्ट करने के लिए देव शास्त्र और गुरु को पुष्प अर्पित करता हूँ !

जब पुष्प अर्पित करे तब घड़ी की दिशा में हाथ में लेकर घूमकर हाथ के अगर भाग से अर्पित करे !अति सबल मद-कंदर्प जाको क्षुधा-उरग अमान है |

अति सबल मद-कंदर्प जाको,क्षुधा -उरग अमान है ! दुस्सह भयानक तासु नाशन को सु गरुड़ समान है ||

उत्तम छहों रसयुक्त नित, नैवेद्य करि घृत में पचूं |अरहंत, श्रुत-सिद्धान्त, गुरु-निर्ग्रन्थ नित पूजा रचूं ||

दोहा -नानाविधि संयुक्तरस, व्यंजन सरस नवीन |

जासों पूजौं परमपद देव शास्त्र गुरु तीन ||

पूजा अर्थ सहित

आभार -पंडित रत्न लाल जैन बैनाड़ा जी

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यः क्षुधा-रोग-विनाशनाय नैवेद्यं निर्व0 स्वाहा |5|

शब्दार्थ-

अति-अत्यंत, सबल-बलवान , मद-घमंड वाला,कंदर्प-अत्यंत , जाको क्षुधा-उरग- क्षुधा रुपी सर्प, अमान -मन गया है |

दुस्सह-उसे सहना कठिन है, भयानक-बड़ा भयानक है, तासु-उसको, नाशन-नाश करना , को सु गरुड़ समान है -गरूड़ के सामान है,सर्प को गरूड़ नाश करता है ||

उत्तम छहों रसयुक्त नित, नैवेद्य करि घृत में पचूं |

अरहंत, श्रुत-सिद्धान्त, गुरु-निर्ग्रन्थ नित पूजा रचूं ||

दोहा -नानाविधि-अनेक प्रकार के, संयुक्तरस-जिनमे विभिन्न रस मिले हुए है,व्यंजन-व्यंजनों , सरस-रसीले, नवीन-ताज़े, |

जासों पूजौं परमपद देव शास्त्र गुरु तीन ||

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यः क्षुधा-रोग-विनाशनाय नैवेद्यं निर्व0 स्वाहा

पञ्च परमेष्ठी और २४ तीर्थंकरों को नमस्कार करके देव शास्त्र गुरु को क्षुधा रोग के विनाश के लिए नैवैद्य अर्पित करता हूँ!

भावार्थ-अत्यंत बलवान मद के वेग को धारण करने वाला महान क्षुधारूपी सर्प का विष असहनीय और भयंकर है !उस का नाश करने के लिए आप गरूड़ के सामान है, जैसे सर्प को गरुड़ नष्ट करता है वैसे ही आपने क्षुधा को जीत लिया है इसलिए मैं उत्तम छः रसों युक्त,घी में पकाये नैवद्य से अरिहंत भगवान्,जिनवाणी,और निर्ग्रन्थ गुरु तीनो की नित्य पूजा करता हूँ !(जिससे मेरा क्षुधा रोग नष्ट हो जाये)

मैं नाना प्रकार के विभिन्न रसो से युक्त, ताज़े नैवैद्य(पकवान) से तीनों देव शास्त्र और गुरु, परम पदों की पूजा करता हूँ जिससे मेरा क्षुधा रोग को नष्ट हो जाए !

पञ्च परमेष्ठी और २४ तीर्थंकरों को नमस्कार करके देव शास्त्र गुरु को क्षुधा रोग के विनाश के लिए नैवैद्य अर्पित करता हूँ!

नोट- हाथ में नैवद्य लेकर घड़ी की दिशा में घूंमा कर ,हथेली के अगर भाग से नैवैद्य अर्पित करे !

पूजा अर्थ सहित

आभार -पंडित रत्न लाल जैन बैनाड़ा जी

जे त्रिजगउद्‌यम नाश कीने, मोहतिमिर महाबली |तिंहि कर्मघाती ज्ञानदीप प्रकाश ज्योति प्रभावली ||

इह भांति दीप प्रजाल कंचन के सुभाजन में खचूं |अरहंत, श्रुत-सिद्धान्त, गुरु-निर्ग्रन्थ नित पूजा रचूं ||

दोहा - स्वपरप्रकाशक ज्योति अति, दीपक तमकरि हीन |

जासों पूजौं परमपद देव शास्त्र गुरु तीन ||

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यः मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्व0 स्वाहा |6|

शब्दार्थ-

जे त्रिजग-तीनों लोक के जीवों के ,उद्‌यम-पुरुषार्थ को, नाश कीने-नष्ट करने वाला , मोहतिमिर-मोह रुपी अन्धकार, महाबली -आहा बलवान है |

तिंहि -उस ,कर्मघाती-कर्म के घात करने के लिए, ज्ञानदीप-ज्ञान रुपी दीपक की , प्रकाश ज्योति-प्रकाश की ज्योति , प्रभावली-काँति वाली ली है ||

इह-इस, भांति-प्रकार, दीप-दीप, प्रजाल-प्रज्जवलित कर , कंचन-स्वर्ण के ,सुभाजन-बरतन में, खचूं-रख |

अरहंत, श्रुत-सिद्धान्त, गुरु-निर्ग्रन्थ नित पूजा रचूं ||

दोहा - स्वपरप्रकाशक-स्व और पर को प्रकाशित करने वाली , ज्योति -ज्योति, अति, दीपक तमकरि - अन्धकार से हीन-रहित है |जासों पूजौं परमपद देव शास्त्र गुरु तीन-उस दीपक से मैं तीनो परम पदों देव शास्त्र और गुरु की पूजा करता हूँ ! ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यः मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्व0 स्वाहा

मैं पञ्च परमेष्ठी और २४ तीर्थंकरों को नमस्कार करके मोह रुपी अंधकार को नष्ट करने के लिए देव शास्त्र और गुरु को दीपक अर्पित करता हूँ !

भावार्थ- हे भगवान्!तीनो लोक के जीवों के पुरुषार्थ को नष्ट करने वाला मोह रूपी अन्धकार अत्यंत बलवान है! उस मोहनीय कर्म को नाश करने के लिए आपके ज्ञान रुपी दीपक की ज्योति/प्रकाश सामर्थ्यवान है!इस प्रकार में दीपक को प्रज्जवलित कर सोने के पात्र में सजाकर ,अरिहंत भगवान्,जिनवाणी और निर्ग्रन्थ गुरु की नित्य पूजा करता हूँ!(जिससे मेरे मोहनीय कर्म का क्षय हो सके!)

इस(केवल)ज्ञान रुपी दीपक से मैं देव शास्त्र और गुरु तीनो परम पदों की पूजा करता हूँ,जिस की ज्योति अन्धकार रहित,स्व और पर पदार्थों की प्रकाशक है!

मैं पञ्च परमेष्ठी और २४ तीर्थंकरों को नमस्कार करके मोह रुपी अंधकार को नष्ट करने के लिए देव शास्त्र और गुरु को दीपक अर्पित करता हूँ !

पूजा अर्थ सहित

आभार -पंडित रत्न लाल जैन बैनाड़ा जी

जे कर्म-ईंधन दहन अग्निसमूह सम उद्धत लसै |वर धूप तासु सुगन्धता करि,सकल परिमलता हंसै ||

इह भांति धूप चढ़ाय नित भव ज्वलनमाहिं नहीं पचूं |अरहंत, श्रुत-सिद्धान्त, गुरु-निर्ग्रन्थ नित पूजा रचूं ||

दोहा - अग्निमांहि परिमल दहन, चंदनादि गुणलीन |

जासों पूजौं परमपद देव शास्त्र गुरु तीन ||

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यः अष्ट कर्मविध्वंसनाय धूपं निर्व0 स्वाहा |7|

शब्दार्थ-

जे-जो,कर्म-कर्म रुपी,ईंधन-ईंधन को,दहन-जलने के लिए,अग्निसमूह-प्रचंड अग्नि के समूह के,सम-सामान , उद्धत-सुशोभित,लसै-है |

वर -श्रेष्ठ ,धूप-धुप तासु-ऐसी,सुगन्धता-उसकी सुगंध से, करि, सकल-समस्त,परिमलता-सुगन्धित,हंसै-फ़ैल

इह-इस,भांति-प्रकारकी,धूप-धुप,चढ़ाय-चढ़ाकर,नित-नित्य,भव-संसार,ज्वलनमाहिं-अग्नि में जलने से, नहीं पचूं-नष्ट हूँ |

अरहंत, श्रुत-सद्धान्त, गुरु-निर्ग्रन्थ नित पूजा रचूं ||

दोहा- अग्निमांहि-अग्नि में, परिमल-सुगन्धित,दहन-, चंदनादि-चन्दनादि , गुणलीन-गुणों सहित |

जासों पूजौं परमपद देव शास्त्र गुरु तीन -इससे तीनो परम पदों,देव शास्त्र और गुरु की पूजा करता हूँ

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यः अष्ट कर्मविध्वंसनाय धूपं निर्व0 स्वाहा

मैं पञ्च परमेष्ठी और २४ तीर्थंकरों को नमस्कार कर अष्टकर्मों के नाश के लिए सच्चे देव शास्त्र गुरु को धुप अर्पित करता हूँ

भावार्थ-हे भगवान् !कर्मरुपी ईंधन को जलाने के लिए आप अग्नि के सामान प्रकाशित है!अच्छी धुप की सुगंध से सभी सुगंधिया मंद हो जाती है!इसी तरह देव !प्रति दिन धुप अर्पित करता हूँ जिससे मै संसार रुपी अग्नि से दूर रह सकू अर्थात मुक्त हो सकू!इस प्रकार नित्य तीनो,देव, जिनवाणी और अपरिग्रही गुरु की पूजा करता हूँ

चन्दन आदि सुगन्धित द्रव्यों सहित धुप को अग्नि में जला कर देव, शास्त्र और गुरु ,तीनों परम पदों की पूजा करता हूँ !

पूजा अर्थ सहित

आभार -पंडित रत्न लाल जैन बैनाड़ा जी

मैं पञ्च परमेष्ठी और २४ तीर्थंकरों को नमस्कार कर अष्टकर्मों के नाश के लिए सच्चे देव शास्त्र गुरु को धुप से अर्पित करता हूँ !

लोचन सुरसना घ्राण उर,उत्साह के करतार हैं |मोपै न उपमा जाय वरणी, सकल फल गुणसार हैं ||

सो फल चढ़ावत अर्थ पूरन, परम अमृतरस सचूं |अरहंत, श्रुत-सिद्धान्त, गुरु-निर्ग्रन्थ नित पूजा रचूं ||

दोहा -जे प्रधान फल फलविषैं, पंच करण -रस लीन !

जासों पूजौं परमपद देव शास्त्र गुरु तीन ||

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्व0 स्वाहा |8|

शब्दार्थ-

लोचन-आंखो,सुरसना-जीव्हा ,घ्राण-नासिक ,उर-मन, उत्साह -उत्साह के करतार हैं-करने वाले है |

मोपै न -मेरे से नहीं , उपमा-उपमा का , जाय-जा सकता, वरणी,-वर्णन , सकल-सम्पूर्ण , फल-फल, गुणसार -श्रेष्ठ गुणों वाले हैं ||

सो फल चढ़ावत -अर्पित कर,अर्थपूरन-हर्षित होता हुआ,परम -श्रेष्ठ ,अमृतरस-अमृतरस (मोक्ष),सचूं-प्राप्त करूं |

अरहंत, श्रुत-सिद्धान्त-जिनवाणी,, गुरु-निर्ग्रन्थ नित पूजा रचूं ||

दोहा -जे प्रधान फल फलविषैं, पंचकरण -पाँचों इन्द्रियां ,रस लीन -जिनके रस में लीन हो रही है !

जासों -ऐसे,पूजौं-पूजा करता हूँ ,परमपद ,देव शास्त्र गुरु तीन ||

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्व0 स्वाहा पञ्च परमेष्ठी और २४ तीर्थंकरों को नमस्कार कर मोक्ष प्राप्ति के लिए देव शास्त्र उर उरु को फल अर्पित करता हूँ

भावार्थ:- भगवन मै,नेत्रों,जीव्हा,नासिका,और मन को उत्साहित करने वाले अनुपम और समस्त श्रेष्ठ गुणों वाले फलो को अर्पित कर हर्षित होता हुआ श्रेष्ठ मोक्ष रस को प्राप्त करने की भावना से नित्य अरिहंत भगवान् जिनवाणी और निर्ग्रन्थ गुरु की पूजा करता हूँ !

जो फलों में प्रधान है,जिन के रस में पाँचों इन्द्रिय लीन हो रही है,ऐसों फलों से तीनों परम पद, देव शास्त्र और गुरु की पूजा करता हूँ !

पूजा अर्थ सहित

आभार -पंडित रत्न लाल जैन बैनाड़ा जी

पञ्च परमेष्ठी और २४ तीर्थंकरों को नमस्कार कर मोक्ष प्राप्ति के लिए देव शास्त्र और गुरु को फल अर्पित करता हूँ!

जल परम उज्ज्वल गंध अक्षत, पुष्प चरु दीपक धरुं |वर धूप निरमल फल विविध, बहु जनम के पातक हरुं ||

इहि भांति अर्घ चढ़ाय नित भवि करत शिवपंकति मचूं |अरहंत, श्रुत-सिद्धान्त, गुरु-निर्ग्रन्थ नित पूजा रचूं ||

दोहा - वसुविधि अर्घ संजोय के, अति उछाह मन कीन |

जासों पूजौं परमपद देव शास्त्र गुरु तीन ||

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व0 स्वाहा |9|

शब्दार्थ-

जल परम-श्रेष्ठ, उज्ज्वल-साफ़/स्वच्छ , गंध-चंदन,अक्षत,पुष्प चरु नैवेद्य दीपक धरुं |

वर-श्रेष्ठ , धूप निरमल-निर्मल, फल विविध-नहींन प्रकार के फलों , बहु-अनेक, जनम-जन्मों के पातक-पापों, हरुं -नष्ट ||

इहि-इस , भांति -प्रकार,अर्घ-अर्घ, चढ़ाय-अर्पित, नित-नित्य, भवि-हूँ, करत-करके, शिवपंकति-मोक्ष की पंक्ति में , मचूं-लगता हूँ |

अरहंत, श्रुत-सिद्धान्त, गुरु--,निर्ग्रन्थ नित पूजा रचूं ||

दोहा - वसुविधि-आठ प्रकार के, अर्घ संजोय-बनाकर के, अति उछाह-उत्साहपूर्वक मन-मन से, कीन |

जासों -पूजौं परमपद देव शास्त्र गुरु तीन ||

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व0 स्वाहा

मै पञ्च परमेष्टि और २४ तीर्थंकरों को नमस्कार कर के अमूल्य पद की प्राप्ति के लिए देव शास्त्र और गुरु को अर्घ्य अर्पित करता हूँ !

भावार्थ -भगवन मैंने श्रेष्ठ उज्जवल जल,चन्दन से सुगन्धित जल,अक्षत,पुष्प,नैवद्य,दीपक,श्रेष्ट धुप और विविध प्रकार के निर्मल फलों को मिलाकर,अनेक जन्मों के पापों को नष्ट करने के लिए,अर्घ बना कर लाया हूँ!इस प्रकार अर्घ्य अर्पित कर मैं नित्य हूँ ,मोक्ष की पंक्ति में लगता हूँ!मै तीनों अरिहंत भगवान्,जिनवाणी और अपरिग्रही गुरु की नित्य पूजा करता हूँ !

पूजा अर्थ सहित

आभार -पंडित रत्न लाल जैन बैनाड़ा जी

आठ प्रकार के अर्घ्य से,मन से अत्यंत उत्साहपूर्वक तीनो परम पद देव शास्त्र और गुरु कि पूजा करता हूँ !

मै पञ्च परमेष्टि और २४ तीर्थंकरों को नमस्कार कर के अमूल्य पद की प्राप्ति के लिए देव शास्त्र और गुरु को अर्घ्य अर्पित करता हूँ !

जयमाला

जयमाला-पूजित के गुणों का गान करना!हमने सच्चे देव शास्त्र और गुरु कि पूजा करी,यहाँ उनके गुणानुवाद   किया जाएगा !

देव शास्त्र गुरु रतन शुभ, तीन रतन करतार |भिन्न भिन्न कहुं आरती, अल्प सुगुण विस्तार |1|

अर्थ-

(देव शास्त्र गुरु रतन शुभ, तीन रतन करतार)- सच्चे देव,सच्चे शास्त्र और सच्चे गुरु,तीन शुभ रत्न है और तीन रत्नों को (करतार) प्रदान करने वाले है-

(सच्चे देव से सम्यक्त्व की,सच्चे शास्त्र से सम्यग्ज्ञान की,और सच्चे निर्ग्रन्थ गुरु से सम्यक चारित्र की प्राप्ति होती है)

भिन्न भिन्न कहुं आरती, अल्प सुगुण विस्तार

मैं अल्प बुद्धि वाला हूँ किन्तु गुण(विस्तार)बहुत है ,संक्षेप में विभिन्न (आरती) गुण कहता हूँ !

पद्धरि छन्द

अरिहंत भगवान/सच्चेदेव का गुणानुवाद-

कर्मन की त्रेसठ प्रकृति नाशि, जीते अष्टादश दोषराशि |

जे परम सुगुण हैं अनंत धीर, कहवत के छयालिस गुणगंभीर |2|

अर्थ-

पूजा अर्थ सहित

आभार -पंडित रत्न लाल जैन बैनाड़ा जी

(कर्मन की त्रेसठ प्रकृति नाशि)-जिन्होंने कर्मों की ६३ प्रकृतियों(चार घातिया कर्मों की ४७ और आयुकर्म-३, नामकर्म की-१३) का क्षय कर लिया है,(जीते अष्टादश अट्ठारह, दोषराशि) और अठारह दोषों के समूह को जीत लिया है!

(जे परम सुगुण हैं अनंत धीर) जो अनंत श्रेष्ठ गुणों को धारण करते है!(कहवत के छयालिस गुणगंभीर)यद्यपि कहने में छयालीस (जन्म-१०,केवलज्ञान-१०,देवकृत-१४,अनंत चतुष्टाय-४ और प्रतिहार्य-८) गुण आते है !

शुभ समवशरण शोभा अपार, शत इंद्र नमत कर सीस धार |

देवाधिदेव अरहंत देव, वंदौं मन-वच-तन करि सुसेव |3|

अर्थ-

(शुभ समवशरण शोभा अपार) आपके शुभ समवशरण की शोभा अपरम्पार है!(शत इंद्र नमत कर सीस धार)

सौ इंद्र (भवनवासी-४०,व्यंतर देव-३२,वैमानिक देव-२४ ,ज्योतिष्क-२;चन्द्र और सूर्य,तिर्यंच-१सिं ,मनुष्य-१ चक्रवर्ती)अपने मस्तक पर हाथ रख कर आपको नमस्कार करते है!

(देवाधिदेव अरहंत देव)ऐसे देवो के अधिपति -इंद् द्वारा पूजित अरिहंत भगवान् की मैं (वंदौं मन-वच-तन करि सुसेव) बड़े भक्ति भाव से मन वचन काय से वंदना करता हूँ

सच्चे शास्त्रों का गुणानु वाद-

जिन की ध्वनि ह्वै ओंकाररुप,निर-अक्षर मय महिमा अनूप |

दश अष्ट महाभाषा समेत, लघुभाषा सात शतक सुचेत |4|

अर्थ

(जिनकी ध्वनि ह्वै ओंकाररुप, निर-अक्षर मय महिमा अनूप) -सच्चे शास्त्र ; जिनेन्द्र भगवान् की ओंकार रूप, अक्षर रहित{यदयपि अक्षर वाली होती है किन्तु निरकक्षर लगती है,यदि अक्षर वाली नहीं होगी तो विषय का प्रतिपादन कैसे होगा),अनुपम महिमा वाली दिव्यध्वनि द्वारा कहे गए है जिसमे (दश अष्ट महाभाषा समेत लघुभाषा सात शतक सुचेत) १८ महा भाषा और ७०० लघु (स्थानिय)भाषा भली प्रकार से गर्भित है !

सो स्याद्वादमय सप्तभंग,गणधर गूंथे बारह सुअंग |

रवि शशि न हरें सो तम हराय,सो शास्त्र नमौं बहु प्रीति ल्याय |5|

पूजा अर्थ सहित

आभार -पंडित रत्न लाल जैन बैनाड़ा जी

अर्थ-

(सो स्याद्वादमय सप्तभंग, गणधर गूंथे बारह सुअंग)- जिनवाणी स्याद्वादमयी है ;अपेक्षा से वर्णन करने वाली है,सप्त भंग;अस्ति ,नास्ति,अव्यक्तव्य आदि सात भांगों के द्वारा इसमें वर्णन है!इसको गणधर देवों ने १२ अंगों में गुथा है !

(रवि शशि न हरें सो तम हराय, सो शास्त्र नमौं बहु प्रीति ल्याय)-सूर्य और चन्द्र भी जिस अन्धकार को नहीं हर सकते किन्तु ये सच्चे शास्त्र हर लेते है ,इसीलिए मै उन सच्चे शास्त्रों को बड़ी प्रीती /भक्ति भाव से नमस्कार करता हूँ

सच्चे गुरु का गुणानुवाद

गुरु आचारज उवझाय साधु, तन नगन रतनत्रय-निधि अगाध |

संसारदेह वैराग्य धार, निरवांछि तपैं शिवपद निहार |6|

अर्थ-

(गुरु आचारज उवझाय साधु, तन नगन रतनत्रय-निधि अगाध)-सच्चे गुरु ;आचार्य ,उपाध्याय और साधु नग्न होते है,किन्तु रत्नत्रय रुपी खज़ाना भरा हुआ होता है अर्थात रत्नत्रय से पवित्र होते है!

(संसारदेह वैराग्य धार, निरवांछि तपैं शिवपद निहार)- संसार और शरीर से वैराग्य धारण करके वांच्छा रहित होकर मोक्ष पद की ओर लक्ष्य रखते हुए तप तपते है !

गुण छत्तिस पच्चिस आठबीस, भवतारन तरन जिहाज ईस |

गुरु की महिमा वरनी न जाय, गुरु-नाम जपौं मन-वचन-काय |7|

अर्थ -

(गुण छत्तिस पच्चिस आठबीस, भवतारन तरन जिहाज ईस)-आचार्य परमेष्ठी के ३६,उपाध्याय परमेष्ठी के २५, और साधू परमेष्ठी के २८ मूल गुण होते है!ये तीनो संसार से स्वयं तथा अन्यों को पार लगाने के लिए जहाज के समान है ईश्वर के समान है!

(गुरु की महिमा वरनी न जाय,गुरु-नाम जपौं मन-वचन-काय) सच्चे गुरु की महिम का वर्णन नहीं किया जा सकता,मैं उन सच्चे गुरुओं के नाम को मन वचन काय से जपता हूँ

सोरठा-

कीजै शक्ति प्रमान, शक्ति बिना सरधा धरे

पूजा अर्थ सहित

आभार -पंडित रत्न लाल जैन बैनाड़ा जी

द्यानत सरधावान, अजर अमरपद भोगवे |8|

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा |

अर्थ-

(कीजै शक्ति प्रमान, शक्ति बिना सरधा धरे) - हमे चारित्र, शक्ति प्रमाण धारण करना चाहिए और शक्ति नहीं है तो श्रद्धा ही रखनी चाहिए क्योकि (द्यानत सरधावान, अजर अमरपद भोगवे) ध्यायन्त राय जी कहते है कि श्रद्धावान भी सम्यगदृष्टि होते है ,वे भी बुढ़ापे ,मरण रहित पद को भोगने वाले होते है !

(ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा) |

मै पञ्च परमेष्ठी और २४तीर्थंकरों को नमस्कार कर ,सच्चे देव-अरिहंत भगवान्,सच्चे शास्त्र-जिनवाणी और सच्चे गुरु -निर्ग्रन्थ मुनि महाराज को महा अर्घ्य समर्पित करता हूँ !

दोहा -

श्रीजिन के परसाद तें, सुखी रहें सब जीव |

यातें तन मन वचन तें, सेवो भव्य सदीव ||

इत्याशीर्वादः (पुष्पांजलिं क्षेपत्) |

अर्थ-

(श्रीजिन के परसाद तें, सुखी रहें सब जीव) श्री जिनेन्द्र भगवान् के परसाद से सभी जीव सुखी रहते है

(या तें तन मन वचन तें, सेवो भव्य सदीव) इसलिए सभी भव्य जीवों मन,वचन,काय से इनकी सेवा करो

इत्याशीर्वादः (पुष्पांजलिं क्षेपत्) -आशीर्वाद -पुष्प अर्पित करता हूँ

नोट - जैन धर्म में जिनेन्द्र भगवान् प्रसन्न हो कर सांसारिक सुखों की सामग्री भक्तो को नहीं देते!उनके पास वीतरागिता का अतिरिक्त कुछ देने को नहीं है,वे वीतरागिता ही भक्तों को देते है!हम उनकी वीतरागी अवस्था को देखकर,राग द्वेष छोड़ने की प्रेरणा मिलती है,उन जैसे वीतरागी होने के लिए प्रेरित होकर पुरुषार्थ करते है !पूजा करने से असाता कर्म का साता कर्म में सक्रमण है,उसका अनुभाग अर्थात फल दान शक्ति कम होती है, साता का आस्रव होता है तथा पुण्य का बंध होता है जिससे सनसारिक सामग्री प्राप्त होती है! सांसारिक दुखों के निवारण की भावना से जो पूजा अथवा संकट हरने के लिए महामृत्युंजय विधान या कालसर्प योग विधान आदि करते है उनके सांसारिक दुःख नहीं दूर होते क्योकि ऐसे पूजा और विधान करने से पुण्य बंध नहीं बल्कि पाप बंध होता है क्योकि यह निदान दोष है!हमे आत्म कल्याण के

पूजा अर्थ सहित

आभार -पंडित रत्न लाल जैन बैनाड़ा जी

भाव से पूजा करनी चाहिए,इससे स्वयं ही सांसारिक दुखों का निवारण होगा! इसके प्रथमानुयोग ग्रंथों /इतिहास में अनेको उद्धाराहण है जैसे-

आचार्य सामंतभद्र स्वामी जी ने सांसारिक वांछा की पूर्ती की भावना से नहीं,मात्र २४ तीर्थंकरों की भक्ति वश 'स्वयभू स्त्रोत्र' की रचना करी ,स्त्रोत्र का आठवे श्लोक रचते ही भगवान् चन्द्रप्रभु की प्रतिमा प्रकट हुई,

आचार्य मानतुंग आचार्य ने कारागर से मुक्त होने की भावना से नहीं बल्कि आदिनाथ भगवान् की भक्ति के

वशीभूत'भक्तामर स्त्रोत्र' की रचना करी,स्त्रोत्र रचते रचते उनके ताले स्वयं टूटने लगे,अंतिम श्लोक तक आख़री ताला भी टूट गया ,

वादिराज महाराज ने अपना कोड़ ठीक करने की भावना से नहीं वरना भक्ति भाव से 'एककीभाव स्त्रोत्र' की रचना करी ,स्त्रोत्र रचते रचते उनका कोड स्वयं ठीक हो कर शरीर कंचन की तरह कांतिमान हो गया ,

सेठ धनंजय ने विषापहर स्त्रोत्र की रचना भक्ति वश करी जिस के रचते रचते उनके बच्चे का विष, निर्विष होने लगा स्त्रोत्र के अंतिम श्लोक तक उनका पुत्र बिलकुल निर्विष हो कर ठीक हो गया !

मैंना सुन्दरी ने भी सिद्धचक्र विधान,पति श्रीपाल के कोड़ को ठीक करने की भावना से नहीं बल्कि मात्र निष्काम भक्ति वश किया था,उसने जैसे ही श्रीपाल जी के शरीर के ऊपर सिधचक्र विधान का गन्धोधक छिड़का ,उनका शरीर कोड मुक्त होकर कंचन की तरह कांतिमान हो गया!

इन सब की निष्काम भक्ति से असाता कर्म का परिणमन साता में होआ,जिससे उन्हें सांसारिक सुखों की प्राप्ति स्वयं ही मिली ,बिना उनकी वांच्छा करे !यदि वे भगवान् से इन कष्टों के निवारण की वांच्छा करते हुए ये स्त्रोत्र रचते तो उनके कष्ट नहीं दूर होते !

सभी तीर्थंकर सामान शक्तिमान है -कभी भी शनिवार को,शनिवार का प्रकोप दूर करने की भावना से मुनि सुव्रत भगवान् की पार्श्वनाथ भगवान् जी की संकट मोचक की,शांतिनाथ भगवान् की शांति प्रदान करने की, चन्द्रप्रभु भगवान् की चन्द्र का प्रकोप कम करने की भावना से मत कीजिये क्योंकि गुणों की अपेक्षा समस्त सिद्ध एक सामान है उनमे रंचमात्र भी हीनाधिकता नहीं है!जो एक भगवान् कर सकते है वे सभी कर सकते है, कोई भी तीर्थंकर/सिद्ध आत्माए किसी को सुख दुःख नहीं दे सकती,यदि हमारी मान्यता इसके विपरीत है तो हम जिनवाणी की आज्ञा का उल्लंघन करते हुए मिथ्यात्व का पोषण करते है!

3. भगवान् आदिनाथ जिन पूजन

पूजा अर्थ सहित

आभार -पंडित रत्न लाल जैन बैनाड़ा जी

प्रिय सहधर्मी बुजुर्गों,भाइयों बहिनो,बच्चो !जैजिनेंद्र देवकी!पञ्च परमेष्ठी भगवंतों की जय विश्व धर्म 'शाश्वत जैन धर्म की जय !संत श्रोमणि विद्यासागर महाराज जय !षष्टम पट्टाचार्य श्री ज्ञानसागर महाराज जय! आपके उत्साहपूर्वक दर्शन,अभिषेक,पूजादि की श्रंखला में मंगलाष्टक,दर्शन,पूजन,अभिषेक विधि के पश्चात ' (आचर्यमाघनन्दिद्वारा विरचित),विनयपाठ,पूजापीठिका,चत्तरिदण्डक,पञ्च कल्याणक अर्घ,पूजा प्रतिज्ञा पाठ,परमऋषि स्वस्तिमंगलपाठ,देव,शास्त्र,गुरु की सम्मुचय पूजा, देव ,शास्त्र, गुरु की पूजा (आचर्य माघनन्दी) के,'नव देवता की पूजा',पंच परमेष्ठी,"समुच्च्य चौबीसी पूजा " की पूजन के अर्थ एवं भावों सहित प्रस्तुति के बाद, इसी क्रम में आगे' भगवान आदिनाथ जी की पूजान अर्थ एवं भावों सहित आरम्भ करते है

नाभिराय मरूदेवि के नंदन,आदिनाथ स्वामी महाराज!

सर्वार्थ सिद्धितैं आप पधारे,मध्यलोक माहि जिनराज!!

इंद्रदेव सब मिलकर आये,जन्म महोत्सव करने काज!

आह्वानन सबविधिमिल करके,अपने कर पूजें प्रभुपायं

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्र!अत्र अवतर अवतर संवौषट्!(आवाहनन)

अत्र तिष्ठ:तिष्ठ:ठ:ठ:!(स्थापनं)

अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ! (सन्निधिकरणम्)

शब्दार्थ- नंदन-पुत्र,पाय-चरण

अर्थ-नाभिराय और मरूदेवि के पुत्र आदिनाथ स्वामी महाराज सर्वार्थसिद्धि से मध्यलोक में पधारे है!इंद्रदि देव जन्मोत्सव मानाने के लिए आये!हम सब मिलकर विधिपूर्वक;आवाहनन ,स्थापना करके, मन में विराजमान, सन्निधिकरण पूर्वक भगवान् के चरणों की पूजा करते है !

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्र!अत्र अवतर अवतर संवौषट्!(आवाहनन)

अत्र तिष्ठ:तिष्ठ:ठ:ठ:!(स्थापनं)

अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ! (सन्निधिकरणम्)

क्षीरोदधि को उज्जवल जल ले,श्री जिनवर पद पूजन जाय!

जनम जरा दुःख मेटन कारन,ल्याय चढ़ाऊँ प्रभु जी के पाय !!

पूजा अर्थ सहित

आभार -पंडित रत्न लाल जैन बैनाड़ा जी

श्री आदिनाथ के चरण कमल पर,बलि बलि जाऊँ मन वच काय!

हे करुणानिधि भव दुःख मेटो,यातैं मैं पूजों प्रभु पाय !!

ॐ ह्रीं आदिनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा !

शब्दार्थ-बलि बलि-सर्वस्व अर्पित करता हूँ ,यातैं -इसलिए,पद-चरण,करुणा निधि-करुणा के भण्डार

अर्थ-मैं क्षीरसागर के स्वच्छ जल को लेकर श्री जिनेन्द्र भगवान् के चरणों को पूजने के लिए जाता हूँ!जन्म और बुढ़ापे के कष्टों के निवारण हेतु, प्रभुजी के कमल चरणो पर जल अर्पित करता हूँ!मैं श्री आदिनाथ के चरणों में मन वचन काय से सर्वस्व अर्पण करता हूँ!हे करुणानिधि,आप मेरे सांसारिक दुखों का निवारण कर दीजिये, इसलिए मैं प्रभु आप के चरणों की पूजा करता हूँ !

ॐ ह्रीं आदिनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा !

मलयागिरी चंदन दाह निकंदन,कंचन झारी में भर ल्याय !!

श्री जी के चरण चढ़ावो भविजन ,भव आताप तुरत मिट जाय !

श्री आदिनाथ के चरण कमल पर,बलि बलि जाऊँ मन वच काय!

हे करुणानिधि भव दुःख मेटो,यातैं मैं पूजों प्रभु पाय !!

ॐ ह्रीं आदिनाथ जिनेन्द्राय संसार ताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा !

शब्दार्थ-मलयागिरी-मलयागिरि का सर्वश्रेष्ठ,चंदन-चंदन,दाह-तपन/जलन निकंदन-दूर करने वाला है,,कंचन झारी में भर ल्याय! भविजन-भव्यजीवों,भव-संसार के,आताप-दुखों,तुरत-तुरंत,मिट-निवारण,जाय-होता है !

अर्थ-मलयागिरि का सर्वश्रेष्ठ,संसार के ताप/दुखों की जलन का निवारक चंदन स्वर्ण की झारी में भरकर लाया हूँ!हेभव्य जीवों!इसे श्रीजी के चरणों में अर्पित करो,इससे संसार के दुखों का तुरंत निवारण हो जाता है!श्री आदिनाथ के कमल चरणों पर मैं मन वचन काय से सर्वस्व अर्पण करता हूँ !हे करुणानिधि,आप मेरे सांसारिक दुखों का निवारण कर दीजिये,इसलिए मैं प्रभु आप के चरणों की पूजा करता हूँ !

ॐ ह्रीं आदिनाथ जिनेन्द्राय संसार ताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा !

शुभशालि अखंडित सौरभ मंडित,प्रासुक जलसों धोकर ल्याय !

श्री जी के चरण चढ़ावो भविजन ,अक्षय पद को तुरत उपाय !

श्री आदिनाथ के चरण कमल पर,बलि बलि जाऊँ मन वच काय!

पूजा अर्थ सहित

आभार -पंडित रत्न लाल जैन बैनाड़ा जी

हे करुणानिधि भव दुःख मेटो,यातैं मैं पूजों प्रभु पाय !!

ॐ ह्रीं आदिनाथ जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा !

शब्दार्थ-शुभ-अच्छे,शालि-शालिवनके,अखंडित-साबुत,सौरभ-सुगंध से,मंडित-सहित,प्रासुक-जीव रहित,जलसों-जल से,धोकर-धोकर,ल्याय-लाया हूँ !

अर्थ-शाली वन के अच्छे साबुत,सुगन्धित अक्षतों को प्रासुक जल से धोकर लाया हूँ!हे भव्य जीवों !अक्षतों को श्रीजी के चरणों में अर्पित करने से अक्षय मोक्ष पद प्राप्त होता है !श्री आदिनाथ के कमल चरणों पर मैं मन वचन काय से सर्वस्व अर्पण करता हूँ!हे करुणानिधि,आप मेरे सांसारिक दुखों का निवारण कर दीजिये,इसलिए मैं प्रभु आप के चरणों की पूजा करता हूँ !

ॐ ह्रीं आदिनाथ जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा !

कमल केतकी बेल चमेली ,श्री गुलाब के पुष्प मंगाय !

श्री जी के चरण चढ़ावो भविजन,कामबाण तुरत नसि जाय !!

श्री आदिनाथ के चरण कमल पर,बलि बलि जाऊँ मन वच काय!

हे करुणानिधि भव दुःख मेटो,यातैं मैं पूजों प्रभु पाय !!

ॐ ह्रीं आदिनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा !

अर्थ-हे भव्य जीवों !कमल,केतकी,बेल,चमेली और गुलाब के पुष्प मंगाकर भगवान् के चरणों में अर्पित करने से कामवासना तुरंत नष्ट होती है !श्री आदिनाथ के कमल चरणों पर मैं मन वचन काय से सर्वस्व अर्पण करता हूँ!हे करुणानिधि,आप मेरे सांसारिक दुखों का निवारण कर दीजिये,इसलिएमैं प्रभु आप के चरणों की पूजा करता हूँ !

ॐ ह्रीं आदिनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा

नेवज लीना षट्-रस भीना,श्री जिनवर आगे धरवाय !

थाल भराऊँ क्षुधा नसाऊँ,जिन गुण गावत मन हरषाय!!

श्री आदिनाथ के चरण कमल पर,बलि बलि जाऊँ मन वच काय!

हे करुणानिधि भव दुःख मेटो,यातैं मैं पूजों प्रभु पाय !!

ॐ ह्रीं आदिनाथ जिनेन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्य निर्वपामीति स्वाहा !

पूजा अर्थ सहित

आभार -पंडित रत्न लाल जैन बैनाड़ा जी

शब्दार्थ -भीना-परिपूर्ण,श्री जिनवर-भगवान्,आगे-समक्ष,धरवाय-रखता /अर्पित करता हूँ ,नसाऊँ-नष्ट करने के लिए,जिन-जिनेन्द्र भगवान् के,हरषाय-प्रसन्न हो रहा है

अर्थ-मैं षट्रसों से परिपूर्ण नैवेद्य से भरा थाल,क्षुधा रोग को नष्ट करने के लिए भगवान् के समक्ष रख/अर्पित कर रहा हूँ जिनेन्द्र भगवान् का गुणानुवाद करते हुए मेरा मन अत्यंत प्रसन्न हो रहा है !श्री आदिनाथ के कमल चरणों पर मैं मन वचन काय से सर्वस्व अर्पण करता हूँ!हे करुणानिधि,आप मेरे सांसारिक दुखों का निवारण कर दीजिये ,इसलिए मैं प्रभु आप के चरणों की पूजा करता हूँ !

ॐ ह्रीं आदिनाथ जिनेन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्य निर्वपामीति स्वाहा !

जगमग जगमग होत दशौंदिश,ज्योति रही मंदिर में छाय।

श्रीजी के सन्मुख करत आरती,मोहतिमिर नासै दुखदाय॥

श्री आदिनाथ के चरण कमल पर,बलि बलि जाऊँ मन वच काय!

हे करुणानिधि भव दुःख मेटो,यातैं मैं पूजों प्रभु पाय !!

ॐ ह्रीं आदिनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा !

शब्दार्थ-मोह तिमिर-मोह रूपी अंधकार,,छाय-फैलकर

अर्थ-मै दीपक लेकर आया हूँ जिसकी ज्योति मंदिर जी को जगमगा कर दसो दिशाओ मे फैलकर प्रकाशित कर रही है।ऐसे दीपक से भगवान् के समक्ष आरती करने से अत्यंत दुखदायी मोहरूपी अंधकार नष्ट हो जाता है !श्री आदिनाथ के कमल चरणों पर मैं मन वचन काय से सर्वस्व अर्पण करता हूँ!हे करुणानिधि,आप मेरे सांसारिक दुखों का निवारण कर दीजिये,इसलिए मैं प्रभु आप के चरणों की पूजा करता हूँ !

ॐ ह्रीं आदिनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा !

अगर कपूर सुगंध मनोहर,चंदन कूट सुगंध मिलाय !

श्री जी के सन्मुख खेय धूपायन,कर्मजरे चहुँगति मिटि जाय !

श्री आदिनाथ के चरण कमल पर,बलि बलि जाऊँ मन वच काय!

हे करुणानिधि भव दुःख मेटो,यातैं मैं पूजों प्रभु पाय !!

ॐ ह्रीं आदिनाथ जिनेन्द्राय अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा !

पूजा अर्थ सहित

आभार -पंडित रत्न लाल जैन बैनाड़ा जी

शब्दार्थ-धूपायन-धूपदान,कर्मजरे-कर्म जल जाए/नष्ट हो जाए ,चहुँगति-चार गतियों रूप संसार

अर्थ- मैंने अगर,कपूर और मनोहर सुगन्धित चंदन और अन्य सुगन्धित पदार्थों को कूट कर धूप बनायी है ! भगवान् के सम्मुख धूपायन में इनको मैं खे रहा हूँ जिससे मेरे कर्म नष्ट हो जाए और मेरा चतुरगति रूप संसार समाप्त हो जाए!श्री आदिनाथ के कमल चरणों पर मैं मन वचन काय से सर्वस्व अर्पण करता हूँ!हे करुणा निधि,आप मेरे सांसारिक दुखों का निवारण कर दीजिये,इसलिए मैं प्रभु आप के चरणों की पूजा करता हूँ !

ॐ ह्रीं आदिनाथ जिनेन्द्राय अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा !

श्री फल और बादाम सुपारी,केला आदि छुहारा ल्याय !

महा मोक्षफल पावन कारन,ल्याय चढ़ाऊँ प्रभु जी के पाय!!

श्री आदिनाथ के चरण कमल पर,बलि बलि जाऊँ मन वच काय!

हे करुणानिधि भव दुःख मेटो,यातैं मैं पूजों प्रभु पाय !!

ॐ ह्रीं आदिनाथ जिनेन्द्राय मोक्ष फल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा !

शब्दार्थ-पाय-चरणों में,ल्याय-लाया हूँ

अर्थ - मैं श्री फल,बादाम,सुपारी,केला,छुहारा आदि सभी प्रकार के फल लेकर आया हूँ ,उन्हें महा मोक्षफल प्राप्त करने के लिए,प्रभु आपके चरणों में अर्पित करता हूँ!श्री आदिनाथ के कमल चरणों पर मैं मन वचन काय से सर्वस्व अर्पण करता हूँ!हे करुणानिधि,आप मेरे सांसारिक दुखों का निवारण कर दीजिये ,इसलिए मैं प्रभु आप के चरणों की पूजा करता हूँ !

ॐ ह्रीं आदिनाथ जिनेन्द्राय मोक्ष फल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा !

शुचि निर्मल नीरं गंध सुअक्षत,पुष्प चरु ले मन हरषाय!

दीप धूप फल अर्घ सुलेकर,नाचत ताल मृदंग बजाय !!

श्री आदिनाथ के चरण कमल पर,बलि बलि जाऊँ मन वच काय!

हे करुणानिधि भव दुःख मेटो,यातैं मैं पूजों प्रभु पाय !!

ॐ ह्रीं आदिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा !

पूजा अर्थ सहित

आभार -पंडित रत्न लाल जैन बैनाड़ा जी

शब्दार्थ-शुचि-पवित्र,निर्मल-स्वच्छ,नीरं-जल,गंध-सुगन्धितचंदन, सुअक्षत-अच्छेचावल,पुष्प-पुष्प,चरु-नैवेद्य , ले मन हरषाय-लेकर मन हर्षित हो रहा है,सुलेकर-स्वच्छ हाथों में ,नाचत नाचते हुए,ताल-ताली बजता हुआ, मृदंग-ढोल, बजाय-बजता हुआ

अर्थ-पवित्र शुद्ध,स्वच्छ जल,चन्दन,अक्षत,पुष्प,नैवेद्य लेकर प्रसन्न चित मन से दीप,धुप और फलों के अर्घ को हाथ में लेकर नाचते हुए,ताली और ढोल बजते हुए भगवान् की पूजा करता हूँ!श्रीआदिनाथ के कमल चरणों पर मैं मन वचन काय से सर्वस्व अर्पण करता हूँ!हे करुणानिधि,आप मेरे सांसारिक दुखों का निवारण कर दीजिये ,इसलिए मैं प्रभु आप के चरणों की पूजा करता हूँ !

ॐ ह्रीं आदिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा !

पञ्च कल्याणक के अर्घ

सर्वारथ सिद्धितैं चये,मरू देवी उर आय !दोज असित आषाढ़ की,जजूँ तिहारे पाय !!

ॐ ह्रीं आषाढ़ कृष्णा द्वितीयायं गर्भ कल्याणक प्राप्ताये श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा !

शब्दार्थ -चये- आयु पूर्ण कर आये ,उर-उदर/गर्भ में,असित-बदी /कृष्णा,तिहांरे-आपके,पाय-चरणों

अर्थ-सर्वार्थसिद्धि से आयु पूर्ण कर आप मरू देवी माता के उदर/गर्भ में आषाढ़ बदी /कृष्णा पक्ष के द्वितीया को आये थे! मैं आपके चरणों की पूजा करता हूँ !

ॐ ह्रीं आषाढ़ कृष्णा द्वितीयायं गर्भ कल्याणक प्राप्तये श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा !

नोट-जब भी आप अर्घ्य अर्पित करे तो कुंडलपुर वाले आदिनाथ बाबाकी प्रतिमा का चिंतवन कर,मन में विराज मान कर,उनकी वंदना करे आपको अत्यंत आनंद की अनुभूति होगी !

चैतवदी नौमी दिना,जन्म्या श्री भगवान्!सुरपति उत्सव अति करा,मैं पूजौं धरी ध्यान !!

ॐ ह्रीं चैत कृष्णा नवम्यां जन्म कल्याणक प्राप्ताये श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा !

अर्थ-चैतवदी/कृष्णा नवमी को भगवान् आदिनाथ का जन्म हुआ था,उस समय(सुरपति) इंद्र ने अति उत्साह पूर्वक उत्सव मनाया था !मैं आपकी ध्यान पूर्वक पूजा करता हूँ !

ॐ ह्रीं चैत कृष्णा नवम्यां जन्म कल्याणक प्राप्तये (यहाँ सुभौम जी में आदिनाथ भगवान् जी की खडगासन में विराजमान प्रतिमा जी का ध्यान करे)श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा !

नोट-यहाँ आप चिंतवन करे कि इंद्राणी ने मायवयी बालक को तीर्थंकर के स्थान पर माता मरू देवी के पास रखकर तीर्थंकर बालक को इन्द्र को दिया,वे उसे ऐरावत हाथी पर बैठा कर उन्हें मेरु पर्वत पर

पूजा अर्थ सहित

आभार -पंडित रत्न लाल जैन बैनाड़ा जी

लेजाकर,उनका क्षीरसागर के जल से अभिषेक कर भगवान् का जन्म कल्याणक उत्सव मानते है!कल्पना कीजिये हमें कब ऐसा सौभाग्य मिलेगा कि हम भी भगवान् का जन्म कल्याणक मनायेगे !

तृणवत् ऋद्धि सब छांड़ि के,तप धार्यो वन जाय !नौमी चैत असेत की,जजूँ तिहारे पाय !!

ॐ ह्रीं चैत कृष्णा नवम्यां तप कल्याणक प्राप्ताये श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा !

शब्दार्थ-तृणवत् -तृण के सामान,ऋद्धि-वैभव को,असेत-वदी

अर्थ-भगवन आपने समस्त वैभव को तृण के सामान छोड़कर वन में जाकर चैत वदी नवमी को तप धारण कर लिया !हम आपके चरणों की पूजा करते है

ॐ ह्रीं चैत कृष्णा नवम्यां तप कल्याणक प्राप्ताये श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा !

नोट-तपकल्याणक में आप कल्पना कीजिये लौकांतिकदेव ने आकर भगवान् के तपकल्याणक की अनुमोदना करी,भगवान पालकी में विराजमान होकर वन में जाकर निर्ग्रथ बन गए!

ॐ ह्रीं चैतकृष्णा नवम्यां तपमंगल प्राप्ताय चाँदखेड़ी में विराजमान भगवान् जिनेन्द्राय रहम निर्वपामीति स्वहा

फाल्गुन वदि एकादशी,उपज्यो केवलज्ञान!इंद्र आय पूजा करी ,मैं पूजो यह थान !!

ॐ ह्रीं फाल्गुन कृष्णाकादश्यां ज्ञानकल्याणक प्राप्ताये श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा !

अर्थ-फाल्गुन कृष्ण एकादशी को आपको केवलज्ञान उत्पान होने के कारण इंद्र ने यहाँ आकर आपकी पूजा करी थी,मैं भी इस(थान) स्थान पर आकर आपके ज्ञानकल्याणक की पूजा करता हूँ !

ॐ ह्रीं फाल्गुन कृष्णाकादश्यां ज्ञानकल्याणक प्राप्ताये प्रयाग में विराजमान श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय बिंबं अर्घं निर्वपामीति स्वाहा !

माघ चतुर्दशी कृष्ण को,मोक्ष गए भगवान्!भवि जीवों को बोधिके,पहुँचे शिवपुर थान !!

ॐ ह्रीं माघ कृष्णचतुर्दश्यां मोक्ष कल्याणक प्राप्ताये श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा !

अर्थ-

माघकृष्ण(वदि)चतुर्दशी को भगवान् आदिनाथ भव्य जीवों को उपदेश देकर मोक्ष (शिवपुर थान),सिद्धालय पधारे थे !

ॐ ह्रीं माघ कृष्णचतुर्दश्यां मोक्ष कल्याणक प्राप्ताये श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा !

पूजा अर्थ सहित

आभार -पंडित रत्न लाल जैन बैनाड़ा जी

नोट -भगवान् आदिनाथ कैलाश पर्वत से मोक्ष पधारे !इस समय आप तिब्बत से ऊपर कैलाश पर्वत का चिंतवन करे जहाँ से भगवान् मोक्ष पधारे!

विशेष-

भगवान आदिनाथ के प्रदेश ५०० धनुष थे।सिद्धालय मे इससे कुछ कम प्रदेश विराजमान रहते है उनका सिर तनु वातवलय के अंत में,लोक के अंत को स्पर्श करते हुए है!

भगवान् आदिनाथ को तीसरे काल में मोक्ष हुआ !उस समय तीसरे काल के ३ वर्ष ८माह १५ दिन शेष थे !

कितने वर्ष पूर्व भगवान् आदिनाथ को मोक्ष हुआ

भगवान् आदिनाथ १ कोड़ा कोड़ी सागर वर्ष-४२००० वर्ष +२५४३ वर्ष ८माह १५ दिन पूर्व आदिनाथ भगवान् जी को मोक्ष प्राप्त हुआ था !ये भी असंख्यात वर्ष हो गए !

जयमाला

आदीश्वर महाराज मैं विनती तुमसे करूँ !चारों गति के माहिं मैं दुःख पायो सो सुनो !!

अर्थ-आदीश्वर महाराज,मैं आपसे विनती करता हूँ कि जो मैंने चारों गतियों में दुःख पाये है उन्हें आप सुनिये

अष्टकर्म मैं एकलो,यह दुष्ट महा दुःख देत हो!

कबहुँ इतर निगोद में मोकूँ,पटकत करत अचेत हो !!म्हारी दीनतणी सुन विनती !!

शब्दार्थ-!म्हारी-मेरी,दीनतणी -दीनता भरी हुई !

अर्थ-ये दुष्ट कर्म आठ है और मैं अकेला हूँ! ये बहुत दुःख देते है कभी मुझे इतर निगोद में पटक कर अचेत कर देते है !मेरी दीनताभरी हुई विनती आप सुनिये !

नोट-नित्यनिगोद-जहाँ से जीव आज तक नहीं निकला!जब वहाँ से निकलकर पुन: निगोद में जाता है तो वह इतर निगोद है !

नरक गति के दुःख -

प्रभु कबहुँक पटक्यो नरक में,जठै जीव महादुख पाय हो!

निष्ठुर निरदई नारकी,जठै करत परस्पर घात हो !! म्हारी दीनतणी सुन विनती!!

पूजा अर्थ सहित

आभार -पंडित रत्न लाल जैन बैनाड़ा जी

शब्दार्थ-जठै-जहाँ,निष्ठुर-क्रूर-बुरे परिणाम वाले,निर्दई -दया रहित,घात-लड़ाते रहते है

अर्थ-प्रभु (इन कर्मों ने) मुझे कभी नरक में पटक दिया जहाँ जीव को महा दुख होता है !जहाँ क्रूर परिणामो वाले निर्दयी नारकी परस्पर लड़ते रहते है!भगवन!मेरी दीनताभरी हुई विनती आप सुनिये !

प्रभु नरक तणा दुःख अब कहूँ,जठै करे परस्पर घात हो!

कोईयक बांध्यो खम्भस्यो,पापी दे मुद्गर की मार हो! म्हारी दीनतणी सुन विनती!

अर्थ-प्रभु नरक के दुःख कहता हूँ,वहाँ एक दुसरे का जीव घात करते रहते है;(कोईयक) कोई तो एक को खम्भे से बाँध देते है और उसे खूब मारते हैं !भगवन!मेरी दीनताभरी हुई विनती आप सुनिये !

कोईयक कांटें करोतसों,पापी अंगतणी दोयफाड़ हो!

प्रभु यहविधि दुःख भुगत्याघणा,फिर गति पाई तिर्यंच हो!म्हारी दीनतणी सुन विनती!
अर्थ-कोई (नारकी) (करोतसों) आरे से काटते है।पापी अंगो को दो फाड़ में फाड़ देते है!प्रभु इस प्रकार मैंने वहाँ (घणा) बहुत दुःख भोग कर तिर्यंच गति पायी !भगवन!मेरी दीनताभरी हुई विनती आप सुनिये !

हिरण बकरा बाछला,पशु दीन गरीब अनाथ हो!

पकड़ कसाई जाल में पापी काट काट तन खाय हो !म्हारी दीनतणी सुन विनती!

अर्थ-(कभी) हिरण,बकरा,बछड़ा,आदि हुआ,पशु हुआ, दीन,गरीब अनाथ हुआ!पापी कसाई ने जाल में पकड़कर शरीर को काट काट कर खाया!भगवन!मेरी दीनताभरी हुई विनती आप सुनिये !

प्रभु मैं ऊंट बलद भैंसा भयो जापैं लदियों भार अपार हो!!

नहि चाल्यो जब गिर पड्यो,पापी दे सोटन की मार हो।म्हारी दीनतणी सुन विनती!
अर्थ-प्रभु मैं कभी ऊँट,बैल(बलद),भैसा हुआ तब मुझ पर बहुत भार लादा गया!जब मैं नहीं चल सकने के कारण गिरा तब पापी ने डंडे से मारा !भगवन!मेरी दीनताभरी हुई विनती आप सुनिये !

देवांगना संग रमि रह्यो जठै भोगनि को परकास हो !

प्रभु संग अप्सरा रमि रह्यो ,कर कर अति अनुराग हो !!म्हारी दीनतणी सुन विनती!!

अर्थ-स्वर्ग में जहाँ भोगो की (परकास) अधिकता है वहाँ देवांगनाओं में ही रमा रहा !प्रभु अप्सराओं में अत्या धिक अनुरागवश रमा रहा !भगवन!मेरी दीनताभरी हुई विनती आप सुनिये !

कबहुँक नंदनवन विषैं प्रभु,कबहुँक वन गृह माहिं हो!

पूजा अर्थ सहित

आभार -पंडित रत्न लाल जैन बैनाड़ा जी

प्रभु यही विधिकाल गमायकैं,फिर माला गई मुरझाय हो!!म्हारी दीनतणी सुन विनती!!

अर्थ- प्रभु कभी मैं नंदन वन के विषयों में लगा रहा ,कभी वनों के गृहों में गया(भोगो में ही लीन रहकर),प्रभु वहाँ मैंने इस प्रकार समय व्यर्थ किया ,फिर माला मुरझाने लगी(उसके बाद देव पर्याय छोड़नी पड़ी) भगवन!मेरी दीनताभरी हुई विनती आप सुनिये !

एव तिथी सब घट गई ,फिर उपज्यो सोच अपार हो!

सोच करता तन खिर पड्यो ,फिर उपज्यो गरभ मैं जाय हो!!म्हारी दीनतणी सुन विनती!!

शब्दार्थ-एव तिथी-अब स्थिति,खिर पड्यो-नष्ट हो गया,उपज्यो उत्पन्न हुआ

अर्थ-अब (देवो की) स्थिति (आयु) घट गयी अर्थात समाप्त होने लगी ,यह सोचकर ही अत्यंत दुखी हुआ,यह सोचते सोचते ही शरीर नष्ट हो गया,उसके बाद गर्भ में जाकर उत्पन्न हुआ!मेरी दीनताभरी हुई विनती आप सुनिये !

नोट-इस प्रकार उक्त तीन छंदों में देवगति के भोगो को भोगते हुए जीव ने खूब पापकर्मों का बंध किये!यदि देव पर्याय में तीर्थंकर के समवशरण में जाकर सम्यक्त्व प्राप्त करता तो अब तक तो संसार चक्र टूट गया होता ! देवो के गले में एक माला पडी रहती है जो कि उनकी आयु के छह माह शेष रहने पर मुरझाने लगती है जिससे उन्हें आभास हो जाता है कि उनकी देवायु छह माह शेष रह गयी है !

प्रभु गर्भतणा दुःख अब कहूँ,जठै सकुड़ाई की ठौर हो!

हलन चलन नहिं कर सक्यो,जठै सघन कीच घनघोर हो!!म्हारी दीनतणी सुन विनती!!

देव पर्याय से मैं मनुष्य पर्याय की गर्भावस्था में आया वहाँ के दुखों का वर्णन करता हूँ -

अर्थ-प्रभु गर्भ के दुखो को कहता हूँ !वहाँ (माँ के पेट में) बहुत थोडा स्थान है,सुकड़ा हुआ बिना किसी हलन चलन के रहा,वहाँ अत्यधिक गंदगी थी!भगवान्! मेरी दीनताभरी हुई विनती आप सुनिये !
माता खावै चरपरो ,फिर लागे तन संताप हो!

प्रभु ज्यों जननी तातो भखै,फिर उपजै तन संताप हो !!म्हारी दीनतणी सुन विनती!!

अर्थ-माता ने जब चरपरी वस्तु का सेवन किया तो शरीर में संताप हुआ,प्रभु माँ ने जब (तातो) गर्म खाया तो मेरे शरीर में संताप उत्पन्न हुआ!(इस प्रकार गर्भ में बहुत पीड़ा को सहा) भगवान् मेरी दीनताभरी हुई विनती आप सुनिये !

औंधे मुख झूल्यो रह्यो,फेर निकसन कौन उपाय हो!

कठिन कठिन कर नीसरो जैसे निसरै जंत्री में तार हो !म्हारी दीनतणी सुन विनती!!

पूजा अर्थ सहित

आभार -पंडित रत्न लाल जैन बैनाड़ा जी

अर्थ-(माँ के पेट में) (औंधे मुख)उल्टा (झूलता) लटका रहा वहाँ से निकलने का क्या उपाय हो सकता था (कोई भी नहीं)!जैसे जंत्री में से तार निकला जाता है वैसे ही बड़ी कठिनाई से बहुत कष्ट सहते हुए बाहर आया उस कष्ट का वर्णन तो करना असम्भव है ! भगवान् मेरी दीनताभरी हुई विनती आप सुनिये !
प्रभु फिर निकसत की धरत्यां पड्यो,फिर लागी भूख अपार हो!

रोय रोय बिलख्यो घणो,दुःख वेदन को नहिं पार हो !! म्हारी दीनतणी सुन विनती!!
अर्थ-गर्भ से निकलकर पृथ्वी पर गिरा,फिर बहुत भूख लगी,रो रो कर मैं खूब बिलखा;भगवन मुझे दुःख की अपार वेदना हुई!भगवान् मेरी दीनताभरी हुई विनती आप सुनिये !

नोट- कुछ देव मरकर एकेंद्रियों में जन्म लेते है क्योकि उन्हें अवधि ज्ञान से मनुष्य पर्याय के गर्भ के दुखों का ज्ञान हो जाता है तो वे भावना भाते है कि हम एकेन्द्रिय बन जाए किन्तु गर्भ के कष्टो से बच जाए !इसलिए उनका जन्म एकेन्द्रियजीवों में होता है !
प्रभु दुःख मेटन समरथ घनी यातैं लागूँ तिहारे पाय हो!

सेवक अरज करैप्रभु मोकूँ,भवोदधि पार उतार हो !!म्हारी दीनतणी सुन विनती!!

अर्थ- प्रभु ,आप दुखों को मेटने में समर्थवान है इसलिए मैं आपके चरणों की वंदना में लगा हूँ!मैं प्रभु आपसे

(अरज)प्रार्थना करता हूँ कि मुझे संसार सागर से पार लगा दीजिये! भगवान् मेरी दीनताभरी हुई विनती आप सुनिये !

श्री जी की महिमा अगम है,कौन न पावै पार!

मैं मति अल्प अज्ञान हों,कौन करैं विस्तार !!

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्तये महांर्घं निर्वपामीति स्वाहा !

शब्दार्थ-अगम-जान्ने में नहीं आने वाली !

अर्थ-भक्त कहता है कि श्री जी-भगवान् की महिमा अपरम्पार है,उसका कोई वर्णन नहीं कर सकता!भगवान् की भक्ति से समस्त संकटों का निवारण हो जाता है!मै अत्यंत अल्पज्ञानी हूँ,मैं भगवान् के समस्त गुणों का गुणानुवाद करने में असमर्थ हूँ

विशेष-भगवान् दुखों का निवारण नहीं कर सकते किन्तु उनकी पूजन,भक्ति,जिनबिम्ब दर्शन आदि से सम्यग्दर्शन प्राप्त कर जो हम पुण्य का उपार्जन करते है उस से समस्त सांसारिक दुखों से मुक्ति मिल सकती है!भक्ति पूजन बिम्बदर्शन आदि से असाता वेदनीय का संक्रमण साता वेदनीय में होता है,असाता वेदनीय कर्म का अनुभाग/फल देने कि शक्ति कम हो जाती है,दुखो का शमन हो जाता है!सातिशय पुण्यबंध होता है,सम्यग्दर्शन के बाद संसार अर्द्ध पुद्गल परावर्तन मात्र रह जाता है !

पूजा अर्थ सहित

आभार -पंडित रत्न लाल जैन बैनाड़ा जी

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्तये महांर्घं निर्वपामीति स्वाहा !

विनती ऋषभ जिनेश की ,जो पढ़सी मन लाय !

सुरगों में संशय नहीं ,निश्चय शिवपुर जाय !!

'पुष्पांजलि क्षिपेत्'

अर्थ-जो ऋषभ देव भगवान् की विनती मनोयोग से करते है उसको स्वर्ग तो निसंदेह मिलेगा ही किन्तु निश्चय से वह मोक्ष भी जाएगा !

क्योकि भगवान कि भक्ति से सम्यग्दर्शन प्राप्त हो जाता है,जिससे सम्यग्ज्ञानी होकर,सम्यक्चारित्र धारण कर कर्मों कि निर्जरा करता है!यह सत्य है कि इस भव में हमे मोक्ष नही मिलेगा किन्तु पुण्यबंध होगा ही जिस से अगले भवों में मोक्ष में सहकारी पर्याय/पद मिलेगा! देव होंगे तो विदेह क्षेत्र में जाकर तीर्थंकरों कि दिव्यध्वनि सुन सकेंगे!विदेहक्षेत्र में मनुष्य बने तो मुनि बनकर वहाँ से कर्मों की निर्जरा करके मोक्ष प्राप्त कर सकते है !

मनोयोग से विनती करने से मतलब है पूजा के शब्दो का शुद्ध उच्चारण,अर्थ समझकर कर, भाव से पूजन करने से है ! चन्द्र प्रभु भगवान् की पूजा

4 चन्द्र प्रभु भगवान् की पूजा

(वृंदावन दास जी कृत)

प्रिय सहधर्मी बुजुर्गों,भाइयों बहिनो,बच्चो !जैजिनेंद्र देवकी!पञ्च परमेष्ठी भगवंतों की जय विश्व धर्म 'शाश्वत जैन धर्म की जय !संत श्रोमणि विद्यासागर महाराज जय !षष्टम पट्टाचार्य श्री ज्ञानसागर महाराज जय!आपके उत्साहपूर्वक दर्शन,अभिषेक,पूजादि की श्रंखला में मंगलाष्टक,दर्शन,पूजन,अभिषेक विधि के पश्चात आचर्य माघ नन्दि द्वारा विरचित),विनयपाठ,पूजापीठिका,चत्तरि दण्डक,पञ्चकल्याणकअर्घ,पूजाप्रतिज्ञापाठ, परमऋषि स्वस्तिमंगलपाठ,देव,शास्त्र,गुरु की सम्मुचय पूजा,देव,शास्त्र, गुरु की पूजा (आचर्य माघनन्दी) के, 'नवदेवता की पूजा',पंच परमेष्ठी,"समुच्च्य चौबीसी पूजा ",भगवान आदिनाथ जी की पूजन की पूजन के अर्थ एवं भावों सहित प्रस्तुति के बाद, इसी क्रम में आगे' चन्द्रप्रभ भगवान की पूजन का अर्थ एवं भावों सहित आरम्भ करते है

चन्द्रप्रभु भगवान् कि जय !

चारु चरण आचरन,चरण चित हरन चिह्नचर्,

पूजा अर्थ सहित

आभार -पंडित रत्न लाल जैन बैनाड़ा जी

चंद चंद तनचरित,चंदथल चहत चतुर नर !

चतुक चण्ड-चक चूरि,चारि चिदचक्र गुनाकार,

चंचल चलित सुरेश,चूलनुत चक्र धनुरहर !!

शब्दार्थ-चारु-सुंदर,चरण-चरण,आचरन-आचरण,चिह्नचर्-जिनका चिन्ह चंद्रमा है,चंद-चंद्रमा के समान,चंद-पवित्र/स्वच्छ है,तनचरित-शरीर और चरित्र,चंदथल-चन्द्रप्रभ की शरण,चतुर नर-भक्त/धर्मात्मा,चण्ड-निर्दयी,चकचूरि-नष्ट करके, चिदचक्र-चैतन्य समूह के,गुना कार-गुणों के आकार /स्थान अर्थात भण्डार है,चंचल चलित-निरंतर चालाय मान,सुरेश-इंद्र,चूलनुत-सभी नमस्कार करते हैं,चक्र-चक्रवर्ती है,धनुरहर-धनुष धारी,

अर्थ-सुन्दर चरणों और आचरण वाले,चित्त को हरने वाले चंद्रमा के चिन्ह से सुशोभित चरण,परम पवित्र / चंद्रमा के सामान स्वच्छ शरीर और चरित्र के धारक चन्द्रप्रभ भगवान्,उन चन्द्रप्रभ की शरण भक्त/धर्मात्मा चाहते है,जिन्होंने चार निर्दयी (घातिया कर्मों)को नष्ट कर दिया है,चैतन्य समूह के चार (अनंत चतुष्टाय)गुणों के भण्डार/धारक है,जिन्हे निरंतर चंचल इंद्र,चक्रवर्ती,धनुषधारी सभी नमस्कार करते है,ऐसे भगवन आप है !

चर अचर हितू तारन तरन,सुनत चहकि चिरनंद शुचि !

जिनचंद चरन चरच्यो चहत ,चीतचकोर नचि रचि रूचि !!

शब्दार्थ-चर-त्रस,अचर-स्थावर,चिरनंद-अनंत सुख,शुचि -पवित्र ,हितू-हितकारी,तारन तरन-संसार को पार करने वाले तथा अन्यो को भी पार कराने वाले,चरच्यो-पूजा करने,चहत इच्छा रखते हुए,

अर्थ-आप त्रस और स्थावर जीवों के हितकारी (क्योकि उनकी अहिंसा का निरंतर आप उपदेश देते है) है,आप संसार को स्वयं पार करने तथा अन्यो को पार कराने वाले है!आपके पवित्र अनंत सुख की चर्चा सुनकर भव्य जीव प्रसन्न हो जाते है!ऐसे चन्द्र प्रभ भगवान् के चरणो की पूजा करने को इच्छा रखता हुआ मेरा चित रुपी चकोर नाच /(प्रसन्न हो) रहा है!अर्थात ऐसे चन्द्र प्रभु भगवान् की मैं हृदय से पूजा कर रहा हूँ !

(दोहा)

धनुष डेढ़ सौ तुंग तन,महासेन नृपनंद !

मातु लछमना उर जये,थापों चंद जिनन्द !

ॐ ह्रीं चन्द्रप्रभ जिनेन्द्र!अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं !

पूजा अर्थ सहित

आभार -पंडित रत्न लाल जैन बैनाड़ा जी

ॐ ह्रीं चन्द्रप्रभ जिनेन्द्र!अत्र तिष्ठ:तिष्ठ: ठ:ठ: स्थापनं

ॐ ह्रीं चन्द्रप्रभ जिनेन्द्र!अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्!सन्निधिकरणं !

शब्दार्थ-तुंग-ऊंचा ,नृप नंद -राजा के पुत्र ,

अर्थ -शरीर डेढ़ सौ धनुष ऊंचा,महासेन राजा के पुत्र ,माता लछमना के उर से उत्पन्न ,चन्द्रप्रभ भगवान् की मैं यहाँ स्थापना करता हूँ !

ॐ ह्रीं चन्द्रप्रभ जिनेन्द्र!अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं !

ॐ ह्रीं चन्द्रप्रभ जिनेन्द्र!अत्र तिष्ठ: तिष्ठ: ठ:ठ: स्थापनं

ॐ ह्रीं चन्द्रप्रभ जिनेन्द्र!अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्!सन्निधिकरणं !

गंगाह्रद निर्मल नीर,हाटक भृंगभरा!तुम चरन जजों वर वीर,मेटो जनम जरा !!

श्री चन्दनाथ दुति चंद,चरनन चंद लगे!मनवचतन जजत अमंद आतम जोति जगे !!

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्य विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा !

शब्दार्थ -

गंगाह्रद-गंगानदी का,निर्मल-स्वच्छ,नीर-जल,हाटक-स्वर्ण,भृंगभरा-घड़े में भरकर,तुम-आपके,चरन-चरणों की, जजों-पूजा,वर-श्रेष्ठ,वीर-वीर,मेटो-मेट/नष्ट कर दीजिये,जनम-जन्म,जरा-बुढ़ापे !

श्री चन्दनाथ-श्री चन्द्रप्रभ भगवान् की,दुति-कांति,चंद-चंद्रमा के सामान है,चरनन-चरणों में,चंद-चंद्रमा का चिन्ह,लगे-लगा है,मनवचतन-मन,वचन,काय से,जजत-पूजा करता हूँ,अमंद-अच्छे/शुद्ध भावों से,आतम-आत्मा की,जोति-ज्योति,जगे-जागृत हो जाए!

अर्थ-गंगा नदी का स्वच्छ जल स्वर्ण घड़े में भरकर हे श्रेष्ठ वीर!मैं आपके चरणों की पूजा करता हूँ!आप मेरे जन्म और बुढ़ापे को नष्ट कर दीजिये !श्री चन्द्र प्रभ भगवान् की चंद्रमा के समान कांति है ,उनके चरणों में चंद्रमा का चिन्ह है,ऐसे चन्द्र प्रभ भगवान् की मैं मन वचन काय और अच्छे/शुद्ध भावों से अपनी आत्मा का प्रकाश जागृत करने के लिये/आत्मा के भान के लिए पूजा करता हूँ

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय जन्म,जरा,मृत्य विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा !

श्री खण्ड कपूर सुचंग,केशर रंग भरी!घसि प्रासुक जल के संग,भव आताप हरी!श्री---!!

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा

पूजा अर्थ सहित

आभार -पंडित रत्न लाल जैन बैनाड़ा जी

शब्दार्थ -श्रीखण्ड-चंदन,सुचंग-श्रेष्ठ,

अर्थ-

मैं चंदन और श्रेष्ठ कपूर लेकर केशर के रंग में भर कर प्रासुक जल में घिस कर आपको,अपने संसार के दुखों के निवारण हेतु,अर्पित करता हूँ!श्री चन्द्र प्रभ भगवान् की चंद्रमा के समान कांति है ,उनके चरणों में चंद्रमा का चिन्ह है,ऐसे चन्द्र प्रभ भगवान् की मैं मन वचन काय और अच्छे/शुद्ध भावों से अपनी आत्मा का प्रकाश जागृत करने के लिये/आत्मा के भान के लिए पूजा करता हूँ

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा !

तंदुल सित सोम समान सोले अनियारे!दिय पुंज मनोहर आन,तुम पदतर प्यारे !!श्री!!

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा !

शब्दार्थ-सित-सफ़ेद,सोम-चंद्रमा,अनियारे-साबुत,पदतर-चरणों

अर्थ- चद्रमा के समान सफ़ेद शाली वन के साबुत चावलों के मनोहर पुंज लेकर आपके पूजनीय चरणों में अक्षय पद की प्राप्ति के लिए रख रहा हूँ!

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा !

सुर द्रुम के सुमन सुरंग,सुगंधित अली आवे !तासों पद पूजत चंग ,काम बिथा जावे !!श्री !!

शब्दार्थ-सुर द्रुम-देवताओं के वृक्ष अर्थात कल्पवृक्ष से,सुमन-फूल,सुरंग-अच्छे रंग के,सुगन्धित-अच्छी गंध पर,अलि -भवरे आ रहे है,तासों-आपके,चंग-उत्साह पूर्वक, काम बिथा -काम वासना ,जावे-नष्ट करने के लिए

अर्थ-मैं देवताओं के वृक्षों अर्थात कल्पवृक्ष से अच्छे रंगो के सुगन्धित फूलों से,जिनपर भवरे मंडरा रहे है,आपके चरणों को उत्साहपूर्वक कामवासना को नष्ट करने के लिए पूजता हूँ!श्री चन्द्र प्रभ भगवान् की चंद्रमा के समान कांति है ,उनके चरणों में चंद्रमा का चिन्ह है,ऐसे चन्द्र प्रभ भगवान् की मैं मन वचन काय और अच्छे/शुद्ध भावों से अपनी आत्मा का प्रकाश जागृत करने के लिये/आत्मा के भान के लिए पूजा करता हूँ

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा!

नेवज नाना परकार इन्द्रिय बलकारी!सो लै पद पूजों सार,आकुलता हारी!!श्री !

शब्दार्थ -बलकारी-शक्ति प्रदान करने वाले,सार-श्रेष्ठ,आकुलता हारी -क्षुधा की वेदना नष्ट हो जाए

पूजा अर्थ सहित

आभार -पंडित रत्न लाल जैन बैनाड़ा जी

अर्थ-भिन्न भिन्न प्रकार के इंद्रियों को शक्ति प्रदान करने वाले नेवज लेकर आपके श्रेष्ठ चरणो की पूजा करता हूँ !जिससे मेरी क्षुधा की वेदना नष्ट हो जाए !श्री चन्द्र प्रभ भगवान् की चंद्रमा के समान कांति है ,उनके चरणों में चंद्रमा का चिन्ह है,ऐसे चन्द्र प्रभ भगवान् की मैं मन वचन काय और अच्छे/शुद्ध भावों से अपनी आत्मा का प्रकाश जागृत करने के लिये/आत्मा के भान के लिए पूजा करता हूँ

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्य निर्वपामीति स्वाहा!

तम भंजन दीप संवार,तुम ढिग धारतु हो!मम तिमिरमोह निरवार,यह गुण धारतु हों श्री!!

शब्दार्थ-तम-अन्धकार,भंजन-नष्ट करने के लिए,दीप संवार-दीप को प्रज्ज्वलित कर,तुम-आपके,ढिग-समक्ष,धारतु-रखता हूँ,मम-मेरे,तिमिरमोह-मोह रुपी अन्धकार को,निरवार--दूर कर दो.यह गुण धारतु हों-यह गुण आप में है

अर्थ-अन्धकार को नष्ट करने के लिए,दीप को प्रज्ज्वलित करके,आपके समक्ष अपने मोह रुपी अन्धकार को दूर करने के लिए,रखता हूँ क्योकि आपमे यह गुण है (इसलिए मेरा मोह अन्धकार दूर कर दीजिये!श्री चन्द्र प्रभ भगवान् की चंद्रमा के समान कांति है ,उनके चरणों में चंद्रमा का चिन्ह है,ऐसे चन्द्र प्रभ भगवान् की मैं मन वचन काय और अच्छे/शुद्ध भावों से अपनी आत्मा का प्रकाश जागृत करने के लिये/आत्मा के भान के लिए पूजा करता हूँ

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा!

दशगंध हुताशन माहिं,हे प्रभु खेवतु हों!मम करम दुष्ट जरि जाहिं,यातैं सेवतु हों!!श्री!!

शब्दार्थ-दशगंध-दस प्रकार के सुगन्धित पदार्थो से धुप बनाई है,हुताशन-अग्नि में,माहिं-मैं,हे प्रभु खेवतु-खेता, हों-हूँ,!मम-मेरे करम- कर्म, दुष्ट -दुष्ट, जरि -जल ,जाहिं-जाये,यातैं-इसलिए,सेवतु-पूजा, हों-करता हूँ !

अर्थ-मैं दस प्रकार के सुगन्धित पदार्थो से धुप बना कर,दुष्ट कर्म को जलाने के लिए. अग्नि में खेकर आप की प्रभु सेवा/पूजा कर रहा हूँ! श्री चन्द्र प्रभ भगवान् की चंद्रमा के समान कांति है ,उनके चरणों में चंद्रमा का चिन्ह है,ऐसे चन्द्र प्रभ भगवान् की मैं मन वचन काय और अच्छे/शुद्ध भावों से अपनी आत्मा का प्रकाश जागृत करने के लिये/आत्मा के भान के लिए पूजा करता हूँ

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा!

अति उत्तम फल सुमंगाय,तुम गुण गावतु हौं!पूजों तनमन हरषाय,विघन नशावतु हौं !!श्री !!

शब्दार्थ-अति उत्तम-सर्वोत्तम,विघन नशावतु हौं-विघ्नो को नष्ट करने वाले हैं

अर्थ-मै सर्वोत्तम फलो को मंगाकर आपके गुणो को गाता हूँ,तन मन से हर्षित होकर आपकी मैं पूजा करता हूँ क्योकि आप विघ्नो को नष्ट करने वाले हैं!श्री चन्द्र प्रभ भगवान् की चंद्रमा के समान कांति है

पूजा अर्थ सहित

आभार -पंडित रत्न लाल जैन बैनाड़ा जी

,उनके चरणों में चंद्रमा का चिन्ह है,ऐसे चन्द्र प्रभ भगवान् की मैं मन वचन काय और अच्छे/शुद्ध भावों से अपनी आत्मा का प्रकाश जागृत करने के लिये/आत्मा के भान के लिए पूजा करता हूँ

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय मोक्ष फल पद प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा!

सजी आठों दरब पुनीत,आठों अंग नमों!पूजों अष्टम जिन मीत,अष्टम अवनी गमों !!श्री!!

शब्दार्थ-सजी-सजाकर,आठों दरब-आठों द्रव्यों,पुनीत-पवित्र,आठों अंग नमों-आठों अंगों को नमस्कार करता हूँ!पूजों-पूजा करता हूँ,अष्टम-आठवे,जिन-जिनेन्द्रभगवान्,मीत-हितकारी,अष्टम अवनी-आठवी पृथिवी, अर्थात मोक्ष गमों-जाने के लिए!

अर्थ-आठों पवित्र द्रव्यों को सजाकर,आठों अंगो को झुक कर नमस्कार करता हुआ।आठवे हितकारी जिनेन्द्र भगवान्चन्द्रप्रभ की बारम्बार,आठवी पृथ्वी (मोक्ष) पर जाने के लिए,पूजा करता हूँ !श्री चन्द्र प्रभ भगवान् की चंद्रमा के समान कांति है,उनके चरणों में चंद्रमा का चिन्ह है,ऐसे चन्द्र प्रभ भगवान् की मैं मन,वचन,काय और अच्छे/शुद्ध भावों से अपनी आत्मा का प्रकाश जागृत करने के लिये/आत्मा के भान के लिए पूजा करता हूँ

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा!

पञ्च कल्याणक अर्घ

कलि पंचम चैत सुहात अलि,गरभागम मंगलमोद भरी!

हरि हर्षित पूजत मातु पिता,हम ध्यावत पावत शर्मसिता!!

शब्दार्थ-कलि-वदी(कृष्णपक्ष),सुहात-अच्छी लगती है।अलि-बहुत,गरभागम-गर्भ में पधारे थे,मोद भरी- प्रसन्नता प्रदान करी थी,शर्मसिता-पवित्र सुख को,हरि-इंद्र ने

अर्थ-चैत्र की वदी पंचमी बहुत अच्छी लगती है क्योकि इस दिन आप गर्भ में पधारे थे और आपने जीवों को मंगल एवं प्रसन्नता प्रदान करी थी इंद्र ने हर्षित होकर माता पिता की पूजा करी थी!हम आपका ध्यान करके पवित्र सुख को प्राप्त करते है ! ,

ॐ ह्रीं चैत्र कृष्णापंचम्यां गर्भमंगल मंडिताय (सम्मेद शिखरजी की तेरह पंथी कोठी में विराजमान) श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामित स्वाहा!

कलि पौष इकादशि जन्म लयो,तब लोक विषे सुखथोक भयो !

सुर ईश जजें गिरशीश तबै ,हम पूजत हैं नित शीश अबै !!

पूजा अर्थ सहित

आभार -पंडित रत्न लाल जैन बैनाड़ा जी

शब्दार्थ-कलि-वदी(कृष्णपक्ष),सुखथोक-पूर्णसुख,सुर ईश-देवों के ईश्वर अर्थात इंद्र,जजें-पूजा,गिरशीश-समेरु पर्वत पर ले जाकर,तबै-तब करी थी,नित-नित्य,अबै-अब

अर्थ-भगवान् आपने पौष वदी (कृष्ण)एकादशी को जन्म लिया था उस समय समस्त लोक पूर्णतया सुखी हो गया था !तब इंद्र ने आपकी समेरू पर्वत पर ले जाकर पूजा करी थी! हम यहाँ अब आपकी मस्तक झुका कर नित्य पूजा करते हैं

ॐ ह्रीं पौष कृषणैकादश्यां जन्म मंगल प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामित स्वाहा!

तप दुद्धर श्रीधर आप धरा,कलि पौष ग्यारसि पर्व वरा !

निज ध्यान विषैं लवलीन भये,धनि सो दिन पूजत विघ्न गये !!

शब्दार्थ-दुद्धर-कठिन,धारा-धारण किया,कलि-वदी(कृष्णपक्ष),पर्व वरा -श्रेष्ठ पर्व ,धनि -करते है

अर्थ-आपने पौष कृष्ण(वदि)एकादशी श्रेष्ठ पर्व के दिन अत्यंत दुर्लभ और महान तप को धारण किया (आपका तप कल्याणक हुआ),आप अपनी आत्मा के ध्यान में लवलीन हो गए जो इस दिन कि पूजा करते है उनके विघ्न नष्ट हो जाते है!

ॐह्रीं पौष कृषणैकादश्यां तपो मंगल मंडिताय (राम टेक में विराजमान)श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपा मिति स्वाहा!

वर केवलभानु उद्योत कियो,तिहुँ लोक तणों भ्रम मेट दियो!

कलि फाल्गुन सप्तमि इंद्र जजे,हम पूजहिं सर्व कलंक भजे !!

शब्दार्थ-वर-भगवन,भानु-सूर्य उद्योत-प्रकट,कियो-किया,तिहुँ -तीनों,तणों-आपने,लोक-लोक के प्राणियों का, भ्रम- मिथ्यात्व ,कलि -वदी (कृष्ण) कलंक-कर्म कलंक

अर्थ- हे भगवन् आपने केवल ज्ञान रुपी सूर्य को प्रकट किया था !तीनों लोक के जीवों का मिथ्यात्व मेट दिया था फाल्गुन कृष्ण सप्तमि के दिन इंद्र ने आपकी पूजा करी थी !हम भी आपकी पूजा करते है जिससे सभी कर्म कलंक नष्ट हो जाए !

ॐ ह्रीं फाल्गुन कृष्ण सप्तम्यां ज्ञान मंगल मंडिताय (पावा जीमें विराजमान) श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामित स्वाहा!

सित फाल्गुन सप्तमि मुक्ति गये,गुणवंत अनंत अबाध भये!

हरि आय जजें तित मोद धरे,हम पूजत ही सब पाप हरे !!

पूजा अर्थ सहित

आभार -पंडित रत्न लाल जैन बैनाड़ा जी

शब्दार्थ-सित-सुदी (शुक्लपक्ष),गुणवंत अनंत-अन्नत गुणों सहित,अबाध-बाधा रहित,भये-हो गए

हरि-इंद्र ने,जजें-पूजा करी थी,तित-आपकी,मोद-प्रसन्न होकर ,हरे-नष्ट हो जाए

अर्थ-भगवन आप फाल्गुन शुक्ल सप्तमि को मोक्ष पधारे,आप अनंतगुणों सहित, बाधा रहित हो गए!इंद्र ने आकर अत्यंत प्रसन्नता पूर्वक आपकी पूजा करी थी!हम भी समस्त पापों को हरने के लिए आपकी पूजा करते है !

ॐह्रीं फाल्गुन शुक्ल सप्तम्यां मोक्ष पद मंडिताय (श्री सम्मेद शिखर जी की टोंग से) श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामित स्वाहा!

जयमाला

हे मृगांक अंकित चरण, तुम गुण अगम अपार |गणधर से नहिं पार लहिं,तौ को वरनत सार |1|

शब्दार्थ-मृगांक-चंद्रमा,अगम-अवरणीय,अपार-अथाह,पार-थाह,तौ-तो,को-कौन,वरनत-का वर्णन, सार-श्रेष्ठता

अर्थ-हे चन्द्रप्रभ भगवान्!आपके चरणों में चंद्रमा का चिन्ह अंकित है आपके अनन्त गुण अवर्णीय अथाह है,गणधर देव भी उनकी थाह नहीं प्राप्त कर सकते तो कौन उनकी श्रेष्ठता का वर्णन कर सकता है !

पै तुम भगति मम हिये, प्रेरे अति उमगाय |तातैं गाऊँ सुगुण तुम, तुम ही होउ सहाय |2|

शब्दार्थ-पै-फिर भी,हिये-हृदय में,प्रेरे-प्रेरित कर,अति-अत्यंत ,उमगाय -उत्साहित कर रही है ,तातैं-इसलिए , गाऊँ-गाता हूँ, सुगुण-अच्छे गुणों, तुम-आपके,तुम ही-आप ही ,होउ -कीजिये ,सहाय-सहायता

अर्थ-फिर भी मेरे हृदय में आपकी भक्ति मुझे प्रेरित करके अत्यंत उत्साहित कर रही है इसलिए आपके गुणों का गान करता हूँ,इसमें आप ही मेरी सहायता कीजिये(इतनी शक्ति प्रदान कीजिये की आपके गुणानुवाद कर सकूँ

छन्द पद्धरी (16 मात्रा)

जय चंद्र जिनेंद्र दयानिधान, भव कानन हानन दव प्रमाण |

जय गरभ जनम मंगल दिनन्द,भवि-जीव विकाशन शर्मकन्द |3|

शब्दार्थ-दया निदान-दया के भण्डार,कानन-जंगल,हान्न-नष्ट करने के लिए ,दव-दावानल,दिनन्द-सूर्य,

पूजा अर्थ सहित

आभार -पंडित रत्न लाल जैन बैनाड़ा जी

गर्भ जन्म मंगल -गर्भ और जन्म कल्याणक हुआ था,भवि-जीव-भव्य जीवों के,विकाशन-विकसित करने के लिए,शर्मकन्द-सुख को उत्पन्न करने वाले हो

अर्थ-हे चंद्रप्रभ भगवान् आपकी जय हो!आप दया के भण्डार है,संसार रुपी जंगल को नष्ट करने के लिए दावानल के समान है,आपका गर्भ और जन्म कल्याणक हुआ था,आपकी जय हो,भव्यजीव रुपी कमलों के हृदय को विकसित करने के लिए आप सूर्य के समान है और सुख को उत्पन्न करने वाले हो !

दशलक्ष पूर्व की आयु पाय, मनवांछित सुख भोगे जिनाय |

लखि कारण ह्वै जगतैं उदास, चिंत्यो अनुप्रेक्षा सुख निवास |4|

शब्दार्थ-लखि -देखकर,जिनाय-भगवन,चिंत्यो-चिंतन किया,अनुप्रेक्षा-बारह भावनाओं का,निवास-स्थानों

अर्थ-भगवन आपने दस लाख पूर्व की आयु प्राप्त करी जिस के गृहस्थ अवस्था में मन वांछित सुखों को भोगो था!कुछ कारणवश आप संसार से उदासीन होकर,सुख के स्थानों;बारह अनुप्रेक्षाओं(भावनाओं)का चिंतवन करने लगे !

तित लोकांतिक बोध्यो नियोग, हरि शिविका सजि धरियो अभोग |

तापै तुम चढ़ि जिनचंदराय, ताछिन की शोभा को कहाय |5|

शब्दार्थ- तित-वहाँ ,बोध्यो नियोग-वैराग्य की अनुमोदना करने के लिए अपने नियोग के अनुसार आये ,

शिविका-पालकी ,तापै -उस पर ,जिन चंदराय -चन्द्र प्रभ भगवान् ,ताछिन -उस समय की ,

अर्थ-लौकान्तिक देव अपने नियोग के अनुसार उनके वैराग्य की अनुमोदना के लिए आये !इंद्र ने पालकी सजा कर रखी!चन्द्र प्रभु भगवान् !उस पर चढ़ कर आप तप धारण करने के लिए जंगल की ओर बढ़े ,उस समय की शोभा का वर्णन करने में कौन समर्थ है !!

जिन अंग सेत सित चमर ढार, सित छत्र शीस गल गुलक हार |

सित रतन जड़ित भूषण विचित्र, सित चन्द्र चरण चरचें पवित्र |6|

शब्दार्थ-अंग सेत-शरीर-श्वेत,सित-श्वेत,गुलक हार-सुन्दर हार

अर्थ-जिनेन्द्र भगवान् का शरीर श्वेत चंद्रमा के समान था,उन के ऊपर सफ़ेद चॅवर ढोरे जा रहे थे,सिर के ऊपर भी सफ़ेद छत्र थे,गले में सुंदर, श्वेत रत्नों से जड़ित हार था ,भिन्न भिन्न आभूषण भी पहने हुए थे ऐसे श्वेत पवित्र चरणों वाले चन्द्र प्रभ भगवान् की हम अर्चना /पूजा करते है !

सित तनद्युति नाकाधीश आप, सित शिविका कांधे धरि सुचाप |

पूजा अर्थ सहित

आभार -पंडित रत्न लाल जैन बैनाड़ा जी

सित सुजस सुरेश नरेश सर्व, सित चित्त में चिंतत जात पर्व |7|

शब्दार्थ -नाकाधीश-देवताओं के स्वामी,सुचाप-धनुषाकार,शिविका-पालकी,सुजस- यश;(गुण)

अर्थ-आपके शरीर की कांति सफ़ेद है आप देवताओं के स्वामी है,आपकी श्वेत धनुषाकार पालकी को इंद्र और देव कंधे पर रख कर ले जाते है!उस जलूस में सभी सुरेश नरेश आपके यश (गुणों)का चिंतवन करते हुए जाते है !

सित चंद्र नगर तें निकसि नाथ,सित वन में पहुचे सकल साथ |

सित शिला शिरोमणि स्वच्छ छाँह,सित तप तित धार्यो तुम जिनाह |8|

शब्दार्थ-सकल-सबके साथ,शिरोमणि-श्रेष्ठ

अर्थ-भगवन आप चन्द्र नगर से निकलकर वन में सब के साथ पहुंचे!वहाँ श्वेत,स्वच्छ और श्रेष्ठ शिला पर आपने तप धारण किया अर्थात सारे वस्त्र ,आभूषण त्याग कर आपने निर्ग्रन्थ मुनि दीक्षा धारण करी !

सित पय को पारण परम सार,सित चंद्रदत्त दीनों उदार |

सित कर में सो पय धार देत, मानो बांधत भवसिंधु सेत |9|

शब्दार्थ-सित पय-सफ़ेद दूध,पारण-पारणा,भवसिंधु-संसार सागर पर,सेत-पुल

अर्थ-आपकी श्वेत दूध की श्रेष्टम रसीली पारणा उदार सेठ चन्द्रदत्त द्वारा हुई!आपके श्वेत हाथों में वे दूध की धार देते थे ,ऐसा लग रहा था जैसे संसार सागर पर पुल ही बांध रहे हो!अर्थात संसार सागर को पार करने के लिए वह दान ऐसा था जैसे उन्होंने संसार सागर के ऊपर पुल बाँध लिया और उसको शीघ्र ही उसे पार करने का अवसर मिलेगा !

मानो सुपुण्य धारा प्रतच्छ, तित अचरज पन सुर किय ततच्छ |

फिर जाय गहन सित तप करंत, सित केवल ज्योति जग्यो अनन्त |10|

शब्दार्थ-अचरज-आश्चर्य,पन-पांच,तित-वहाँ,सुर-देवताओं ने,ततच्छ -उसी क्षण,जग्यो-प्राप्त/उत्पन्न किया

अर्थ-आपके हाथ में दूध की धारा प्रत्यक्ष पुण्य की धारा बहती हुई लग रही थी!वहाँ पर देवताओं ने उसी क्षण पञ्चाशचर्य(१-रत्नवर्षा,पुष्पवर्षा,मंदसुगंध,बयार,भिन्न भिन्न बाजे बजना,अबोध-आनंद अबोध आनंद का उच्चारण करना)किए !फिर आप गहन तप करने के लिए चले गए जिसके द्वारा आपने अनंत केवलज्ञान रुपी ज्योति को प्राप्त किया (अर्थात आपने घातिया कर्मों का क्षय करके केवल ज्ञान प्राप्त किया)

पूजा अर्थ सहित

आभार -पंडित रत्न लाल जैन बैनाड़ा जी

लहि सनवसरन रचना महान,जा के देखत सब पाप हान |

जहँ तरु अशोक शोभै उतंग, सब शोक तनो चूरै प्रसंग |11|

शब्दार्थ-तरु-वृक्ष,उतंग-ऊँचा,तनो -के,चूरै-नष्ट कर रहा था

अर्थ-केवलज्ञान प्राप्त करते ही आपने समवशरण विभूति प्राप्त करी अर्थात इंद्र ने कुबेर को भेजकर महान समवशरण की रचना करवाई!जिसको देखते ही सब पाप नष्ट हो जाते है (इन्द्रभूति गौतम स्वामी को भगवान महावीर स्वामी के समवशरण में मानस्तम्भ को देखते ही सम्यग्दर्शन हो गया था)!वहाँ ऊँचा अशोक वृक्ष शोभित हो रहा था जो कि समस्त शोक के प्रसंगो को नष्ट कर रहा था(अशोक वृक्ष की गुणवत्ता है कि जहाँ वह होता है वहाँ कोई शोक का प्रसंग नहीं आता इसलिए समवशरण में बैठे किसी भी जीव को शोक नहीं होता है)

सुर सुमन वृष्टि नभ तें सुहात, मनु मन्मथ तजि हथियार जात |

बानी जिनमुख सों खिरत सार, मनु तत्व प्रकाशन मुकुर धार |12|

अर्थ-वहाँ ,देवता (नभ)आकाश से सुगन्धित सुहावने पुष्पों की वृष्टि (वर्षा)करते है,ऐसा लगता है मानो (मन्मथ)कामदेव अपने हथियारों को छोड़ कर भाग रहा हो!(क्योकि पुष्प कामदेव के बाण माने जाते है)!भगवन के मुख से वहाँ श्रेष्ठ वाणी;दिव्यध्वनि खिरती है जो कि मानो तत्वों के प्रकाशन के लिए साक्षत (मुकुर धार) दर्पणमय है!(जैसे दर्पण में सब स्पष्ट दीखता है उसी प्रकार आप की दिव्यध्वनि खिरने से महान मिथ्यात्व नष्ट हो जाता है और तत्वों का स्पष्ट श्रद्धान ज्ञान हो जाता है) !

जहँ चौंसठ चमर अमर ढुरंत, मनु सुजस मेघ झरि लगिय तंत |

सिंहासन है जहँ कमल जुक्त, मनु शिव सरवर को कमल शुक्ल |13|

अर्थ-जहाँ चौसठ चँवर (अमर) देव निरंतर ढोरते है,ऐसा लगता है मानो आपके यश की(झरि)वर्षा मेघो द्वारा हो रही हो ,गंध कुटी के ऊपर सिंहासन है,जिस पर कमल है!यह कमल, मोक्षरूपी सरोवर का ही श्वेतकमल लग रहा है !

दुंदुभि जित बाजत मधुर सार, मनु करमजीत को है नगार |

शिर छत्र फिरै त्रय श्वेत वर्ण, मनु रतन तीन त्रय ताप हर्ण |14|

अर्थ-(जित) जहाँ मधुर सुरों में दुंदभि बज रही है,ऐसा लग रहा है मानो कर्मो को जीतने का नगाड़ा बज रहा हो!आपके सिर के ऊपर तीन छत्र, श्वेत वर्ण के फिर रहे है,मानो ये तीन रत्नो(रत्नत्रय)के देने वाले और तीन प्रकार के ताप अर्थात जन्म जरा मृत्यु को हरने वाले हो!

तन प्रभा तनो मंडल सुहात, भवि देखत निज भव सात सात |

पूजा अर्थ सहित

आभार -पंडित रत्न लाल जैन बैनाड़ा जी

मनु दर्पण द्युति यह जगमगाय, भविजन भव मुख देखत सु आय |15|

अर्थ-आपके शरीर की प्रभा का जो सुहावना मंडल है उसमे भव्य जीव अपने अपने सात-सात(तीन भूत,तीन भविष्य के और १ वर्त्तमान)भव देखते है !जैसे वे दर्पण में अपना मुख स्पष्ट देख कर आते है !

इत्यादि विभूति अनेक जान, बाहिज दीसत महिमा महान |

ता को वरणत नहिं लहत पार, तो अंतरंग को कहै सार |16|

अर्थ-इन अनेक विभूतियों को देखकर आपकी बाह्य महिमा का वर्णन करना कठिन है फिर अंतरंग महिमा का वर्णन कौन कर सकता है!

अनंत गुणनिजुत करि विहार, धरमोपदेश दे भव्य तार |

फिर जोग निरोध अघातिहान, सम्मेदथकी लिय मुकतिथान |17|

अर्थ-भगवान् आपने अपने अनंत गुणों सहित विहार किया है और भव्य जीवों को संसार से पार लगने का उपदेश दिया !फिर योग निरोध अर्थात मन वचन काय तीनों योगो का निरोध करके ,चार अघातिया कर्मों को नष्ट करके सम्मेद शिखर पर्वत से मोक्ष प्राप्त कर लिया !

'वृन्दावन' वंदत शीश नाय,तुम जानत हो मम उर जु भाय |

ता तें का कहौं सु बार बार, मनवांछित कारज सार सार |18|

अर्थ-वृदावन कवि शीश नवकार बारम्बार प्रभु की वंदना करते है !आप सब जानते हो कि मेरे हृदय में क्या है!उसे मैं बार बार क्या कहूं,मेरे मन की इच्छा,(सार सार) श्रेष्ठ मोक्ष की प्राप्ति (कारज) करवा दीजिये

छन्दः घत्तानन्द

जय चंद जिनंदा, आनंदकंदा, भव भय भंजन राजैं हैं |

रागादिक द्वंदा, हरि सब फंदा, मुकति मांहि थिति साजैं हैं |19|

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेद्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा |

पूजा अर्थ सहित

आभार -पंडित रत्न लाल जैन बैनाड़ा जी

अर्थ जिनेन्द्र चन्द्र प्रभ आपकी जय हो !आप आनंद के समूह है,संसार के भय को नष्ट करने वाले है , रागादि द्वंदोके फंदो को हरने वाले हैं , आप मोक्ष में भली प्रकार विराजमान है !
ॐह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेद्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा |

आठों दरब मिलाय गाय गुण, जो भविजन जिनचंद जजें |

ता के भव-भव के अघ भाजें, मुक्तिसार सुख ताहि सजें ||

जम के त्रास मिटें सब ताके, सकल अमंगल दूर भजें |

'वृन्दावन' ऐसो लखि पूजत, जातें शिवपुरि राज रजें ||

अर्थ-जो भव्य जीव आठों द्रव्यों को लेकर चन्द्र प्रभ भगवान् की पूजा करते है उनके भव भव के (अघ)पाप नष्ट हो जाते है और मुक्ति सुख की प्राप्ति होती है !जन्म के(त्रास) दुःख मिट जाते है,समस्त अमंगल दूर हो जाते है

वृंदावन कवि ये देखकर,पूजा करते है जिस से मोक्ष सुख की प्राप्ति हो सके !

इत्याशीर्वादः (पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

Permalink

http://jainisimusa.blogspot.com/2014/01/blog-post_24.html

उक्त लिंक पर भी आप यह पूजन अर्थ सहित कर सकते हैं

राकेश कुमा जैन

भाद्रपद शुक्ल तृतीया,वीर संवत २५४०

२८-८-१४

आभार -पंडित रत्न लाल जैन बैनाड़ा जी

माघ कृष्ण दशमी ,२५४०

२६ १,१४

आभार -पंडित रत्न लाल जैन बैनाड़ा जी

5. श्री शांतिनाथ जिन पूजा

(श्री बख्तावर सिंह कृत)

प्रिय सहधर्मी बुजुर्गों,भाइयों बहिनो,बच्चो !

जैजिनेंद्र देवकी!

पञ्च परमेष्ठी भगवंतों की जय

विश्व धर्म 'शाश्वत जैन धर्म की जय !

संत श्रोमणि विद्यासागर महाराज जय !

षष्टम पट्टाचार्य श्री ज्ञानसागर महाराज जय!

आपके उत्साहपूर्वक दर्शन,अभिषेक,पूजादि की श्रंखला में मंगलाष्टक,दर्शन,पूजन,अभिषेक विधि के पश्चात आचर्य माघ नन्दि द्वारा विरचित),विनयपाठ,पूजापीठिका,चत्तरि दण्डक,पञ्चकल्याणकअर्घ,पूजाप्रतिज्ञापाठ, परमऋषि स्वस्तिमंगलपाठ,देव,शास्त्र,गुरु की सम्मुचय पूजा,देव,शास्त्र, गुरु की पूजा (आचर्य माघनन्दी) के, 'नवदेवता की पूजा',पंच परमेष्ठी,"समुच्च्य चौबीसी पूजा ",भगवान आदिनाथ जी,चन्द्रप्रभ भगवान की पूजन के अर्थ एवं भावों सहित प्रस्तुति के बाद, इसी क्रम में आगे' श्री शांतिनाथ जिन की पूजन का अर्थ एवं भावों सहित आरम्भ करते है

श्री शांतिनाथ जिन पूजा

सर्वार्थ सुविमान त्याग गजपुर में आये !

विश्वसेन भूपाल तासु के नन्द कहाये !!

पंचम चक्री भय मदन द्वादश में राजे!

मैं सेवूं तुम चारण तिष्ठाये ज्यों दु:ख भाजे !!

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्र !अत्र अवतर अवतर संवौंषट्!आवाहननं)

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्र !अत्र तिष्ठ:तिष्ठ:ठ:ठ:(स्थापनं)

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्र !अत्र मम सन्निहितो भवभव वषट् (सन्निधिकरणं)

शब्दार्थ -गजपुर-हस्तिनापुर भूपाल-राजा,नन्द-पुत्र,मदन-कामदेव,द्वादश-बारहवे,सेवूं-सेवा/ पूजा, भाजे-दूर/नष्ट हो जाए

अर्थ-आप सर्वार्थसिद्धि विमान को छोड़कर हस्तिनापुर में पधारे थे !विश्वसेन राजा के पुत्र कहलाये थे !

आप पाचवे चक्रवर्ती हुए और बारहवे कामदेव हुए !मैं आपके चरणों की सेवा करता हूँ ,आप मेरे हृदय में पधारिये जिससे मेरे समस्त सांसारिक दु:ख दूर हो जाए !

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्र !अत्र अवतर अवतर संवौंषट्!आवाहननं)

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्र !अत्र तिष्ठ:तिष्ठ:ठ:ठ:(स्थापनं)

पूजा अर्थ सहित

आभार -पंडित रत्न लाल जैन बैनाड़ा जी

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथजिनेन्द्र !अत्र मम सन्निहितो भवभव वषट् (सन्निधिकरणं)

पंचम उदधि तनो जल निर्मल कंचन कलश भरे हरषाय!

धार देत ही श्री जिन सन्मुख जन्मजरामृत दूर भगाय!!

शांतिनाथ पंचम चक्रेश्वर द्वादश मदन तनो पद पाये!

तिन के चरण कमल के पूजे रोगशोकदुःख दारिद जाय!!

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ! !

शब्दार्थ-पंचम उदधि-पाचवे समुद्र /क्षीरसागर,तनो-से,हरषाय-प्रसन्नता पूर्वक,मदन-कामदेव,तिन-इनके !

अर्थ-पांचवे समुद्र/क्षीर सागर के निर्मल जल को सोने के कलश में लेकर,अत्यंत प्रसन्नता पूर्वक श्री जी के सम्मुख धार देने से जन्म,जरा और मृत्यु नष्ट हो जाते है!शांतिनाथ भगवान्,आपने पांचवे चक्रवर्ती, बारहवे कामदेव का पद पाया!आपके चरण कमलों की पूजा करने से रोग,शोक,दुःख और दारिद्रता नष्ट हो जाते है !

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा !

मलियागिरि चंदन कदलीनंदन कुंकुम जल के संग घसाय!

भव आताप विनाशन कारण चरचूं चरण सबै सुखदाय!!

शांतिनाथ पंचम चक्रेश्वर द्वादश मदन तनो पद पाये!

तिन के चरण कमल के पूजे रोगशोकदुःख दारिद जाय!!

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा !

शब्दार्थ-कदली नंदन-कपूर,

अर्थ-

मैं मलियागिरि का उत्कृष्ट चंदन,कपूर,कुंकुम को जल के साथ घिसकर,भव भव के समस्त दुखों को नष्ट करने के लिए लेकर आपके चरणों की पूजा करता हूँ जो कि सब सुख देने वाली है! शांतिनाथ भगवान् जी आप पांचवे चक्रवर्ती,बारहवे कामदेव का पद पाया था!आप के चरण कमलों की पूजा करने से रोग,शोक,दुःख और दारिद्रता नष्ट हो जाते है !

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा !

पुण्यराशि सम उज्जवल अक्षत शशिमारीचि तसु देख लजाय !

पुंज किये तुम चरणन आगे अक्षय पद के हेतु बनाये !!शांति!!

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा !

शब्दार्थ -पुण्य राशि-सफ़ेद स्पष्ट होती है ,शशिमारीचि-चंद्रमा की किरणे ,

अर्थ -

मैं,पुण्यराशि के समान स्वच्छ अक्षत के पुंजो को जिन्हे देख कर चंद्रमा की किरणे भी लज्जित हो जाती है,मोक्ष पद की प्राप्ति के लिए,आपके चरणों के समक्ष अर्पित कर रहा हूँ!शांतिनाथ भगवान जी,आपने ५वे चक्रवर्ती,१२वे कामदेव का पद पाया!आप के चरण कमलों की पूजा करने से रोग,शोक,दुःख और दारिद्रता नष्ट हो जाते है !

पूजा अर्थ सहित

आभार -पंडित रत्न लाल जैन बैनाड़ा जी

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा !
सुर पुनीत अथवा अवनी के कुसुम मनोहर लिय मंगाय !
भैंट धरत तुम चरणन के ढिंग ततक्षिन कामबाण नस जाय !!शांति!!

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा !
शब्दार्थ-सुर-देवो द्वारा,पुनीत-पवित्र,अवनी-पृथ्वी,कुसुम-पुष्प,भेट-अर्पित
अर्थ -मैं देवों द्वारा लाये गये पवित्र (कल्पवृक्ष के) अथवा पृथ्वी/मध्यलोक के मनोहर पुष्प को मंगाकर,आप के चरणों के समक्ष अर्पित कर रहा हूँ जिससे तुरंत कामवासना नष्ट हो जाए!शांतिनाथ भगवान जी,आपने ५वे चक्रवर्ती,बारहवे कामदेव का पद पाया!आप के चरण कमलों की पूजा करने से रोग,शोक,दुःख और दारिद्रता नष्ट हो जाते है!

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा !
भाँति भाँति के सद्य मनोहर कीने मैं पकवान संवार !
भर थारी तुम सम्मुख लायो क्षुधा वेदनी वेग निवार !!शांति!!
ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्य निर्वपामीति स्वाहा !
शब्दार्थ-सद्य-ताज़ा,वेग-शीघ्र
अर्थ-मैं क्षुधा की वेदना को शीघ्रता से निवारण के लिए भिन्न भिन्न प्रकार के,ताज़े मनोहर पकवान संवारकर, थाली में रखकर आपके सम्मुख अर्पित करने के लिए लाया हूँ!शांतिनाथ भगवान जी,आप ने ५वे चक्रवर्ती,१२वे कामदेव का पद पाया!आप के चरण कमलों की पूजा करने से रोग,शोक,दुःख और दारिद्रता नष्ट हो जाते है !

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्य निर्वपामीति स्वाहा !
घृत सनेह करपूर लाय कर दीपक ताके धरे परजार !
जगमग जोत होत मंदिर में मोह अंध को देत सुटार!!शांति!!
ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा !
शब्दार्थ -सनेह-चिकनाई,परजार-प्रज्ज्वलित कर,सुटार-अच्छी प्रकार दूर करने वाले,धरे-रखता/अर्पित

अर्थ-चिकने घी और कपूर से प्रज्ज्वलित करके दीपक आपके सम्मुख अर्पित करता हूँ जिससे मंदिर जी में जग मग ज्योति होती है और मोहरुपी अन्धकार पूर्णतया दूर हो जाता है!शांतिनाथ भगवान जी,आप ने ५वे चक्रवर्ती, बारहवे कामदेव का पद पाया!आप के चरण कमलों की पूजा करने से रोग,शोक,दुःख,दारिद्रता नष्ट हो जाते है!

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा !
देवदारु कृष्णागरु चंदन ,तगर कपूर सुगंध अपार !
खेऊँ अष्ट करम जारन को धूप धनंजय माहिं सुडार !!शांति!!
ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अष्ट कर्म विनाशनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा !

शब्दार्थ - देवदारु -देवदार की लकड़ी,जारन-नष्ट करने के लिए,
देवदार की लकड़ी,चंदन और कपूर मिलाकर अत्यंत सुगंधित धुप बनाकर,अष्टकर्मों के नष्ट के लिए खेता हूँ !मेरे कर्मो को नष्ट कर ने की कृपा करे!शांतिनाथ भगवान जी ,आपने पांचवे चक्रवर्ती,बारहवे कामदेव का पद पाया !आप के चरण कमलों की पूजा करने से रोग,शोक,दुःख और दारिद्रता नष्ट हो जाते है !

पूजा अर्थ सहित

आभार -पंडित रत्न लाल जैन बैनाड़ा जी

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा !
नारंगी बादाम सुकेला एला दाड़िम फल सहकार !
कंचन थाल माहिं धर लायो अरचत ही पाऊँ शिवनार !!शांति!!
ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय मोक्ष फल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा !
शब्दार्थ एला-इलाइची,दाड़िम-अनार,सहकार-आम,माहिं-मैं,शिवनार-मोक्ष स्त्री अर्थात मोक्षलक्ष्मी
अर्थ-मैं नारंगी,बादाम,केला,इलाइची,अनार,आम आदि फलों को सोने के थाल में भरकर आपकी पूजा करने के लिए लाया हूँ जिससे मोक्ष लक्ष्मी प्राप्ति हो!शांतिनाथ भगवान जी,आप ५वे चक्रवर्ती १२वे कामदेव का पद पाया इनके चरण कमलों की पूजा करने से रोग,शोक,दुःख और दारिद्रता नष्ट हो जाते है !
ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय मोक्ष फल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा !
जल फल आदि वसु द्रव्य संवारे अर्घ चढाये मंगल गाये !
'बखन रतन' के तुम ही साहिब दीजे शिवपुर राज कराय !!शांति!!
ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा !
शब्दार्थ संवार-मिला कर ,साहिब -स्वामी हो ,राज्य-प्राप्त,करा - करा दीजिये ,अनर्घ -अमूल्य
अर्थ-जल फल आदि आठों द्रव्य को मिलाकर मंगल गान करते हुए आपको अर्घ्य अर्पित करता हूँ! बख्तावर कवि कहते है कि आप ही हमारे स्वामी हो हमे मोक्ष दिलवा दीजिये!शांतिनाथ भगवान जी आपने ५वे चक्रवर्ती १२वे कामदेव का पद पाया!आप के चरणकमलों की पूजा करने से रोग,शोक,दुःख और दारिद्रता नष्ट होजाते है
ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा !
पंच कल्याणक
भादव सप्तमि श्यामा,सर्वार्थ त्याग नागपुर आये!माता ऐरा नाम,मैं पूजूं ध्याऊँ अर्घ शुभ लाये !!
ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय भाद्र पद कृष्णा सप्तम्यां गर्भकल्याणक प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा !
शब्दार्थ-श्यामा-वदी /कृष्ण,नागपुर-हस्तिनापुर (नाग-हाथी)

भावार्थ -आप सर्वार्थसिद्धि त्यागकर भादव वदी,कृष्णा सप्तमी को माता ऐरा के उदर में,हस्तिनापुर में पधारे!मैं आपकी पूजा और ध्यान कर,शुभ अर्घ आपके समक्ष समर्पित करता हूँ!
ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय भाद्र पद कृष्णा सप्तम्यां गर्भ कल्याणक प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा !
जन्मे तिरथ नाथं,वर जेठ असित चतुर्दशि सोहै!हरि गण नावें माथं ,मैं पूजूं शांति चरण युग जोहै !!

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय ज्येष्ठ कृष्णा चतुर्दश्यां जन्म कल्याणक प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा !
शब्दार्थ-वर-श्रेष्ठ,असित-वदी (कृष्ण),हरि-गण-इंद्र और देवता,नावें-झुका कर,माथं-मस्तक अर्थात नमस्कार करते है !
अर्थ-तीर्थंकर नाथ का जन्म श्रेष्ट,ज्येष्ठ कृष्णा चतुर्दशी को हुआ!देव और इंद्र ने भगवान् को नमस्कार किया!मैं भी शांति नाथ भगवान् के दोनों चरणों की पूजा करता हूँ !
नोट-मन में चिंतन करे कि इंद्र और देवता बालक शांति नाथ जी को समेरु पर्वत पर लेजाकर १००८ स्वर्ण कलशों से पॉण्डुक शिला पर विराजमान करके जन्माभिषेक कर उनका जन्म कल्याणक मनाया है !

ॐ ह्रीं ज्येष्ठ (वदी)कृष्णा चतुर्दश्यां जन्म मंगल मंडिताय बहुरीबनद में विराजमान श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा !
चौदस जेठ अँधियारी,कानन में जाय योग प्रभु लीन्हा!नवनिधि रत्न सुछारी,मैं बंदू आत्मसार जिन चीन्हा !!

पूजा अर्थ सहित

आभार -पंडित रत्न लाल जैन बैनाड़ा जी

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय ज्येष्ठ कृष्णा चतुर्दश्यां तपकल्याणक प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा !

शब्दार्थ-कानन-जंगल,सुछारी-छोड़कर/त्याग कर,योग-दीक्षा,लीन्हा-धारण करी,चीन्हा-जिन्होंने पहिचान लिया, आत्मसार-आत्मा की श्रेष्ठता

अर्थ-भगवान् ने ज्येष्ट वदी चतुर्दशी को जंगल में जाकर दीक्षा धारण करी!उन्होंने नवनिधियों, रत्नो चक्रवर्ती पद को भी त्याग दिया!मैं ऐसे शांतिनाथ भगवान् की वंदना करता हूँ जिन्होंने आत्मा की श्रेष्ठता को पहिचा न लिया है !

नोट- भगवान् के दीक्षा कल्याणक की अनुमोदना के लिए स्वर्ग से लौकान्तिक देव आये !,इंद्र देवता आकाश मार्ग से भगवान् को ,पालकी में बैठकर ,वन में ले जाते है ,वहाँ पहुंचकर शिला पर विराजमान होकर समस्त वस्त्रों ,आभूषणों को त्याग और पञ्च मुष्टि केश लौच कर भगवान् जी ने निर्ग्रन्थ दीक्षा धारण कर ली!दीक्षा लेते मन: गया !तत्पश्चात इंद्र उनके केशों को क्षीर सागर में प्रवाहित करने को ले गए

ॐ ह्रीं ज्येष्ठ (वदी)कृष्णा चतुर्दश्यां तपो मंगल मंडिताय खजराहो में विराजमान श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा !

पौष दसे उजियारा,अरि घाति ज्ञान भानु जिन पाया !प्रातिहार्य वसुधारा,मैं सेऊँ सुर नर जासु यश गाया !!

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय पौष शुक्लादशम्यां ज्ञानकल्याणक प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा !

शब्दार्थ-उजियारा-सुदी (शुक्ल),अरि-शत्रु,

अर्थ-पौष शुक्ल दशमी को भगवान् ने कर्मशत्रु का घात कर/चार घातिया कर्मों को नष्ट कर अपने,ज्ञान रूपी सूर्य का उदय किया अर्थात उन्हें केवलज्ञान प्राप्त हुआ!केवल ज्ञान प्राप्त होते ही उनको अष्ट प्रातिहार्य प्राप्त हुए,देवो और मनुष्यों ने भी उनके यशगान किया है;ऐसे भगवान् शांतिनाथ भगवान की मैं सेवा/पूजा करता हूँ !

नोट-आप भगवान् के ज्ञान कल्याणक का चिंतवन करे!भगवान् शांतिनाथ जी,के केवलज्ञान प्राप्त करने के बाद इंद्र ने कुबेर द्वारा उनकी बहिरंग विभूति समवशरण की रचना करवाई!अब समवशरण में १२ गुने ऊँचे अशोकवृक्ष के नीचे,गंधकुटी में सिंहासन से ऊपर कमल से चार अंगुल ऊपर अंतरिक्ष में विराजमान है ,उनके शीश के ऊपर तीन छत्र,उनके त्रिलोक के स्वामी के प्रतीक रूप है,पीछे भामंडल ,जिसमे सभी जीव अपने सात सात भवों को देख रहे है,भगवान् के ऊपर ६४ इंद्र ६४ ऋद्धि के स्वामी का उद्घोष करते हुए ६४ चंवर डोर रहे है, सुगन्धित पुष्पों की मंद मंद वर्षा हो रही है,उनकी दिव्य ध्वनि के खिरनी से असंख्यात जीवों का कल्याण हो रहा है!वे मिथ्यात्व त्याग कर सम्यग्दृष्टि हो रहे है !इंद्रभूति गौतम स्वामी का भगवान् महावीर स्वामी के समवशारण में मानस्तम्भ देखने से ही मिथ्यात्व का गलन हो गया था !जिससे वे सम्यग्दृष्टि होकर भगवान् के प्रमुख गणधर हुए !

ॐ ह्रीं पौष शुक्लादशम्यां ज्ञान मंगल मंडिताय बजरंगगढ़ में विराजमान श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा !

सम्मेद शैल भारी,हनकर अघाति मोक्ष जिन पाई!जेठ चतुर्दिशकार,मैं पूजूं सिद्धथान सुखदाई !!

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय ज्येष्ठ कृष्णा चतुर्दश्यां मोक्ष कल्याणक प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा !

शब्दार्थ-हंकार-नष्ट कर,अघाति-अघातिया कर्मों को,कारी-काली/कृष्ण पक्ष,सिद्धथान -सिद्ध क्षेत्र को,सुखदाई-सुख देने वाले

पूजा अर्थ सहित

आभार -पंडित रत्न लाल जैन बैनाड़ा जी

अर्थ-सम्मेदशिखर पर्वत पर अघातीकर्मों को नष्ट कर जिन्होंने जेठ चतुर्दशी वदी (कृष्ण) को मोक्ष प्राप्त किया, मैं भगवान् केसुखदायी निर्वाणक्षेत्र की पूजा करता हूँ !

नोट-आप भगवान् शांतिनाथ की मोक्ष स्थली श्री सम्मेद शिखर का चिंतवन करे!जलमंदिर से चढ़ कर ऊपर आये है,पहिले धर्मनाथ भगवान् जी फिर सुमतनाथ भगवान् जी की टोंक के बाद शांतिनाथ भगवान् कि टौंक आयी !भाव बनाये कि मोक्ष कल्याणक के अर्घ्य को उसी टौंक पर अर्पित कर रहा हूँ !

ॐ ह्रीं ज्येष्ठ कृष्णा चतुर्दश्यां मोक्ष मंगल मंडिताय श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा !

जयमाला

भय आप जिनदेव जगत में सुख विस्तार !

तारे भव्य अनेक तिन्हों के संकट टारे !!

टारे आठों कर्म मोक्ष सुख तिनको भारी !

भारी विरद निहार लही मैं शरण तिहारी !!

अर्थ-आप जिनेन्द्र भगवान् हो गए है,आपने जगत में सुख का विस्तार किया है,अनेक भव्य जीवों को संसार से पार लगाकर उनके संकट दूर किये है!आपने आठों कर्मों को नष्ट कर उनको भी मोक्ष सुख प्राप्त कराया है आप के (विरद) यश को (निहार)देखकर मैं आपकी शरण में आया हूँ (मुझे भी पार लगा दीजिये) !

तिहारे चरणन को नमूं दुःख दारिद संताप हर!

हर सकल कर्म छिन एक में,शान्ति जिनेश्वर शांति कर!!

अर्थ-मैं आपके चरणों को नमन करता हूँ मेरे दुःख,दरिद्रता और संताप को हर लीजिये!एक क्षण (छिन) में मेरे (सकल) समस्त कर्मों को हर लीजिये!शांतिनाथ भगवन!आप शांति प्रदान करे !

सारंग लक्षण चरण में ,उन्नत धनु चालीस !

हाटक वर्ण शरीर द्युति ,नमूं शांति जग ईश !!

अर्थ-आपके चरण में (सारंग) हिरन का (लक्षण) चिन्ह है ,ऊंचाई ४० धनुष,(हाटक) स्वर्णमयी शरीर की काँति थी,हे जगत के स्वामी शांति नाथ भगवान् मैं आपको नमस्कार करता हूँ ! ,

प्रभो आपने सर्व के फंड तोड़े,गिनाऊँ कछू मैं तिनों नाम थोड़े !

पड़ो अम्बु के बीच श्रीपाल राई,जपों नाम तेरो भए थे सहाई !!

अर्थ-प्रभु आपने बहुत लोगों के फंदे तोड़े है,अर्थात उन्हें मुक्ति दिलाई है !उनमे से कुछ के नाम मैं गिनाता हूँ !जब श्रीपाल(राई) राजा (अम्बु) समुद्र के बीच में गिर गया था तब उसने आप का नाम जपा था तब आपने उन की सहायता करी थी !

कथा-मैना सुंदरी कथा में ,मैना सुंदरी के पति श्रीपाल,को धवल सेठ ने मायाचारी से धक्का देकर समुद्र में फिंकवा दिया था तब श्रीपाल,भगवान के नाम की माला जपते जपते समुद्र से पार लग गए थे !

धरो रायने सेठ को सूलिका पै ,जपी आपके नाम की सार जपै !

भये थे सहाई तबै देव आये ,करी फूल वर्षा सिंहासन बनाये !!

पूजा अर्थ सहित

आभार -पंडित रत्न लाल जैन बैनाड़ा जी

अर्थ-(राय)राजा ने सेठ सुदर्शन को सूलि पर चढ़ा दिया था,उन्होंने आपके नाम की (सार)श्रेष्ठ जाप जपी थी तब देवों ने आकर उनकी फूलों की वर्षा कर तथा सिंहासन बनाकर,उस पर उन्हें बैठा कर,सम्मान कर (सहाई) सहायता,करी थी !

जबै लाख के धाम वह्नि प्रजारी,भयो पांडवों पै महा कष्ट भारी !

जबै नाम तेरे तनी टेर कीनी,करी थी विदुर ने वही राह दीनी !!

शब्दार्थ-धाम-मकान,वह्नि-अग्नि,प्रजारी-जलाई ,टेर -पुकार!

अर्-पांडवों के लाख के घर में आग लगाने से,उन पर महान कष्ट आया था जब उन्होंने आपका नाम लेकर आपको पुकारा था तब विदुर ने उन्हें रास्ता बता दिया था !(इस प्रकार पांडव अंडर ग्राउंड रास्ते से निकल गए और उनके कष्ट का निवारण हो गया)

हरी द्रोपदी घातकी खंड माहीं,तुम्हीं वहाँ सही भला ओर नाहीं !

लियो नाम तेरो भलो शील पालो,बचाई तहाँ ते सबै दुःख टालो!!

अर्थ-द्रोपदी को घातकीखंड में हर लिया गया था वहाँ अन्य कोई नहीं था ,आप ही तो सहारा थे!उसने आपका नाम लेकर शील का पालन किया,आपने उसकी वहाँ रक्षा कर उसके सभी दुःख को दूर किया !

कथा-एक बार द्रोपदी के महल में नारद के आने पर उसने उनको देख कर नाक मुह सिकोड़ा था,जिससे नारद ने अपने को अपमानित महसूस किया!तब नारद ने घातकी खंड के राजा पद्मनाभ को जाके द्रौपदी का चित्र दिखाया पद्मनाभ ने अपनी विद्या को भेजकर द्रौपदी को अपने पास घातकी खंड में बुलवा लिया !जिससे यहाँ तो हाहाकार मच गया और वहाँ द्रौपदी ने विचार किया मैं यहाँ कैसे आ गयी,तब उसने आपका नाम लिया जिससे उस का सारा संकट दूर हो गया ,अर्जुन वहाँ पहुंचकर द्रोपदी को वापिस ले आये !

जबै जानकी राम ने जो निकारी,धरे गर्भ को भार उद्यान डारी !

रटो नाम तेरो भलो सबै सौख्यदाई,करी दुर पीड़ा सु क्षण न लगाई !!

अर्थ-जब राम जी ने गर्भावस्था में,(जानकी) सीता को निकाल कर (उद्यान)जंगल में छुड़वा दिया था तब उसने आपका नाम लिया था जिससे आपने उनकी पीड़ा को दूर करने में देर नहीं लगाई,उनकी पीड़ा क्षण भर में समाप्त हो गयी !

व्यसन सात सेवें करें तस्कराई,सुअंजन से तारे घड़ी न लगाई !

सहे अंजना चंदना दुःख जेते,गये भाग सारे जरा नाम लेते !!

शब्दार्थ-तस्कराई-चोरी

अर्थ-अंजन चोर सप्त व्यसन का सेवन करता था,चोरी करता था,किन्तु जब उसने इन सब का त्याग कर आपको चित्त में धारण किया तब आपको उसे संसार से पार लगाने में एक घड़ी भी नहीं लगी !अंजना और चंदना भी कितने कितने दुःख भोगे,वे आपका नाम लेते ही दूर हो गये !

नोट-अंजना जी हनुमान जी की माता जी थी ,चंदना जी भगवान् महावीर (की मौसी) ने उन्हें आहार दिया था

घड़े बीच में सास ने नाग डारो ,भलो नाम तेरो जु सोम संभारो !

पूजा अर्थ सहित

आभार -पंडित रत्न लाल जैन बैनाड़ा जी

गई काढ़ने को भई फूलमाला,भई है विख्यातं सबै दुःख टाला !!

अर्थ-सास ने एक घड़े में साप डाल गिया था,सोमसती ने आपका नाम भली प्रकार लिया था!घड़े में से उसे निकालने के लिए जब गई तो वह फूल माला बन गया,जिससे उसके शील की सब जगह प्रशंसा हुई,भगवन आपने उसके सारे दुखों को दूर कर दिया !

नोट - सोम नाम की सती थी जिसके चरित्र पर दोष लगाया गया था

इन्हे आदि देके कहाँ लो बखानें,सुनों विरद भारी तिहँ लोक जानें !

अजी नाथ मेरी जरा और हेरो,बड़ी नाव तेरी रती बोझ मेरो !!

शब्दार्थ-हेरो-देखो,रती -थोड़ा सा

अर्थ-इनका मैं बखान कहाँ तक करू,आपका यश तो बड़ा भारी है तीनों लोक में हर जीव जानता है !हे नाथ भगवन मेरी ओर जरा देख लीजिये,आपकी नाव बहुत बड़ी है मेरा तो भार थोड़ा सा ही है,(मैं भी उस मैं बैठ कर पार हो जाऊँ)!

गहो हाथ स्वामी करो वेग पारा ,कहूँ क्या अबै आपनी मैं पुकारा !

सबै ज्ञान के बीच भासी तुम्हारे,करो देर नाहीं मेरे शांति प्यारे !!

शब्दार्थ-गहो-पकड़ लो,वेग-जल्दी,भासी-प्रकाशमान,

अर्थ-भक्त भगवान् से विनती करते हुए कह रहा है,भगवन आप मेरा हाथ पकड़ कर जल्दी से पार लगा दीजिये अब आपसे और क्या कहूं,मैं तो अपनी (पुकारा) विनती आपके सामने कर रहा हूँ !आपके ज्ञान के बीच में सब प्रकाशमान है,(आपसे मैं अपने भूत और वर्त्तमान के दुखो के विषय में क्या कहूं आपको सब पता है) केवल ज्ञानी है!मेरे शांति नाथ प्रभु अब और देर मत कीजिये,अनंत काल से मैं भटकता रहा,अन्य देवो भगवानो के चककर में भटकता रहा जो कि गलत था,अब मैं सही जगह आ गया हूँ,जल्दी से संसार से मुझे निकाल लीजिये

श्री शान्ति तुम्हारी,कीरत भारी,सुर नरनारी गुणमाला !

बख्तावर ध्यावे,रतन सुगावे,मम दुःख दारिद सब टाला !!

अर्थ-शांतिनाथ भगवान्!आपको यश तीनों लोक में बहुत फैला हुआ है,देवता हो,मनुष्य,स्त्री आदि सभी आपके गुणो की माला को धारण करते है अर्थात निरंतर आपका गुणगान करते है!बख्तावर कवि कहते हैं कि जो आपका ध्यान करता है और आपके गुणों का गान करता है वे सब पार होते है!मैंने भी आपके गुणों का गान किया है मेरे भी दुःख और दरिद्रता को दूर कीजिये !

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्तये महार्घ निर्वपामीति स्वाहा !!

अजी एरा नन्दन छबि लखत ही आप अरणं !

धरै लज्जा भारी करत श्रुति सो लाग चरणं !!

करै सेवा सोई लहत सुख सो सार क्षण में !

घने दीना तारे हम चहत हैं बास तिन में !!

शब्दार्थ-अरणं-सूर्य,श्रुति-सुना है,घने -बहुत सारे !सार-श्रेष्ठ

अर्थ-मैंने सुना है कि एरा देवी के पुत्र,आपकी छवि देखते ही सूर्य भी अत्यंत लज्जित हो जाता है,सूर्य समझता था कि सर्वाधिक प्रकाशमान आभा उसके पास ही है किन्तु भगवान की आभा तो करोडो सूर्य के प्रकाश से भी अधिक है इसलिए मैं आपकी शरण में आ गया हूँ!भगवान् जी!जो आपकी सेवा/भक्ति में लगते है वे श्रेष्ठ सुखों को क्षण में प्राप्त कर लेते है आपने तो बहुतों को पार लगा दिया है हम चाहते है कि हमारा भी वास उनमे हो जाए !

!!इत्याशीर्वाद: पुष्पांजलि क्षिपेत् !!

विशेष -

क्या शांतिनाथ भगवान् जी ही शांति प्रदान करने वाले है या पार्श्वनाथ भगवान् ही संकट मोचक है?

समाधान-शास्त्रों में स्पष्ट लिखा है कि मान्यता रखना कि शांतिनाथ भगवान् 'ही' शांति प्रदान करने वाले है, म्यक्त्व में दोष है,मिथ्यात्वी जीव है क्योकि भगवन के स्वरुप का उसको ज्ञान ही नहीं है गुणों की अपेक्षा सिद्धालय में विराजमान समस्त सिद्ध भगवान् एक समान है उनमे रंच मात्र भी हीनाधिकता नहीं है!शांतिनाथ भगवान् का केवल नाम शांतिनाथ है किन्तु इस भ्रम में लोगो की अनुचित मान्यता है कि वे' ही' शांति प्रदान कर सकते है!सभी भगवान् सामान शांति इत्यादि के प्रेरणा स्रोत है!णमोकार मंत्र भी शांति प्रदान का स्रोत है

कुछ लोगो की अनुचित मान्यता है कि पार्श्वनाथ भगवान् ही संकट मोचक है,यह भी मिथ्यात्व की पोषक भावना है,सम्यक्त्व को दूषित करती है !

6 **श्रीपार्श्वनाथ जिन की पूजन** का अर्थ एवं भावों सहित आरम्भ करते है

गीता छन्द

वर स्वर्ग प्राणत को विहाय, सुमात वामा सुत भये |अश्वसेन के पारस जिनेश्वर,चरन जिनके सुर नये ||

नव हाथ उन्नत तन विराजै, उरग लच्छन पद लसैं |थापूं तुम्हें जिन आय तिष्ठो करम मेरे सब नसैं ||

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् |

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः |

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् |

शब्दार्थ:-वर-श्रेष्ठ ,विहाय-छोड़कर ,उरग -सर्प ,सूत-पुत्र ,सुर-देवता ,तन-शरीर ,उन्नत-ऊँचा ,विराजै-सुशोभित,लच्छन -चिन्ह,पद-पैर,लसैं-सुशोभित था। तिष्ठो-बैठिये /स्थापना है,

अर्थ-पार्श्वनाथ जिनेश्वर(भगवान्) श्रेष्ठ प्राणत स्वर्ग को छोड़कर माता वामा देवी और अश्वसेन के पुत्र हुए !जिनके चरणों की वंदना देवताओं ने करी थी ! उनका शरीर नौ हाथ ऊँचा सुशोभित था ! उनके पैर में

पूजा अर्थ सहित

आभार -पंडित रत्न लाल जैन बैनाड़ा जी

सर्प का(लच्छन) चिन्ह सुशोभित था!हे जिनेन्द्र भगवान् में आपकी यहाँ स्थापना करता हूँ आप यहाँ आकर विराजमान होइये (जिससे मैं आपकी पूजा करू और)मेरे सब कर्म नष्ट होजाये !

नोट-भक्त भगवान् को बुला(आह्वानन) कर पूजा लिए करने के लिए स्थापना (विराजमान) करा रहा है जिससे सन्निधिकरण कर पूजा करे और अपने कर्मों को नष्ट कर सके !!

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् (आह्वानन)|

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः (स्थापनं)|

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् (सन्निधिकरणं)|

छंद नाराच

क्षीरसोम के समान अम्बुसार लाइये|हेमपात्र धारि के सु आपको चढ़ाइये ||

पार्श्वनाथ देव सेव आपकी करुं सदा |दीजिए निवास मोक्ष भूलिये नहीं कदा ||

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं नि0स्वाहा

शब्दार्थ-क्षीर-दूध जैसे,सोम-चंद्रमा के समान,अम्बु-जल,सार-श्रेष्ठ,हेम-स्वर्ण के,पात्र-बरतन में,धारि-रख कर,निवास-स्थान,कदा-कभी

अर्थ:-दूध के समान सफ़ेदअथवा चंद्रमा के समान श्रेष्ठ जल को स्वर्ण कलश में लेकर आपके समक्ष अर्पित करता हूँ!हे पार्श्वनाथ भगवान्!मैं आपकी सदा सेवा करता हूँ मुझे मोक्ष में निवास दीजिये अर्थात मोक्ष प्रदान कीजिये,कभी भूलियेगा नहीं !

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं नि0स्वाहा

चंदनादि केशरादि स्वच्छ गंध लीजिये |आप चरण चर्च मोह-ताप को हनीजिये ||

पार्श्वनाथ देव सेव आपकी करुं सदा | दीजिए निवास मोक्ष भूलिये नहीं कदा ||

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय भव ताप विनाशनाय चंदनं निर्व0स्वाहा

शब्दार्थ-हनीजिये-नष्ट कीजिये ,ताप-अग्नि/ दुःख

अर्थ-मैं चंदन,केशर आदि सुगंधित वस्तुए लेकर आपके चरणो की पूजा करता हूँ,आप मोह (राग द्वेष) की अग्नि को नष्ट कर दीजिए !हे पार्श्वनाथ भगवान्!मैं आपकी सदा सेवा करता हूँ मुझे मोक्ष में निवास दीजिये अर्थात मोक्ष प्रदान कीजिये,कभी भूलियेगा नहीं !

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय भव ताप विनाशनाय चंदनं निर्व0स्वाहा फेन,चंद्र के समान अक्षतान् लाइके |चर्न के समीप सार पुंज को रचाइके || पार्श्व0

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् निर्व0स्वाहा

पूजा अर्थ सहित

आभार -पंडित रत्न लाल जैन बैनाड़ा जी

शब्दार्थ-फेन-झाग,चर्न -चरणों ,रचाइके -बनाकर ,सार-श्रेष्ठ !

दूध के झाग या चंद्रमा के समान श्वेत स्वच्छ चावलो के श्रेष्ठ पुंजों को बनाकर! आपके चरणों के समीप हे पार्श्वनाथ भगवान्!मैं आपकी सदा सेवा करता हूँ मुझे मोक्ष में निवास दीजिये अर्थात मोक्ष प्रदान कीजिये,कभी भूलियेगा नहीं !

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् निर्व0स्वाहा

केवड़ा गुलाब और केतकी चुनाइके |धार चर्न के समीप काम को नशाइके || पार्श्व0

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं नि0स्वाहा

अर्थ-केवड़ा,गुलाब और केतकी के फूलों को चुन चुन कर लाकर आपके चरणों के समीप, मेरे काम बाण को नष्ट करने के लिए रख रहा हूँ,आप उसे नष्ट कर दीजिये !हे पार्श्वनाथ भगवान्!मैं आपकी सदा सेवा करता हूँ मुझे मोक्ष में निवास दीजिये अर्थात मोक्ष प्रदान कीजिये,कभी भूलियेगा नहीं !

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं नि0स्वाहा

घेवरादि बावरादि मिष्ट सद्य में सने |आप चर्न चर्चतें क्षुधादि रोग को हने ||पार्श्व0

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशाय नैवेद्यं नि0स्वाहा

अर्थ:-घेवर,बावर/ईमरती (मिठाई) आदि (सद्य)घी में (सने)बना कर (मिष्ट) चाशनी में डालकर आपके चरणों की पूजा करने से क्षुधा आदि रोग नष्ट हो जायेगे !हे पार्श्वनाथ भगवान्!मैं आपकी सदा सेवा करता हूँ मुझे मोक्ष में निवास दीजिये अर्थात मोक्ष प्रदान कीजिये,कभी भूलियेगा नहीं !

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय क्षुधा रोग विनाशाय नैवेद्यं नि0स्वाहा

लाय रत्न दीप को सनेह पूर के भरुं |वातिका कपूर बारि मोह ध्वांत को हरुं ||पार्श्व0

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं नि0स्वाहा

शब्दार्थ -सनेह पूर -चिकनाई अर्थात घी से पूर्ण ,ध्वान्त -अन्धकार !

अर्थ-मोह रुपी अन्धकार को क्षय करने के लिए,रत्न के दीपक को घी से पूरा भरकर ,कपूर की बत्ती से जला कर, आपके समक्ष अर्पित करता हूँ !हे पार्श्वनाथ भगवान्!मैं आपकी सदा सेवा करता हूँ मुझे मोक्ष में निवास दीजिये अर्थात मोक्ष प्रदान कीजिये,कभी भूलियेगा नहीं !

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं नि0स्वाहा

धूप गंध लेय के सुअग्निसंग जारिये |तास धूप के सुसंग अष्टकर्म बारिये ||पार्श्व0||

अर्थ:-सुगन्धित धुप लेकर अग्नि के साथ जलाता हूँ (तासु)उस धुप के संग अष्ट कर्मों को (बारिये) नष्ट करता हूँ !हे पार्श्वनाथ भगवान्!मैं आपकी सदा सेवा करता हूँ मुझे मोक्ष में निवास दीजिये अर्थात मोक्ष प्रदान कीजिये,कभी भूलियेगा नहीं !

पूजा अर्थ सहित

आभार -पंडित रत्न लाल जैन बैनाड़ा जी

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं नि0 स्वाहा !

खारिकादि चिरभटादि रत्न थाल में भरुं |हर्ष धारिके जजूं सुमोक्ष सौख्य को वरुं ||पार्श्व0||

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं नि0स्वाहा

अर्थ-(खारिक) छुआरा आदि ,(चिरभटा)ककड़ी आदि को रत्न के थाल में भरकर लाया हूँ!आपकी पूजा प्रफुल्लित होकर हर्षोउल्लास पूर्वक मोक्ष सुख के वरण (प्राप्ति) के लिए करता हूँ !हे पार्श्वनाथ भगवान्!मैं आपकी सदा सेवा करता हूँ मुझे मोक्ष में निवास दीजिये अर्थात मोक्ष प्रदान कीजिये,कभी भूलियेगा नहीं !

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय मोक्ष फलप्राप्तये फलं नि0स्वाहा

नीर गंध अक्षतान पुष्प चारु लीजिये |दीप धूप श्रीफलादि अर्घ तैं जजीजिये ||

पार्श्वनाथ देव सेव आपकी करुं सदा |दीजिए निवास मोक्ष भूलिये नहीं कदा ||

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं नि0 स्वाहा

अर्थ- जल ,चंदन,अक्षत,पुष्प,नैवेद्य ,दीप ,धुप और फल आदि का अर्घ बनाकर मैं आपकी (जजीजिये) पूजा करता हूँ !हे पार्श्वनाथ भगवान्!मैं आपकी सदा सेवा करता हूँ मुझे मोक्ष में निवास दीजिये अर्थात मोक्ष प्रदान कीजिये,कभी भूलियेगा नहीं !

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं नि0स्वाहा

पंचकल्याणक अर्घ्यावली

शुभप्राणत स्वर्ग विहाये, वामा माता उर आये |वैशाख तनी दुतिकारी, हम पूजें विघ्न निनारी ||

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णाद्वितीयायां गर्भमंगलप्राप्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

शब्दार्थ:-विहाय-छोड़कर आये,दुति-द्वितीया,कारी-वदी(कृष्णा),उर-पेट ,निनारी-निवारण/दूर करने के लिए

अर्थ:-आप शुभ प्राणत स्वर्ग को छोड़कर वामा माता के पेट में वैशाख कृष्ण द्वितिया को आये थे !हम विघ्नो के निवारण के लिए आप (भगवान् पार्श्वनाथ जी) की पूजा करते हैं !

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णाद्वितीयायां गर्भ मंगल मंडिताय पटेरिया जी में विराजमान श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय

अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा !

गर्भ कल्याणक के महिमा ;छप्पन कुमारी देवियों द्वारा माता की सेवा,उनके द्वारा माता से प्रश्नों और उनके उत्तरों का चिंतवन करे। इंद्र /कुबेर रत्नों की वर्षा १५ माह तक कर रहे ,चारों ओर आनंद मय वातावरण है !

जन मे त्रिभुवन सुखदाता,एकादशि पौष विख्याता |श्यामा तन अद्भुत राजै, रवि कोटिक तेज सु लाजै ||

ॐ ह्रीं पौषकृष्णा एकादश्यांजन्ममंगलप्राप्ताय श्रीपार्श्व0अ0नि0स्वाहा

पूजा अर्थ सहित

आभार -पंडित रत्न लाल जैन बैनाड़ा जी

अर्थ:-तीनों लोक के सुखसदाता, त्रिलोकनाथ का जन्म प्रसिद्द पौष कृष्ण एकादशि को हुआ था!आपका काले वर्णका शरीर अत्यंत सुशोभित हो रहा था,उसका प्रकाश करोड़ों सूर्य के प्रकाश को भी लज्जित कर रहा था !

ॐ ह्रीं पौषकृष्णा एकादश्यां जन्म मंगलमंडिताय जिंतूर नैनगिरी में विराजमान श्री पार्श्व 0अ0 नि0 स्वाहा

नोट-नारीकियों मे भी जिस क्षण त्रिलोकनाथ जन्म लेते है,उस क्षण आपस में झगड़ा बंद हो जाता है!इन्द्रों को जैसे ही भगवान् के जन्म का पता लगता है,वे ऐरावत हाथी पर बैठ कर आते है ,उनका जन्म कल्याणक मानते है! शची इन्द्राणी मायामयी बच्चे को माता के पास रख,तीर्थंकर बालक को सौधर्मेन्द्र को दे देती है!सब मेरु पर्वत के पंडुक वन की पाण्डुक शिला पर रखे सिंहासन पर उन्हें विराजमान कर क्षीरसागर से लाये १००८ कलशों के जल से भगवान् का अभिषेक आनंदपूर्वक करते है !

कलि पौष एकादशि आई,तब बारह भावन भाई |अपने कर लौंच सु कीना, हम पूजें चरन जजीना ||

ॐ ह्रीं पौषकृष्णा एकादश्यां तपोमंगलप्राप्ताय श्रीपार्श्व0अ0नि0स्वाहा

अर्थ-पौष कृष्ण एकादशि को आपने १२ भावनाओं को भाया !अपने हाथों से केशों का लौंच कर दिक्षा धारण करी,हम आपके पूज्य चरणों की (जजीना)अर्चना करते हैं !

ॐ ह्रीं पौषकृष्णा एकादश्यां तपोमंगलमंडिताय महुआ में विराजमान श्रीपार्श्व0अ0नि0स्वाहा

नोट - आप भगवान के दीक्षा कल्याणक का चिंतवन करे! लोकांतिक देवो ने दीक्षा की अनुमोदना करी,पालकी में पहले मनुष्यों ने भगवान् को बैठकर थल मार्ग पर दीक्षा स्थल की ओर गमन किया तत्पश्चात देव आकाश मार्ग से भगवान् को पालकी में विराजमान कर वन ले गए!वहाँ भगवान् ने पालकी से उतर कर शीला पर

विराजमान हो 'नम: सिद्धेभ्य:' उच्चारण कर,पञ्च मुष्ठि केशलोंच किया वस्त्र/आभूषणों का त्याग कर निर्ग्रन्थ दिगंबर दीक्षा धारण करी!उनके केशों को इंद्र ने पिटारे में लेजाकर क्षीरसागर को सपुर्द किया !

कलि चैत चतुर्थी आई, प्रभु केवल ज्ञान उपाई |तब प्रभु उपदेश जु कीना, भवि जीवन को सुख दीना ||

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णाचतुर्थ्यां केवलज्ञानप्राप्ताय श्रीपार्श्व0अ0नि0स्वाहा

अर्थ- चैत कृष्ण चतुर्थी को भगवान् को केवलज्ञान उत्पन्न हुआ!तब भगवान् ने उपदेश दिया जिससे भव्य जीवों को सुख की प्राप्ति हुई !

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णाचतुर्थ्यां केवलज्ञान मंडिताय अहिक्षेत्र ,निकट बरेली में विराजमान श्रीपार्श्व0 जिनेन्द्राय अ0नि0स्वाहा

नोट-ज्ञान कल्याणक का चिंतवन करे भगवान् का कुबेर द्वारा इंद्र की आज्ञानुसार की रचना क्षण भर में करी उसमे गंधकुटी के ऊपर सिंहासन पर स्थित कमल से चार अंगुल ऊपर अंतरिक्ष में भगवान् १०८ हाथ (१६२')ऊँचे अशोक वृक्ष के नीचे चतुर्मुख सहित विराजमान है!उनके पीछे भामंडल है जिस मे जीव अपने ३ भूत,३

भविष्य और १ वर्त्तमान;७ भवों को स्पष्ट देख रहे है,देवता ६४ चंवर ढूर रहे है,आकाश से सुगन्धित मंदार आदि,कल्पवृक्षों से प्राप्त पुष्पो की सुगन्धित वर्षा हो रही है !१२ योजन तक कोई दुर्भिक्ष आदि नहीं है

पूजा अर्थ सहित

आभार -पंडित रत्न लाल जैन बैनाड़ा जी

!समवशरण में बैठे १२ कोठे में लोक के जीव भगवान् के उपदेशों का आनंद अपनी अपनी ७१८ भाषा में दिव्य ध्वनि के माध्य से लेकर सम्यग्दृष्टि हो रहे है !

सित सातैं सावन आई, शिवनारि वरी जिनराई |सम्मेदाचल हरि माना, हम पूजैं मोक्ष कल्याना ||

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लासप्तम्यां मोक्षमंगलप्राप्ताय श्रीपाार्श्व0अ0नि0स्वाहा

शब्दार्थ- सित-शुक्ल,हरि-इंद्र माना-आपके चरणों को अंकित किया

अर्थ -श्रावण शुक्ल सप्तमी को मोक्ष रुपी लक्ष्मी/स्त्री का वरण किया अर्थात मोक्ष प्राप्त किया!इंद्र ने सम्मेद शिखर जी पर आकर आपके मोक्ष स्थल पर वज्र की (सूची) कलम से आपके चरण अंकित किये!हम आपके मोक्ष कल्याणक की पूजा करते हैं !

ॐ ह्रीं श्रावण शुक्ला सप्तम्यां मोक्ष मंगल मंडिताय (चिंतवन करे कि शिखर जी पर अंतिम स्वर्ण भद्र कूट पर पहुँच जाए,पार्श्वनाथ भगवान् के निर्वाण स्थल पर यह अर्घ अर्पित कर रहे है) श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अ0नि0स्वाहा

विशेष-पार्श्वनाथ भगवान् की पूजा अधिक यह मानकर करी जाती है कि वे हमारे संकटों के हरने वाले है वैसे यह मिथ्यात्व है क्योकि सभी भगवान् निश्चय नय से समान शक्ति और गुणों के धारक है !वे निश्चय नय से हमारा कुछ अच्छा बुरा नहीं करते है!हमारा अच्छा बुरा अपने पूजा इत्यादि धार्मिक कार्यों के करने से जो पुण्य बंध होता है उससे होता है !

(जयमाला)

पारसनाथ जिनेंद्र तने वच,पौन भखी जरते सुन पाये |

कर्यो सरधान लह्यो पद आन भये पद्मावति शेष कहाये |

नाम प्रताप टरैं संताप, सुभव्यन को शिवशर्म दिखाये |

हे अश्वसेन के नंद भले, गुण गावत हैं तुमरे हर्षाये ||

शब्दार्थ -तने-के,पौनभखी-हवा खाने वाले अर्थात सर्प,जरते-जलते हुए,शेष-सर्प/धनेन्द्र,शर्म-सुख .

अर्थ-जलते हुए सर्प/सर्पिणी ने पारसनाथ जिनेंद्र के,वचन सुनकर उन पर श्रद्धां करने से पद्मावती और धरणेन्द्र में जन्म लिया !उनके नाम के प्रताप से दुःख दूर हो जाते है भव्य जीवों को मोक्ष सुख की प्राप्ति होती है!हे अश्वसेन के पुत्र हम आपके गुणों का गान हर्षपूर्वक करते है!

नोट-हमे अधिकतर को भ्रान्ति है कि भगवान् पार्श्वनाथ ने सर्प और सर्पिणी युगल को णमोकार मंत्र सुनाया था इस भ्रान्ति को ठीक कर लेना चाहिए क्योकि तीर्थंकर अपनी गृहस्थ अवस्था में भी ॐ नम:सिद्धेभ्य : मंत्र नहीं बोलते, मात्र 'नम:सिद्धेभ्य' बोल कर सिद्ध भगवान् की वंदना करते है क्योकि उन्हें आत्मा की उत्कृष्टता ही रुचिकर होती है!दीक्षा धारण करते समय भी वे 'ॐ नम:' नहीं बोलते क्योकि उसमे पाँचों परमेष्ठी गर्भित है,वे "नम: सिद्धेभ्य " ही बोलते है !

पूजा अर्थ सहित

आभार -पंडित रत्न लाल जैन बैनाड़ा जी

वास्तविकता है कि भगवान् पार्श्वनाथ ने सन्यासी तपस्वी,जो कि लकड़ी में चारो ओर अग्नि जलाकर घोर तपश्चरण कररहे थे ,को उपदेश दिया था जिससे सुनकर लकड़ी के अंदर विराजमान सर्प और सर्पिणी युगल ने ,श्रद्धां किया और जलते हुए अपने उस भव के शरीर को त्याग कर,स्वर्ग में पद्मावती और धनेन्द्र के रूप में जन्म लिया था !जो पार्श्वनाथ चालीसा में सर्प सर्पिणी को णमोकार मंत्र सुनाने का उल्लेख है वह आगम सम्मत नहीं है,इसलिए अमान्य है। कृपया अपनी धरणा ठीक कर लीजिये !

दोहाः- केकी-कंठ समान छवि, वपु उतंग नव हाथ |

लक्षण उरग निहार पग, वंदौं पारसनाथ !!

शब्दार्थ-केकी-मोर,कंठ-गले के समान छवि अर्थात नीले/काले रंग,वपु-शरीर,तंग-ऊँचा,नव-नौ, हाथ-

लक्षण-चिन्ह,उरग-सर्प,निहार-देखकर,पग-चरण,वंदौं-वंदना करता हूँ,पारसनाथ-पार्श्वनाथ भगवान्

अर्थ पार्श्वनाथ भगवान् की छवि अर्थात वरण मोर के गले के समान नीला/काला,शरीर की ऊंचाई नौ हाथ थी,मैं उनके चरणों में सर्प का चिन्ह देखकर उनकी पूजा करता हूँ !

पद्धरि छंद

रची नगरी छह मास अगार, बने चहुं गोपुर शोभ अपार |

सु कोट तनी रचना छबि देत, कंगूरन पें लहकें बहुकेत ||

शब्दार्थ-अगार-पहिले/पूर्व,बने चहुं-चारों दिशाओं में,गोपुर-मुख्य द्वार,शोभ अपार-अत्यंत सुशोभित,कोट -सीमा /बॉउंड्री,कंगूरन पें लहकें बहुकेत-ऊपर कंगूरन बहुत सारी झुमरिया,लहकें-लहरा रही है

अर्थ-भगवान् के गर्भ में आने से छह माह पूर्व नगरी बनाई जो कि चारों दिशाओं में मुख्य द्वारों से अत्यंत सुशोभित थी!उसके चारो ओर बहुत सुंदर बाउंड्री बनायी थी!ऊपर बहुत सारी झुमरिया लह रहा रही थी

बनारस की रचना जु अपार, करी बहु भांति धनेश तैयार |

तहां अश्वसेन नरेन्द्र उदार, करैं सुख वाम सु दे पटनार ||

अर्थ-विविध प्रकार से कुबेर ने अत्यंत सुन्दर बनारस नगरी बनाई थी !वहाँ अत्यं उदार राजा अश्वसेन अपनी पटरानी वामा देवी के साथ सुखों से भरपूर जीवन आनंद पूर्वक व्यतीत कर रहे थे !

तज्यो तुम प्रानत नाम विमान, भये तिनके वर नंदन आन |

तबै सुर इंद्र नियोगनि आय, गिरिंद करी विधि न्हौन सुजाय

शब्दार्थ-तज्यो-छोड़कर,वर नंदन-श्रेष्ठ पुत्र,नियोगनि-नियोग,गिरिंद-पर्वतों का राजा समेरू पर्वत,न्हौन-स्नान/अभिषेक

अर्थ-हे भगवान् आप प्राणत स्वर्ग को त्याग कर उनके(माता वामा देवी और अश्वसेन राजा) श्रेष्ठ पुत्र हुए!तभी देव और इंद्र नियोग पूजा करने के लिए आये और उनको (जिनेन्द्र भगवान् बालक) समेरू पर्वत पर लेजा कर नहलाया / उनका जन्माभिषेक किया !

पूज़ा अर्थ सहित

आभार -पंडित रत्न लाल जैन बैनाड़ा जी

पिता-घर सौंपि गये निजधाम, कुबेर करै वसु जाम सुकाम |

बढ़े जिन दोज-मयंक समान, रमैं बहु बालक निर्जर आन |

शब्दार्थ -जाम-पहर मयंक-चंद्रमा,निर्जर-बालक,वसु-आठ ,निर्जर-बालक

अर्थ-बालक तीर्थंकर को उनके पिता के घर छोड़कर वे अपने घर चले गए!कुबेर उनकी आठो पहर सेवा करते थे! वे दूज के चंद्रमा के समान बढ़ने लगे!बहुत से देवों ने बालक बनकर बालक तीर्थंकर के साथ क्रीड़ा कर उनके साथ रमे रहे !

भए जब अष्टम वर्ष कुमार,धरे/*भए' अणुव्रत महा सुखकार |

पिता जब आन करी अरदास, करो तुम ब्याह वरो ममआस!!

शब्दार्थ -अरदास-निवेदन !

अर्थ -जब पार्श्वनाथ कुमार आठ वर्ष के हुए तब उन्होंने महान सुखदायक अणुव्रतों को धारण किया!पिताजी ने अपनी आशा की पूर्ती करने के लिए उनसे विवाह का निवेदन किया !

नोट-*शास्त्रों के अनुसार तीर्थंकर भगवान् अणुव्रत नहीं धारण करते वे सीधे महाव्रत धारण करते है !इसलिए इस पूजा में धरे के स्थान पर 'भए' होना चाहिए!भगवान् के आठ वर्ष की आयु होते ही उनकी अप्रत्याख्याना - वरण कषाय का अनुद्‌य होने के कारण उनका अणुव्रत ,पंचम गुण स्थान स्वयं हो जाता है !

करी तब नाहिं रहे जग चंद, किये तुम काम कषाय जुमंद |

चढ़े गजराज कुमारन संग, सुदेखत गंगतनी सुतरंग

अर्थ -पिता के निवेदन पर पार्श्वनाथ ने विवाह के लिए मना कर संसार में चंद्रमा के समान सुशोभित रहते हुए काम और कषायों को अधिक मंद किया! हाथी पर चढ़कर अन्य कुमारों के साथ जाते हुए गंगा नदी की तरंगों को देख कर आनंदित हो रहे थे!

लख्यो इक रंक कहै तप घोर, चहूंदिशि अगनि बलै अति जोर |

कहै जिननाथ अरे सुन भ्रात, करै बहु जीवन की मत घात ||

शब्दार्थ-लख्यो-देखा,रंक-सन्यासी बलै-जल रहे थेअर्थ-उन्होंने एक सन्यासी को चारो तरफ लकड़ी जलाकर घोर तप करते हुए देखा!जिनेन्द्र भगवान् ने कहा कि हे भाई सुनो इन्हे जलाकर तुम जीवों का घात मत करो !(तुम्हारे लकड़ी जलाने से सर्प और सर्पिणी का युगल जिन्दा जल रहा है,यह उन्होंने अवधि ज्ञान से जान लिया था)

भयो तब कोप कहै कित जीव, जले तब नाग दिखाय सजीव |

लख्यो यह कारण भावन भाय, नये दिव ब्रहमरिषीसुर आय ||

शब्दार्थ -कोप-क्रोध हुआ,ब्रहमरिषीसुर-लोकांतिक देव

पूजा अर्थ सहित

आभार -पंडित रत्न लाल जैन बैनाड़ा जी

अर्थ- तब वह सन्यासी क्रोधित होकर कहने लगा जीव कहाँ है !तब उन्होंने उसे जलते हुए जीवित सर्प को दिखाया!यह देखकर वे १२ भावनाओं को भाने लगे और उन्हें वैराग्य वृद्धि हुई, लौकांतिक देव ने आकर उन्हें नमस्कार कर के वैराग्य की अनुमोदना करी !

तबहिं सुर चार प्रकार नियोग, धरी शिविका निज कंध मनोग |

कियो वन माहिं निवास जिनंद, धरे व्रत चारित आनन्दकंद ||

शब्दार्थ -शिविका-पालकी,मनोग-संदर ,निवास-रहना

अर्थ-तभी चारों प्रकार के देवों ने अपने नियोग के अनुसार सुंदर पालकी को अपने कंधो पर रख कर ले गए! वन में जिनेन्द्र भगवान् ने रह कर आनंद के समूह को प्रदान करने वाले व्रत और चरित्र अर्थात निर्ग्रथ मुनि दीक्षा धारण करी !

गहे तहँ अष्टम के उपवास, गये धनदत्त तने जु अवास |

दियो पयदान महासुखकार, भई पन वृष्टि तहां तिहिं बार ||

अर्थ- उपवास के बाद धनदत्त सेठ के घर गये जहाँ उन्होंने भगवान् को महां सुखकारी पयदान /आहार दान दिया जिस के फलस्वरूप उ नके आंगन में तीन बार देवों ने रतनों की वृष्टि करी

गये तब कानन माहिं दयाल, धर्यो तुम योग सबहिं अघ टाल |

तबै वह धूम सुकेतु अयान, भयो कमठाचर को सुर आन ||

शब्दार्थ-कानन-जंगल,अघ-पापों

अर्थ-आपने वन में जाकर समस्त पापों को दूर कर योग धारण किया !तब वह सन्यासी कमठ का जीव अचानक आया !

करै नभ गौन लखे तुम धीर, जु पूरब बैर विचार गहीर |

कियो उपसर्ग भयानक घोर, चली बहु तीक्षण पवन झकोर ||

शब्दार्थ-नभ-आकाश में,

अर्थ वह आकाश में गमन कर रहा था उसने आपको देखा और पूर्व बैर को विचार करके भयानक उपसर्ग कर ,घोर आधी चलायी ,तीक्ष्ण हवा चलायी !

रह्यो दशहूं दिश में तम छाय, लगी बहु अग्नि लखी नहिं जाय |

सुरुण्डन के बिन मुण्ड दिखाय, पड़ै जल मूसलधार अथाय ||

शब्दार्थ सुरुण्डन -धड़ ,मुंड-सिर

पूजा अर्थ सहित

आभार -पंडित रत्न लाल जैन बैनाड़ा जी

अर्थ-जिससे दसों दिशाओं में अन्धकार हो गया,चारों ओर उसने अग्नि लगाई,धड़ के बिना सिर दिखाए और मूसलाधार जल की वर्षा करी !

तबै पद्मावति-कंत धनिंद, नये जुग आय जहां जिनचंद |

भग्यो तब रंक सुदेखत हाल, लह्यो तब केवलज्ञान विशाल ||

शब्दार्थ-कन्ठ-पति,नये-नमस्कार ,

अर्थ- तब पद्मावति और उनके पति धरणेन्द्र दोनों ने आकर नमस्कार किया ,तब वह रंक -कमठ का जीव वहाँ से भाग गया और भगवान् को केवल ज्ञान हुआ !

दियो उपदेश महा हितकार, सुभव्यन बोध समेद पधार |

सुवर्णभद्र जहाँ कूट प्रसिद्ध, वरी शिवनारि लही वसुरिद्ध ||

अर्थ- भगवान् ने दिव्यध्वनि द्वारा भव्य जीवों को बोध कर सम्मेद शिखर जी पहुंचकरवहा की प्रसिद्द सुवर्ण भद्र कूट से मोक्ष लक्ष्मी का वरण किया अर्थात मोक्ष पधारे !

जजूं तुम चरन दोउ कर जोर,प्रभू लखिये अबही मम ओर |

कहै 'बखतावर' रत्न बनाय,जिनेश हमें भव पार लगाय ||

अर्थ-मैं आपके दोनों चरणो की हाथ जोड़कर वंदना करता हूँ प्रभु अब मेरी ओर देखिये!बख्तावर कवि कहते है जिनेन्द्र भगवान् हमको पार लगा दीजिये!

घत्ताः- जय पारस देवं, सुरकृत सेवं, वंदत चर्न सुनागपती |

करुणा के धारी पर उपकारी, शिवसुखकारी कर्महती ||

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा |

अर्थ-पार्श्वनाथ भगवान् की जय हो !देवों के द्वारा जिनकी वंदना करी जाती है,हम उन चरणों की वंदना करते है,वे करुणा धारी है,अन्य जीवों का उपकार करने वाले हैं,मोक्ष सुख को प्रदान करने वाले और कर्मों को नष्ट करने वाले है !

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा |

अडिल्लः- जो पूजै मन लाय भव्य पारस प्रभु नितही |

ताके दुख सब जाय भीति व्यापै नहि कित ही ||

सुख संपति अधिकाय पुत्र मित्रादिक सारे |

अनुक्रमसों शिव लहै, 'रत्न' इमि कहै पुकारे ||

इत्याशीर्वादः (पुष्पांजलिं क्षिपेत्) |

7. समुच्चय चौबीसी पूजा

पांच परमेष्ठी भगवंतों की जय

विश्व धर्म 'शाश्वत जैन धर्म की जय !

संत श्रोमणि विद्यासागर महाराज जय !

षष्टम पट्टाचार्य श्री ज्ञानसागर महाराज जय! आपके उत्साहपूर्वक दर्शन,अभिषेक,पूजा आदि की श्रंखला में मंगलाष्टक,दर्शन,पूजन,अभिषेक विधि के पश्चात ' (आचर्यमाघनन्दिद्वारा विरचित),विनयपाठ,पूजापीठिका,चत्तरिदण्डक,पञ्च कल्याणक अर्घ,पूजा प्रतिज्ञा पाठ,परमऋषि स्वस्तिमंगलपाठ,देव,शास्त्र,गुरु की सम्मुचय पूजा, देव ,शास्त्र, गुरु की पूजा (आचर्य माघनन्दी) के,'नव देवता की पूजा' ,पंचपरमेष्ठी की पूजन के अर्थ एवं भावों सहित प्रस्तुति के बाद, इसी क्रम में आगे' "समुच्चय चौबीसी पूजा "की पूजा अर्थ एवं भावों सहित आरम्भ करते है

वृषभ अजित संभव अभिनंदन,सुमति पद्म सुपार्स जिनराय।

चंद पहुप शीतल श्रेयांस नमि,वासुपूज पूजित सुरराय ॥

विमल अनंत धरम जस उज्जवल,शांति कुंथु अर मल्लि मनाय।

मुनिसुव्रत नमि नेम पार्श्व प्रभु,वर्द्धमान पद पुष्प चढ़ाय ॥

ॐ ह्रीं वृषभादि-वीरान्त चतुर्विंशति-जिनसमूह ।अत्र अवतर अवतर संवौषट्।

ॐ ह्रीं वृषभादि-वीरान्त चतुर्विंशति-जिनसमूह ।अत्र तिष्ठः तिष्ठः ठः ठः।

ॐ ह्रीं वृषभादि-वीरान्त चतुर्विंशति-जिनसमूह ।अत्र ममसन्निहतो भव भव वषट्।

शब्दार्थ-जिनराय-जिनेन्द्र भगवान्,सुरराय-देवताओं के राजा इंद्र ,जस-यश,उज्जवल-स्वच्छ,पद-चरणों में

अर्थ-

इन्द्रों द्वारा पूजित,यशस्वी और पवित्र जिनेन्द्र भगवान् वृषभदेव जी,अजितनाथ जी,संभवनाथ जी,अभिनंदन नाथ जी,सुमतिनाथ जी,पद्मप्रभ जी,सुपार्श्व नाथजी,चन्द्रप्रभजी,पुष्पदंतजी,शीतलनाथजी,श्रेयनाथजी,नमिनाथ जी,वासुपूज्यजी,विमलनाथजी,अनंतनाथजी,धर्मनाथजी,शांतिनाथजी,कुंथुनाथजी,अरनाथजी,मल्लिनाथजी मुनिसुव्रतनाथ जी,नमिनाथजी,नेमि नाथजी,पार्श्वनाथप्रभुजी,वर्द्धमान भगवान् के चरणों में हम पुष्प चढ़ाते है!

पूजा अर्थ सहित

आभार -पंडित रत्न लाल जैन बैनाड़ा जी

ॐ ह्रीं वृषभादि-वीरान्त चतुर्विंशति-जिनसमूह ।यहाँ आइये आइये (आह्वानन)।

ॐ ह्रीं वृषभादि-वीरान्त चतुर्विंशति-जिनसमूह ।यहाँ विराजिये विराजिये (स्थापनं)

ॐ ह्रीं वृषभादि-वीरान्त चतुर्विंशति-जिनसमूह आइये आइये मेरे मन में विराजिये (सन्निधिकरनं)

मुनिमन सम उज्जवल नीर,प्रासुक गंध भरा!भरी कनक कटोरी धीर दीनी धार धरा !

चौबीसों श्री जिनचंद,आनंद कंद सही पद जजत हरत भवफंद,पावत मोक्ष मही॥

ॐ ह्रीं वृषभादि-वीरान्तेभ्यो जन्म जरा,मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा !

शब्दार्थ-मुनिमन-मुनि के मन,सम-के सामान,उज्जवल-स्वच्छ/साफ़,नीर-जल,प्रासुक-शुद्ध/जीववानी और गर्म किये,गंध-सुगंध,भरा-से परिपूर्ण!भरी-भरकर,कनक-स्वर्ण,कटोरी-कटोरी,धीर-लेकर,दीनी-दी,धार-धारा,धरा-अर्पित करता हूँ

चौबीसों =२४,श्री जिनचंद-तीर्थंकर भगवान्,आनंद कंद-आनंदित करने में जड़/मूल के सामान है,सही-वास्तविक (आत्मिक आनंद देने वाले है)!पद-चरणों,की जजत-पूजा करते है,हरत-नष्ट हो कर,भवफंद-संसारचक्र,पावत-प्राप्त हो जाए, मोक्ष-मोक्ष,मही-पृथिवी

ॐ-पंचपरमेष्ठी,ह्रीं-२४ तिर्थंकर भगवानो को नमस्कार कर,वृषभादि-ऋषभ देव से,वीरान्तेभ्यो -महावीर भगवान तक जन्म जरा,मृत्यु -जन्म,वृद्धावस्था और मत्यु के,विनाशनाय-विनाश के लिये,मैं,जलं-जल, निर्वपामीति स्वाहा-अर्पित करता हूँ !

अर्थ-

मैं,मुनियों के मन के सामान निर्मल,स्वच्छ,सुगन्धित प्रासुक (जीवरहित) जल,स्वर्ण कटोरी में भली प्रकार से लेकर,चौबीसों भगवान् के चरणों में तीन धारा देता हूँ!चौबीसों तीर्थंकर वास्तविक(आत्मिक) आनंद उत्पन्न करने वाले है,आनंद के मूल(जड़) है,उनके चरणों की पूजा करने से भक्त का संसार चक्र नष्ट होकर मोक्ष पृथ्वी अर्थात सिद्धालय प्राप्त होता है!

पंचपरमेष्ठीयों और चौबीसों तीर्थंकरों को नमस्कार कर मैं भगवान् ऋषभदेव से भगवान् महावीर तक सब को अपने जन्म,जरा,मृत्यु के विनाश हेतु जल अर्पित करता हूँ !

गोशीर कपूर मिलाय,केशर रंग भरी !जिन चरनन देत चढ़ाये,भव आताप हरी !!

चौबीसों श्री जिनचंद,आनंद कंद सही !पद जजत हरत भवफंद,पावत मोक्ष मही॥

ॐ ह्रीं वृषभादि-वीरान्तेभ्यो भव ताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा !

शब्दार्थ-गोशीर-चंदन,जिन-जिनेन्द्र भगवान्,भव-संसार के,आताप-दुखों,हरी-हरने वाले है

अर्थ-संसार के दुखों को हरने के लिए चंदन,कपूर और केशर जल में मिला कर जिनेन्द्र भगवान् के चरणों में अर्पित करता है !चौबीसों तीर्थंकर वास्तविक (आत्मिक) आनंद उत्पन्न करने वाले है,आनंद के मूल(जड़) है, उन के चरणों की पूजा करने से भक्त का संसार चक्र नष्ट होकर मोक्ष पृथ्वी अर्थात सिद्धालय प्राप्त होता है!

पूजा अर्थ सहित

आभार -पंडित रत्न लाल जैन बैनाड़ा जी

पंचपरमेष्ठीयों और चौबीसों तीर्थंकरों को नमस्कार कर मैं भगवान् ऋषभ देव से भगवान् महावीर तक सब को अपने सांसारिक दुखों के नाश के लिए चंदन अर्पित करता हूँ !

तंदुल सित सोम समान,सुन्दर अनियारे!मुक्ताफल की उनमान,पुंज धरों प्यारे !!

चौबीसों श्री जिनचंद,आनंद कंद सही !पद जजत हरत भवफंद,पावत मोक्ष मही॥

ॐ ह्रीं वृषभादि-वीरान्तेभ्यो अक्षय पद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा !

शब्दार्थ-तंदुल-चावल,सित-स्वच्छ,सोम-चंद्रमा के,समान,सुन्दर अनियारे-साबूत,!मुक्ताफल-मोति,उनमान-सामान,पुंज-समूह,धरों-अर्पित,प्यारे-प्रसन्न करने वाले

अर्थ-मैं चंद्रमा के समान सुंदर,स्वच्छ,साबुत,मोतियों के सामान चमकते चावलों के पुंज बनाकर आपके समक्ष अर्पित करता हूँ!चौबीसों तीर्थंकर वास्तविक आनंद-(आत्मिक) उत्पन्न करने वाले है,आनंद के मूल(जड़) है,उन के चरणों की पूजा करने से भक्त का संसार चक्र नष्ट होकर मोक्ष पृथ्वी अर्थात सिद्धालय प्राप्त होता है!

पंचपरमेष्ठीयों और चौबीसों तीर्थंकरों को नमस्कार कर मैं भगवान् ऋषभ देव से भगवान् महावीर तक सब को अक्षय पदकी प्राप्ति के लिये अक्षत अर्पित करताहूँ!

वरकंज कदंब करंड ,सुमन सुगन्ध भरे।जिन अग्र धरौं गुणमंड,कामकलंक हरे॥ !

चौबीसों श्री जिनचंद,आनंद कंद सही !पद जजत हरत भवफंद,पावत मोक्ष मही॥

ॐ ह्रीं वृषभादि-वीरान्तेभ्यो कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा !

शब्दार्थ -

वर कंज-श्रेष्ठ कमल,कदंब-कदंब फूल,करंड-पिटारा,सुमन-पुष्प,सुगन्ध भरे-सुगंध से परिपूर्ण,जिन-जिनेन्द्र भगवान्,अग्र-समक्ष,धरौं-अर्पित,गुणमंड-गुणों सहित,कामकलंक-काम वासना, हरे-नष्ट करने के लिए

अर्थ- मैं श्रेष्ठ कमल,कदम्ब आदि अनेक प्रकार के सुगन्धित पुष्पों का पिटारा लेकर आया हूँ!समस्त गुणों से मंडित हे जिनेन्द्र भगवान्,अपनी कामवासना रुपी कलंक को नष्ट करने के लिए ये पुष्प आपके चरणों में अर्पित करता हूँ!चौबीसों तीर्थंकर वास्तविक-(आत्मिक) आनंद उत्पन्न करने वाले है,आनंद के मूल(जड़) है,उनके चरणों की पूजा करने से भक्त का संसार रुपी फंदा (चक्र) नष्ट होकर मोक्ष पृथ्वी अर्थात सिद्धालय प्राप्त होता है!

पंचपरमेष्ठीयों और चौबीसों तीर्थंकरों को नमस्कार कर मैं भगवान् ऋषभ देव से भगवान् महावीर तक सब को अपनी कामवासना को नष्ट करने के लिए पुष्प अर्पित करताहूँ!

मन मोदन मोदक,अति सुंदर सध्य बने।रसपूरित प्रासुक स्वाद,जजत क्षुधादि हने॥

चौबीसों श्री जिनचंद,आनंद कंद सही !पद जजत हरत भवफंद,पावत मोक्ष मही॥

ॐ ह्रीं वृषभादि-वीरान्तेभ्यो क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्य निर्वपामिति स्वाहा।

शब्दार्थ-मन-मनको,मोदन-प्रसन्न करने वाले,मोदक-लड्डू,अति सुंदर सध्य-ताज़ा, बने।रसपूरित-रसों से पूरित, प्रासुक-जीवों रहित,स्वाद-स्वाद,जजत-पूजा करने से,क्षुधादि-भूख-प्यास,हने-दूर हो जाए

पूजा अर्थ सहित

आभार -पंडित रत्न लाल जैन बैनाड़ा जी

अर्थ-मन को प्रफुलित करने वाले,रसों से परिपूर्ण सुन्दर ताज़े,जीव रहित,स्वादिष्ट लड्डू आदि से पूजा करने से क्षुधा आदि रोग नष्ट हो जाते है!इसलिए इन से मैं भगवान् की पूजा कर रहा हूँ! चौबीसों तीर्थंकर वास्तविक-(आत्मिक) आनंद उत्पन्न करने वाले है,आनंद के मूल(जड़) है,उनके चरणों की पूजा करने से भक्त का संसार चक्र नष्ट होकर मोक्ष पृथ्वी अर्थात सिद्वालय प्राप्त होता है!

पंचपरमेष्ठीयों और चौबीसों तीर्थंकरों को नमस्कार कर मैं भगवान् ऋषभ देव से भगवान् महावीर तक सब को क्षुधा रोग को नष्ट करने के लिये नैवेद्य अर्पित करता हूँ!

तमखंडन दीप जगाय,धारों तुम आगे।सब तिमिरमोह क्षय जाय,ज्ञान कलाजागे॥

चौबीसों श्री जिनचंद,आनंद कंद सही!पद जजत हरत भवफंद,पावत मोक्ष मही॥

ॐ ह्रीं वृषभादि-वीरान्तेभ्यो मोहन्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामिति स्वाहा।

शब्दार्थ-

तमखंडन-अन्धकार को नष्ट करने के लिए,दीप जगाय-दीप जालाकर,धारों-अर्पित करता हूँ/रखता हो,तुम-आपके,आगे-समक्ष,सब -सारा,तिमिर-अंधकार,मोह-मोह रुपी,क्षय-नष्ट हो,जाय-जाता है,ज्ञान-ज्ञान रुप , कला-किरणे/प्रकाश ,जागे-हो जाता है !

अर्थ-आपके समक्ष अन्धकार को नष्ट करने वाला दीपक जलाकर अर्पित करता हूँ !मेरी भावना है कि मेरा सम -स्त मोह रुपी अन्धकार नष्ट हो कर ज्ञान गुण प्रकाशित हो जाए,इसलिए दीप से आपकी पूजा करता हूँ!चौबीसों तीर्थंकर वास्तविक आत्मिक आनंद उत्पन्न करने वाले है,आनंद के मूल(जड़) है,उनके चरणों की पूजा करने से भक्त का संसार रुपी चक्र नष्ट होकर मोक्ष पृथ्वी अर्थात सिद्वालय प्राप्त होता है!

पंचपरमेष्ठीयों और चौबीसों तीर्थंकरों को नमस्कार कर मैं भगवान् ऋषभ देव से भगवान् महावीर तक सब को मोहान्धकार को नष्ट करने के लिये दीप अर्पित करताहूँ!

दशगंध हुताशन माहिं,हे प्रभु खेवत हों।मिस धूम करम जरि जाहिं,तुम पद सेवत हो ॥

चौबीसों श्री जिनचंद,आनंद कंद सही!पद जजत हरत भवफंद,पावत मोक्ष मही॥

ॐ ह्रीं वृषभादि-वीरान्तेभ्यो अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्वपामिति स्वाहा।

,शब्दार्थ-दशगंध-दस प्रकार की सुगंधित वस्तुए मिलाकर,हुताशन-अग्नि मे,माहिं-मै,हे प्रभु खेवत-खेता हों-हूँ, मिस-इस,धूम-धुए,करम-कर्म,जरि-जल,जाहिं-जायेगे,तुम-आपके,पद-चरणो की, सेवत हो-पूजा करने से

अर्थ-हे प्रभु!मैं दस सुगन्धित वस्तुओं को कूटकर बनी इस धुप को अग्नि में खेता हूँ !इससे उत्पन्न धुए से मेरे कर्म जल/नष्ट हो जायेंगे इसलिए आपके चरणों की धुप जलाकर पूजा करता हूँ!चौबीसों तीर्थंकर वास्तविक-आत्मिक आनंद उत्पन्न करने वाले है,आनंद के मूल(जड़) है,उनके चरणों की पूजा करने से भक्त का संसाररुपी फंदा (चक्र) नष्ट होकर मोक्ष पृथ्वी अर्थात सिद्वालय प्राप्त होता है!

पंचपरमेष्ठीयों और चौबीसों तीर्थंकरों को नमस्कार कर मैं भगवान् ऋषभ देव से भगवान् महावीर तक सब को अपने कर्मों को नष्ट करने के लिये धुप अर्पित करताहूँ!

पूजा अर्थ सहित

आभार -पंडित रत्न लाल जैन बैनाड़ा जी

शुचि-पक्व-सरस-फल सार, सब ऋतु के लायो।देखत दृग मनको प्यार,पूजत सुख पायो॥

चौबीसों श्री जिनचंद,आनंद कंद सही!पद जजत हरत भवफंद,पावत मोक्ष मही॥

ॐ ह्रीं वृषभादि-वीरान्तेभ्यो मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामिति स्वाहा।

शब्दार्थ-शुचि-पवित्र,पक्व-पक्के हुए,सरस-रसीले,फलसार-श्रेष्ठफल,दृग नेत्रों,मनको-मनको,प्यार-प्रफ्फुलित करने वाले,पूजत सुख पायो-पूजने से सुख की प्राप्ति हुई!

अर्थ-मैं,पवित्र,पक्के,रसीले,श्रेष्ठ,सब ऋतु के फल लाया हूँ इनको देखने से आँखे और मन प्रफ्फुलित हो रहे है, इन फलों के द्वारा आपकी पूजा कर रहा हूँ जिससे मुझे बड़ा सुख मिल रहा है !चौबीसों तीर्थंकर वास्तविक-आत्मिक आनंद उत्पन्न करने वाले है,आनंद के मूल(जड़) है,उनके चरणों की पूजा करने से भक्त का संसाररुपी फंदा (चक्र) नष्ट होकर मोक्ष पृथ्वी अर्थात सिद्धालय प्राप्त होता है!

पंचपरमेष्ठीयों और चौबीसों तीर्थंकरों को नमस्कार कर मैं भगवान् ऋषभ देव से भगवान् महावीर तक सब को मोक्ष फल प्राप्ति के लिए फल अर्पित करताहूँ!

जल फल आठों शुचिसार,ताको अर्घ करों।तुमको अरपों भवतार,भवतरि मोक्ष वरों॥

चौबीसों श्री जिनचंद,आनंद कंद सही!पद जजत हरत भवफंद,पावत मोक्ष मही॥

ॐ ह्रीं वृषभादि-वीरान्तेभ्यो अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घं निर्वपामिति स्वाहा।

शब्दार्थ-जल-जल से,फल-फल तक,आठों-आठों,शुचिसार-पवित्र और श्रेष्ठ,ताको द्रव्य का,अर्घ करों-अर्घ बना कर,तुमको-आपको,अरपों-अर्पित करता हूँ,भवतार-संसार सागर से तरने के लिए,भवतरि-तर कर,मोक्ष-मोक्ष वरों-प्राप्त करे

अर्थ-जल,से फल तक आठो पवित्र और श्रेष्ठ द्रव्य से अर्घ बनाकर लाया हूँ,मै संसार सागर से तर कर मोक्ष प्राप्ति के लिए आपको अर्घ्य अर्पित करता हूँ!चौबीसों तीर्थंकर वास्तविक आत्मिक आनंद उत्पन्न करने वाले है,आनंद के मूल(जड़) है,उनके चरणों की पूजा करने से भक्त का संसाररुपी फंदा (चक्र) नष्ट होकर मोक्ष पृथ्वी अर्थात सिद्धालय प्राप्त होता है!

पंचपरमेष्ठीयों और चौबीसों तीर्थंकरों को नमस्कार कर मैं भगवान् ऋषभदेव से भगवान् महावीर तक सब को अनर्घ्य पद की प्राप्ति के लिए अर्घ अर्पित करता हूँ !

विशेष-क्या और क्यों पूजा में अष्ट द्रव्यों को अर्पित करने के यही क्रम अनिवार्य है ?

जल,चंदन,अक्षत,पुष्प,नैवेद्य,दीप,धुप,अष्ट द्रव्यों के अर्पित करने का यही क्रम आवश्यक है क्योकि ये पूजाये भगवान् के पञ्च कल्याणकों को क्रम को बताने वाली है !

पूजा के प्रारम्भ में हम भगवान् को कहते है;आइये आइये,विराजिये,विराजिये,ये गर्भ कल्याणक का प्रतीक है !भगवान् आये और माता जी के गर्भ में विराजमान हुए !

पूजा अर्थ सहित

आभार -पंडित रत्न लाल जैन बैनाड़ा जी

फिर मेरुपर्वत पर बालक तीर्थंकर का जन्म होते ही,फिर इंद्र मेरुपर्वत पर ले जाकर पहले जल से फिर चन्दन से अभिषेक करते है,उसके बाद इंद्राणियों पहले उनके शरीर को मोतियों(अक्षत) और पुष्पों से सजाती है,जो कि भगवान् के जन्म कल्याणक के प्रतीक क्रियाये है!

तप कल्याणक में भगवान् जब आहार के लोए उठते है तब हम नैवेद्य अर्पित करते है,नैवेद्य तप कल्याणक का प्रतीक है

ज्ञान कल्याणक में मोहनीय कर्म का नाश हो जाता है,केवलज्ञान हो जाता है,इसके प्रतीक स्वरुप हममोहान्धकार के क्षय के प्रतीक रूप दीप अर्पित करते है !

अष्ट कर्मों के नष्ट होने के प्रतीक स्वरुप धुप अर्पित करते है फिर अमूल्य सिद्ध पद की प्राप्ति के प्रतीक स्वरुप फल और अर्घ्य अर्पित करते है !

इसीलिए ये अष्ट द्रव्य पूजन में इसी क्रम से अर्पित करने आवश्यक है !

जयमाला

श्रीमत तीर्थनाथ पद,माथ नाय सहित हेत।गाऊँ गुणमाला अबै,अजर अमर पद देत ॥

शब्दार्थ-श्रीमत-अंतरंग(अनन्तचतुष्टाय) और बहिरंग(समवशरण) लक्ष्मी से युक्त,तीर्थनाथ-तीर्थंकर,पद-चरणो को ,माथ-मस्तक,नाय-झुकाकर,हित हेत-कल्याणके लिये

अर्थ-अनन्त चतुष्टाय और बहिरंग(समवशरण) लक्ष्मी से युक्त तीर्थंकरो के चरणो मे मस्तक नवाकर अपने कल्याणके लिये,अब चौबीसों तिर्थंकरों का गुणानुवाद ,गुणो के समूह का गान करता हूँ जिससे बुढ़ापे रहित अमर (मरन रहित) मोक्ष पद की प्राप्ति होती हैं ।

जय भवतम भंजन जनमनकंजन,रंजन दिनमनि स्वच्छकरा।.

शिवमग परकाशक,अरिगण नाशक चौबीसौं जिनराज वरा॥

शब्दार्थ-जय-भगवन् जय हो, भवतम-संसार रूपि अंधकार,भंजन-नष्ट करने वाले,जन-भव्य जीवो के,मन-मन रूपी,कंजन-कमलो को,रंजन-विकसित करने के लिये,दिनमनि-सूर्य,स्वच्छ करा-स्वच्छ किरणो वाले,

शिवमग-मोक्षमार्ग के,परकाशक-बतानेवाले,अरिगण-शत्रुओ के समूह/अष्टकर्मो को,नाशक-नष्ट करने वाले हो चौबीसौं जिनराज-चौबीसौं भगवान्, वरा-श्रेष्ट॥

अर्थ-भगवन् जय हो,आप संसार रूपि अंधकार को नष्ट करने वाले है,भव्य जीवो के,मन रूपी कमलो को विकसित करने के लिये,स्वच्छ किरणो युक्त सर्य के समान है,आप मोक्षमार्ग के प्रकाशक अर्थात बताने वाले हैं,शत्रुओ के समूह,अष्टकर्मो के नाशक,आप चौबीसौं श्रेष्ट भगवान् है।

छंदपद्धरी

जय ऋषभदेव ऋषिगन नमंत।जय अजित जीत वसु अरि तुरंत।

जय संभव भवभय करत चूर।जयअभिनन्दन आनन्दपूर॥

पूजा अर्थ सहित

आभार -पंडित रत्न लाल जैन बैनाड़ा जी

शब्दार्थ-वसु अरि -आठ शत्रु

अर्थ-ऋषभदेव भगवान् की जय हो!,जिन्हे ऋषिगन नमन करते है।अजितनाथ भगवान की जय हो जिन्होने अष्ट कर्मशत्रु को जीत लिया है।संभवनाथ भगवान आपकी जय हो!, जो कि संसार के भय को चूर कर देते है।अभिनन्दनाथ भगवान आपकी जय हो आप आतमानन्द से परिपूर्ण है।

जय सुमति सुमति दायक दयाल।जय पद्म पद्म दुति तन रसाल।

जय जय सुपास भवपास नाश।जय चंद चंद तन दुति प्रकाश॥

शब्दार्थ-सुमति-सदबुद्धि,दायक-प्रदान करने वाले,दुति-कांति,पद्म-लालकमल के समान,तन-शरीर,रसाल -अत्यंत सुंदर है भवपास-संसार रूपी जाल को नाश करने वालेहैं ,

अर्थ-सुमतिनाथ भगवान जी की जय हो!आप सद्बुद्धि प्रदान करनेवाले है।पद्म प्रभु भगवान जी की जय हो जिनके शरीर की कांति लाल कमल के समान अत्यंत सुंदर है।सुपार्श्वनाथ भगवान् की जय हो जिन्होने संसार रूपी जाल को नाश कर लिया है।चंद्र प्रभ भगवान् की जय हो जिन की शरीर की कांति का प्रकाश चंद्रमा के समान है श्वेत वर्ण के है।

जय पुष्पदंत दुति दंत सेत।जय शीतलशीतल गुननिकेत।

जय श्रेयनाथ नुत सहसभुज्ज।जय वासव पूजित वासुपूज्य॥

शब्दार्थ-दुति दंत सेत-सुन्दर चमकते दांतों की पंक्ति वाले,शीतल गुण निकेत-शीतलता के भण्डार,

नुत-मस्तक झुके,सहसभुज्ज-हज़ार भुजाओं वाले इंद्रा,वासव-इन्द्रों और देवों द्वारा,

अर्थ-सुन्दर दांतों की पंक्ति वाले भगवान् पुष्पदंत की जय हो !शीतलता के भण्डार शीतलता प्रदान करने वाले भगवान् शीतलनाथ की जय हो !ऐसे श्रेयनाथ भगवान् कि जय !जिनके समक्ष सहस्र भुजाओं वाले इंद्रा का मस्तक झुका रहता है!इन्द्रो द्वारा पूजित वासुपूज्य भगवान् की जय हो !

जय विमल विमल पददेनहार।जय जय अनन्त गुनगन अपार।

जय धर्म धर्म शिव शर्म देत।जय शांति शांति पुष्टिकरेत॥

शब्दार्थ-विमल पददेनहार-मल रहित अर्थात मोक्ष पद देने वाले,गुनगन-गुणों के समूह,अपार-अपार,शिव शर्म देत-मोक्ष सुख देने वाले

अर्थ-मल रहित अर्थात मोक्ष पद देने वाले भगवान् विमलनाथ की जय हो!अनंत गुणों के अपार समूह के धारक भगवान् अनंतनाथ की जय हो!धर्म से मोक्ष सुख प्रदान करने वाले धर्मनाथ भगवान् की जय हो!शांति की पुष्टि करने वाले भगवान् शांतिनाथ की जय हो !

जय कुंथु कुंथुवादिक रखेय।जय अर जिनवसु अरि छयकरेय।

जय मल्लि मल्ल हतमोहमल्ल।जय मुनिसुव्रत व्रतशल्लदल्ल॥

पूजा अर्थ सहित

आभार -पंडित रत्न लाल जैन बैनाड़ा जी

शब्दार्थ-कुंथुवादिक-चींटी आदि जीवों की,रखेय-रक्षा करने वाले(अहिंसा परमोधर्म के उपदेशक) जिन-जिनेन्द्र भगवान् ने,अरि-शत्रु(अष्ट कर्मों)मल्ल-बलशाली,हतमोहमल्ल-मोह मल्ल का क्षय कर,व्रत शल्ल दल्ल-व्रतों की शल्ल का निवारण कर

अर्थ-चींटी आदि जीवों के रक्षक(अहिंसा परमोधर्म के उपदेशक),भगवान् कुंथुनाथ की जय हो!अष्टकर्म रूपी शत्रु को नष्ट करने वाले भगवान् अरनाथ जी की जय हो!मोह रुपी मल्ल को नष्ट करने वाले बलशाली मल्लि नाथ भगवान् की जय हो !व्रतों के शॉल को नष्ट करने वाले मुनिसुव्रत भगवान् की जय हो !

जय नमि नित वासवनुत सपेम,जय नेमिनाथ वृषचक्रनेम।

जयपारस नाथ अनाथ नाथ।जय वर्द्धमान शिवनगर साथ॥

शब्दार्थ-नित-नित्य/सदैव,वासव-इंद्र,नुत-मस्तक झुककर,सपेम-भक्ति भाव से,वृष चक्र नेम-धर्म चक्र के धुरे के समान,अनाथ नाथ-अनाथों के नाथ,शिव नगर-मोक्ष तक,साथ-साथ देने वाले अर्थात मार्ग दर्शन करने वाले !

अर्थ-नमिनाथ भगवन की जय हो जिनके समक्ष इंद्र और देव भक्ति भाव से मस्तक झुकाये रहते है!धर्मचक्र के धूरे के सामान (रथ के पहिये जिस प्रकार धुरे पर चलते है,उसी प्रकार धर्मचक्र के भगवान् नेमिनाथ धुरे है) भगवान् नेमिनाथ की जय हो!अनाथों के नाथ भगवान् पार्श्वनाथ की जय हो! मोक्षधाम तक साथ देने वाले अर्थात मोक्ष तक मार्ग का उपदेश देने वाले भगवान् महावीर की जय हो !

चौबीसों जिनंदा आनंद कंदा,पापनिकंदा सुखकारी।

तिनपद जुगचंदा उदय अमंदा,वासववंदा हितकारी॥

शब्दार्थ-चौबीसों-चौबीसों ,जिनंदा-तीर्थंकर भगवान्,आनंद-आनंद,कंदा-भण्डार,पाप निकंदा-पापों को नष्ट करने वाले है,सुखकारी-सुख प्रदान करने वाले है,तिन -उनके,पदजुग-दोनों चरण,चंदा-चंद्रमा के, उदय-उदीयमान, अमंदा-तीव्र प्रकाश से,वासव-इन्द्रों द्वारा,वंदा-वंदनीय है,हितकारी-कल्याणकारी है !

अर्थ-चौबीसों तीर्थंकर भगवान्,आनंद के भण्डार,आनंद प्रदाता है,पापों को नष्ट करने वाले ,सुख प्रदान करने वाले है!उनके दोनों चरण रुपी चंद्रमा तीव्र प्रकाश से उदीयमान है(इनके चरणों से महान प्रकाश निकलता रहता है),इन्द्र इनके दोनों चरणों की वंदना करते है जो कि हितकारी हैं!(जो उनके चरणों की वंदना करते है उनका कल्याण हो जाता है)!

ॐ ह्रीं श्री वृषभादि-चतुर्विंशति जिनेभ्यो महार्ध्यं निर्वपामिति स्वाहा।

पञ्च परमेष्ठी और चौबीसों तीर्थंकर को नमस्कार कर के बहिरंग और अंतरंग सुख के धारक वृषभादि चौबीसों जिनेन्द्र भगवान् को महाघ्र्य अर्पित करता हूँ !

भुक्ति मुक्ति दातार,चौबीसौं जिनराजवर।तिनपद मन वचधार,जो पूजै सो शिव लहै॥

शब्दार्थ-भुक्ति-भोगो को,लहै-प्राप्त करते हैं !

अर्थ-चौबीसों तीर्थंकर भोगो और मुक्ति दोनों को देने वाले है!(उनकी भक्ति पूजन आदि करने से सांसारिक भोगो और मोक्ष के भी प्राप्ति होती है)!उनके चरणों को जो मन वचन से पूजते है वे मोक्ष प्राप्त करते हैं !

पूजा अर्थ सहित

आभार -पंडित रत्न लाल जैन बैनाड़ा जी

' इत्यार्शीवाद'

8. विदेह क्षेत्र के बीस श्री तीर्थंकर की पूजा

पंचपरमेष्ठी भगवान् की जय !

दीप ढाई मेरु पन सब तीर्थंकर बीस !तिन सब की पूजा करूँ मन वच तन धरी शीस !!

ॐ ह्रीं विदयमानविंशतितीर्थंकरा:अत्र अवतर अवतर संवौषट् !

ॐ ह्रीं विदयमानविंशतितीर्थंकरा:अत्र तिष्ठ:तिष्ठ: ठ:ठ:!

ॐ ह्रीं विदयमानविंशतितीर्थंकरा:अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् !!

शब्दार्थ -दीप ढाई-जम्बूद्वीपघातकी खंड द्वीप और अर्द्ध पुष्कर द्वीप,अर्थात मनुष्य लोक ,

अर्थ-

ढाई द्वीप और मेरु(समस्त मनुष्य लोक में सदा विराजमान बीस तीर्थंकरों को मन,वच,काय से शीश नवा कर पूजा करता हूँ !

ॐ ह्रीं विदयमान बीस तीर्थंकरा: यहाँ आइये आइये संवौषट् ! (आह्वानन)

ॐ ह्रीं विदयमानबीस तीर्थंकरा:यहाँ बैठिए बैठिये ठ:ठ:!(स्थापनं)

ॐ ह्रीं विदयमान बीसतीर्थंकरा:यहाँ मेरे मन में मेरे निकट भव भव के लिए विराजिये (संनिघम) !!

इंद्र-फनिन्द्र नरेन्द्र वंद्य पद निर्मल धारी !शोभनीक सार गुण हैं अविकारी !

क्षीरोदधि सम नीर सों (हों) पूजों तृषा निवार,सीमंधर जिनराज आदि दे बीस विदेह मँझार !!

श्री जिनराज हो भव तारण तरण जिहाज!!

ॐ ह्रीं विदयमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा !

शब्दार्थ -इंद्र-देव और इंद्र,फनिन्द्र -धरणेन्द्र,नरेंद्र -मनुष्य के इंद्र -चक्रवर्ती ,

तीन लोक के जीव पाप -आताप सताये,तिनको साता दाता शीतल वचन सुहाये!

पूजा अर्थ सहित

आभार -पंडित रत्न लाल जैन बैनाड़ा जी

बावनचंदनसोंजजूँ (हो) भ्रमन-तपन निरवार !सीमंधर जिनराज आदि दे बीस विदेह मँझार !!

श्री जिनराज हो भव तारण तरण जिहाज!!

ॐ ह्रीं विदयमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो भवाताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा !

यह संसार अपार महा सागर जिनस्वामी,तातैं तारे बड़ी ,भक्ति नौका जग नामी !!

तंदुल अमल सुगंधसो (हो) पूजों तुम गुणसार ,सीमंधर जिनराज आदि दे बीस विदेह मँझार !!

श्री जिनराज हो भव तारण तरण जिहाज!!

ॐ ह्रीं विदयमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो अक्षत पद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा !

भाविक-सरोज विकाश निंद्य -तमहर रवि से हो!जति श्रावक आचार कथन को तुमहीं बड़े हो !!

फूल सुवास अनेक सों (हो) पूजों मदन प्रहार!सीमंधर जिनराज आदि दे बीस विदेह मँझार !!

श्री जिनराज हो भव तारण तरण जिहाज!!

ॐ ह्रीं विदयमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो काम बाण बिध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा !

काम-नाग विषधाम नाश को गरुड कहे हो ! छुधा महादव -ज्वाल तास को मेघ लहे हो

नेवज बहु घृत मिष्ट सों (हो)पूजों भूखबिडार सीमंधर जिनराज आदि दे बीस विदेह मँझार !!

श्री जिनराज हो भव तारण तरण जिहाज!!

ॐ ह्रीं विदयमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्य निर्वपामीति स्वाहा !

उद्यम होन न देत सर्व जगमाहिं भयों

मोह महातम घोर नाश परकाश कर्यो है॥

पूजों दीप प्रकाश सों(हो) ज्ञान ज्योति करतार॥

सीमंधर जिनराज आदि दे बीस विदेह मँझार !!

श्री जिनराज हो भव तारण तरण जिहाज!!

ॐ ह्रीं विदयमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा !

कर्म आठ सब काठ भार विस्तार निहारा !ध्यान अगनिकर प्रगट सरब कीनो निरवार !!

धुप अनुपम खेवते (हो) दु:ख जलै निर्धार !सीमंधर जिनराज आदि दे बीस विदेह मँझार !!

श्री जिनराज हो भव तारण तरण जिहाज!!

पूजा अर्थ सहित

आभार -पंडित रत्न लाल जैन बैनाड़ा जी

ॐ ह्रीं विदयमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो अष्ट कर्म विध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा !

मिथ्यावादी दुष्ट लोभ हंकार भरे हैं !सबको छिन में जीत जैन के मेरु खरे हैं !!

फल अतिउत्तम सोजजो (हो) वांछित फल-दातार !!सीमंधर जिनराज आदि दे बीस विदेह मँझार !!

श्री जिनराज हो भव तारण तरण जिहाज!!

ॐ ह्रीं विदयमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो मोक्ष फल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा !

शब्दार्थ -मिथ्यावादी-वस्तु स्वरुप को गलत बताने वाले ,तारण -तरण =पार होने वाले और पार करने वाले है,

अर्थ-

संसार में वस्तु स्वरुप से अज्ञानी दुष्ट लोभ और अहंकार से भरे है,किन्तु भगवन आपने इन्हे क्षण भर मे जीत कर आपके बताये सिद्धांत तीनों लोक में मेरु के सामान सर्व मान्य है !मैं आपकी अत्यंत उत्तम फलों से पूजा करता हूँ,आप वांच्छित फलों(भक्त सांसारिक और परमार्थिक मोक्ष सुख चाहता है,आप दोनों को देने वाले है) के दाता है ! संसार को स्वयं पार करने वाले और अन्यों को पार करने वाले जहाज के सामान सीमंधर आदि विदेह के बीस तीर्थंकर भगवन की हम पूजा करते है !

ॐ ह्रीं विदयमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो मोक्ष फल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा !

जल फल आठों दर्व अरघ कर प्रीति धरी है !गणधर इन्द्रनहू तैं थुति पूरी न करी हैं !!

"धानत " सेवक जानके (हो) जग ते लेहु निका

सीमंधर जिनराज आदि दे बीस विदेह मँझार !!

श्री जिनराज हो भव तारण तरण जिहाज!!

ॐ ह्रीं विदयमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा !

शब्दार्थ-प्रीती-भक्ति भाव से ,धरी -लेकर,नहु -के द्वारा ,थुति -स्तुति

अर्थ -जल से लेकर फल तक आठों द्रव्यों का अर्घ बना कर मैं बड़ी भक्ति भाव से आया हूँ !गणधर और इन्द्रों के द्वारा भी आपकी स्तुति पूरी नहीं हो सकती (क्योकि वे भी आपके अनंत गुणों को कहने में असमर्थ है,फिर भी मैंने अपनी शक्ति और ज्ञान के अनुसार आपकी भक्ति करी है)!ध्यानात राय जी कहते है भगवान्! मैं आप का अज्ञानी सेवक हूँ,यह जानकार मुझे संसार से निकाल लीजिये!मैं संसार को स्वयं पार करने और अन्यों को पार कराने वाले जहाज के सामान,सीमंधर आदि विदेह में विराजमान बीस तीर्थंकर भगवानों की पूजा करता हूँ !

ॐ ह्रीं विदयमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा !

जयमाला

ज्ञान सुधाकर चंद,भविक खेत हित मेघ हो !भ्रम-तम भान अमंद -तीर्थंकर बीसों नमो!!

पूजा अर्थ सहित

आभार -पंडित रत्न लाल जैन बैनाड़ा जी

शब्दार्थ- ज्ञान-ज्ञान,सुधाकर- अमृत को फ़ैलाने वाले,अर्थात करने वाले,भविक खेत-भव्य जीव रुपी खेत,हित-कल्याण, भ्रम-तम,अज्ञान रूपी अन्धकार,भान-सूर्य के सामान,अमंद-प्रकाशमान,तेजस्वी

अर्थ-आप (बीस तीर्थंकर) ज्ञान रुपी अमृत को फ़ैलाने वाले चंद्रमा के सामान है,(ज्ञान चंद्रमा से टपकता है, आपकी दिव्यध्वनि के द्वारा अनादि काल से अनंत काल तक ज्ञान रुपी अमृत लोक में फ़ैल रहा है),आप भव्य जीव रुपी खेतों के कल्याण के लिए मेघ के सामान है(मेघ द्वारा वर्षा होते ही खेत में खेती अच्छी होने लगती है -,उसी प्रकार आप भव्य जीवों के कल्याण के लिए मेघ के सामान है !)ज्ञान रुपी अन्धकार को नष्ट करने के लिए आप तेजस्वी सूर्य के सामान हो ,ऐसे बीस तीर्थंकरों को हम नमस्कार करते हैं !

(चौपाई)

सीमंधर सीमंधर स्वामी ,जुगमंधर जुगमंधर स्वामी !बाहु बाहु जिन जग-जन तारे,करम सुबाहु बाहुबल दारे!!

शब्दार्थ -सीमांधर -सीमाओं को धारण करने वाले,सीमंधर स्वामी-सीमंधर स्वामी ,जुगमंधर-युगोंयुगों तक भव्य जीव आपका नाम स्मरण करते है,बाहु-बहे पकड़कर ,बाहु -बहु स्वामी ,जग -संसार के,जन-प्राणियों ,तारे-पार लगाया है ,सुबाहु-सुबाहु स्वामी ,बाहुबल -अपनी भुजाओं के पराक्रम से ,कर्म-अष्ट कर्मों ,दारे-नष्ट कर दिया है

अर्थ-आप सीमाओं को धारण करने वाले है-सीमंधर स्वामी ,जुगमंधर स्वामी आपका नाम युगो तक भव्य जीव स्मरण करते है ,बाहु स्वामी जी ने संसार के प्राणियों को बाहे पकड़कर पार लगाया है ,सुबाहु स्वामी -जिन्होंने अपने बाहु बल से अष्ट कर्मों को नष्ट कर दिया है!

जात सुजातं केवलज्ञानं ,स्वयंप्रभु स्वयं प्रधानं !ऋषभानन ऋषि भानन दोषं ,अनंतवीरज वीरज कोषं !

शब्दार्थ- सुजातं -सुजात स्वामी,जात -उतपन्नकर लिया है केवलज्ञानं -जिन्होंने केवल ज्ञान को ,स्वयं प्रभु-स्वयं प्रभु स्वामी ,प्राधनम्=प्रधान है,-ऋषभानन - ऋषभानन स्वामी ,ऋषि-संतूर ,भानन -नष्ट करने के लिए , दोषं -दोषों को ,अनंतवीरज -अनन्तवीर स्वामी,वीरज-वीर के, कोषं-भण्डार/ख़ज़ाने है

अर्थ- सुजात स्वामी अपने केवल ज्ञान उत्पन्न कर लिया है, स्वयं प्रभु स्वामी आप तो प्रधान है , ऋषभानन स्वामी आप ऋषियों को दोषों को नष्ट करने के लिए संतूर के सामान है,अनन्तवीर स्वामी आप वीर के ख़ज़ाने अर्थात अनंत बल के स्वामी है !

सौरी प्रभ सौरीगुणमालं ,सुगुण विशाल विशाल दयालं !वज्रधर भवगिरी वज्जर हैं ,चंद्रानन चन्द्रानन वर हैं!!

शब्दार्थ-सौरी प्रभ-सूर्य प्रभु,सौरीगुणमालं- सूर्यके गुणों की माला के सामान है,विशाल सुगुण-विशाल कीर्ति , विशाल-अत्यंत,दयालं-दयालु है ,वज्रधर-वज्रधर स्वामी ,भव गिरी-संसार रुपी पर्वत के लिए,वज्जर -वज्र के सामान ,चन्द्रानन-चन्द्रानन स्वामी ,चन्द्रानन=चन्द्र+आनन-जिनका मुख चंद्रमा के सामान है,

अर्थ- सूर्यप्रभुस्वामी आप सूर्यके गुणों की माला के सामान है,विशाल कीर्ति भगवन आप अत्यंत दयालु है, वज्रधर स्वामी आप संसार रुपी पर्वत के लिए वज्र के सामान है,(जैसे वज्र से पर्वत नष्ट हो जाता है उसी प्रकार आप भव्य जीवों के संसार चक्र को नष्ट करने वाले है),चन्द्रानन स्वामी आपका मुख चंद्रमा के सामान है आपकी जय हो !

भद्र बाहु भद्रनि के करता ,श्री भुजंग भुजंगम हरता !ईश्वर सबके ईश्वर छाजै ,नेमि जस नेमि विराजैं !!

पूजा अर्थ सहित

आभार -पंडित रत्न लाल जैन बैनाड़ा जी

शब्दार्थ- भद्रनि-कल्याणों को,भुजंगम -मिथ्यात्व रुपी सर्प,छाजै-सुशोभित हैं ,जस-यश

अर्थ-भद्र बाहु स्वामी आश्रितों का कल्याणों को करने वाले है,श्री भुजंगम स्वामी मिथ्यात्व रुपी सर्प को हर कर,जीवों को सम्यक्त्व प्राप्त करने वाले है!ईश्वर स्वामी आप सबके ईश्वर है और बड़े सुशोभित है,समवशर विभूति से विराजमान है!नेमी स्वामी,आपका यश तीनों लोक में विराजमान रहता है!

वीरसैन वीर जग जानैं ,महा भद्र महा भद्र बखानैं !नमों जसोधर जसधरकारी ,नमों अजित वीराज बलधारी !!

शब्दार्थ-महा भद्र -महान कल्याण ,जसोधर -देव यश स्वामी ,जसधरकारी -यश के धारक,

अर्थ-वीरसैन स्वामी सारा संसार जानता है आप अत्यंत बलवान,अनंत बल के धारी है!महाभद्र स्वामी आप महान कल्याण के करने वाले है ,देव यश स्वामी आप महान यश धारक है !अजित वीर स्वामी आप अन्नत बल के धारी है ऐसे बीस तीर्थंकर भग्गवां मैंने आपके नाम के अनुसार स्तवन किया !

धनुष पांचसैं काय विराजैं,आयु कोड़ी पूरब सब छाजै !समवशरण शोभित जिनराजा,भव जल तारन तरन जिहाजा !!

अर्थ-

विदेह क्षेत्र में विराजमान तीर्थंकरो के शरीर की अवगाहनना ५०० धनुष अर्थात ३००० फिट है, और इन सब की आयु १ करोड़ पूर्व होती है (१ पूर्व= ८४लाख*८४लाख वर्ष)!हे भगवान् आप सभी समवशरण से सुशोभित !संसार रुपी सागर को पार करने और पार कराने के लिए आप जहाज के सामान है

विदेह क्षेत्र के न्यूनतम बीस और अधिकतम १६० तीर्थंकरों के शरीर की अवगाहनना पांच सौ धनुष होती है !आचार्यों ने तो यहाँ तक कहा है कि विदेह क्षेत्र में समस्त भाव लिंगी साधू कि अवगाहनना नियम से ५०० धनुष ही होती है इससे कम नहीं होती है !

सम्यक् रत्नत्रय -निधि दानी ,लोकालोक प्रकाशक ज्ञानी !

शत इंद्रनि कर वंदित सो हैं,सुर नर पशु सबके मन मोहैं !!

शब्दार्थ- दानी-देने वाले है ,शत इंद्रनि -सौ इंद्र,कर-द्वारा

अर्थ-आप सम्यक रत्नत्रय रुपी खजाने को देने वाले है (जो आपके दर्शन करते है,दिव्य ध्वनि सुनते है ,उनको रत्न त्रय की प्राप्ति आसानी से हो जाती है) लोकालोक को केवल ज्ञान से प्रकाशित करने वाले केवलज्ञानी है,

आप की सेवा मे १०० इंद्र सदैव आपकी वंदना करते है !आप सब देवों ,इन्द्रों,मनुष्यों और पशुओं को मोहित करने वाले है !

तुमको पूजें बंदना,करैं धन्य नर सोय !ध्यायन्त सरधा मन धरै,सो भी धर्मी होय !!

ध्यायन्त राय जी कहते है कि जो नर आपकी मन से श्रद्धा पूर्वक पूजा वंदना करते है वे मनुष्य धन्य हो जाते है वे सभी धर्मी हो जाते है !

ॐ ह्रीं विदयमानविंशतितीर्थंकरेभ्योनऽर्घ्य पद प्राप्तये महाअर्घं निर्वपामीति स्वाहा !

पूजा अर्थ सहित

आभार -पंडित रत्न लाल जैन बैनाड़ा जी

विशेष-

१ -भरत और ऐरावत क्षेत्रों के तीर्थंकर नियम से पांच कल्याणकों वाले होते है क्योकि एक भव में वे तीर्थंकर प्रकृति का बंध सोलह कारण भावनाए भाकर करते है,उस भव से नियम से तीसरे भव में मनुष्य भव धारण कर पाँचों गर्भ,जन्म,तप,ज्ञान और मोक्ष कल्याणक वाले होकर मोक्ष प्राप्त करते है!तीर्थंकर प्रकृति का बंध कर नियम से अगले भव में वे नरक अथवा स्वर्ग में जन्म लेते है!विदेह क्षेत्र के तीर्थंकर २,३,५ कल्याणक वाले होते है!क्योकि वहाँ हम आप जैसे गृहस्थ भी तीर्थंकर प्रकृति का बंध,गृहस्थ अवस्था अथवा मुनिअवस्था में कर सकता है तो ऐसे जीवों के क्रमश दीक्षा,ज्ञान और मोक्ष ३ कल्याणक और ज्ञान तथा मोक्ष २ कल्याणक भी होते है!

२-विदेह क्षेत्र अथवा भारत क्षेत्र ,किसी भी क्षेत्र के तीर्थंकर हो उन्हें कम से कम प्रिटठाक वर्ष अर्थात ३ से ९ वर्ष तक समझिये ८ वर्ष तक विहार कर उपदेश देना ही होता है !उनको केवल ज्ञान प्राप्त करने के अन्तर्मुहत के अंदर मोक्ष प्राप्त नहीं हो सकता क्योकि इन्होने तीर्थंकर प्रकृति के बंध में कारण १६ कारण भावनाये भाते हुए विश्व के जीवों के कल्याण की भावना भी भायी होती है उसकी पूर्ती के लिए इन्हे विहार कर उपदेश देना आवश्यक है!सामान्य केवली तो मोक्ष केवल ज्ञान प्राप्ति के बाद अन्तर्मुहत में हो सकता है !

३-विदेह क्षेत्र में जन्म लेने वाले अधिकाँश जीव देह रहित हो जाते है अर्थात मोक्ष प्राप्त करते है क्योकि उन्हें सदा केवली,तीर्थंकरों का सानिध्य मिलता है जिससे भावों कि विशुद्धि अधिकांश जीवों की चरम सीमा पर होती है ,किन्तु नियम नहीं है कि सभी जीवों को मोक्ष प्राप्त हो जाए !ऐसे भी नियम नहे है कि जो भी विदेह क्षेत्र में जन्म ले लेगा वह सम्यग्दृष्टि हो जाएगा!

राकेश कुमार जैन

आभार -   पंडित रत्न लाल जैन बैनाड़ा जी

अघ्र्य

चौबीसी का अघ्र्य

द्रव्य आठों जु लीना है, अघ्र्य कर में नवीना है |

पूजतां पाप छीना है, 'भानुमल' जोड़ि कीना है ||

दीप अढ़ाई सरस राजै, क्षेत्र दश ता विषै छाजै |

सात शत बीस जिनराजै, पूजतां पाप सब भाजै ||

ॐ ह्रीं पंचभरत, पंच ऐरावत, दशक्षेत्रविषयेषु त्रिंशति चतुर्विंशत्यस्य

सप्तशत विंशति जिनेंद्रेभ्यः नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा |

अथवा

पूजा अर्थ सहित

आभार -पंडित रत्न लाल जैन बैनाड़ा जी

ॐ ह्रीं पांच भरत, पांच ऐरावत, दस क्षेत्र के विषै (संबंधी) तीस चौबीसी के सात सौ बीस जिनेंद्रेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा |

(आगे बीस तीर्थंकरों की पूजा करें | निराकुलता न हो तो निम्न पूजा के अन्त में लिखे अर्घ्य-मंत्र को पढ़कर अर्घ्य चढ़ावें) |

श्री बीस तीर्थंकर पूजा (भाषा)

दीप अढ़ाई मेरु पन, अरु तीर्थंकर बीस |

तिन सबकी पूजा करुं, मन-वच-तन धरि शीस ||

ॐ ह्रीं विद्यमान विंशति-तीर्थंकराः! अत्र अवतर अवतर संवौषट् |

ॐ ह्रीं विद्यमान विंशति-तीर्थंकराः! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः |

ॐ ह्रीं विद्यमान विंशति-तीर्थंकराः! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् |

अथाष्टक

इन्द्र फणीन्द्र नरेन्द्र वंद्य, पद निर्मल धारी,

शोभनीक संसार, सारगुण हैं अविकारी |

क्षीरोदधि सम नीर सों (हो), पूजौं तृषा निवार,

सीमंधर जिन आदि दे, बीस विदेह मंझार |

श्री जिनराज हो, भव तारण जहाज श्री महाराज हो |

ॐ ह्रीं विद्यमान विंशति-तीर्थंकरेभ्यः जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा |1|

(इस पूजा में बीस पुञ्ज करना हो तो प्रत्येक द्रव्य चढ़ाते समय निम्न मंत्र बोलना चाहिए)

ॐ ह्रीं सीमंधर-युगमंधर-बाहु-सुबाहु-संजात-स्वयंप्रभ-ऋषभानन-अनन्तवीर्य-सूर्यप्रभ-विशालकीर्ति-वज्रधर-चन्द्रानन-भद्रबाहु-श्रीभुजंग-ईश्वर-नेमिप्रभ-वीरसेन-महाभद्र-यशोधर-अजितवीर्येति विंशति विद्यमानतीर्थंकरेभ्य जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा |

तीन लोक के जीव, पाप आताप सताये,

पूजा अर्थ सहित

आभार -पंडित रत्न लाल जैन बैनाड़ा जी

तिनको साता दाता, शीतल वचन सुहाये |

बावन चंदन सों जजूं, (हो) भ्रमन-तपन निरवार, सीमंधर0

ॐ ह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यः भवतापविनाशनाय चंदनं

निर्वपामीति स्वाहा |2|

यह संसार अपार महासागर जिनस्वामी,

तातैं तारे बड़ी, भक्ति-नौका जग नामी |

तन्दुल अमल सुगंध सों (हो) पूजौं तुम गुणसार, सीमंधर0

ॐ ह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्

निर्वपामीति स्वाहा |3|

बविक-सरोज-विकास, निंद्य-तम-हर रवि से हो,

जाति-श्रावक-अचार कथन को तुम ही बड़े हो |

फूल सुवास अनेक सों (हो) पूजौं मदन प्रहार,

सीमंधर जिन आदि दे, बीस विदेह मँझार |

श्री जिनराज हो, भव तारण तरण जहाज ||

ॐ ह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं

निर्वपामीति स्वाहा |4|

काम नाग विषधाम, नाशको गरुड़ कहे हो,

क्षुधा महादव-ज्वाल, तासको मेघ लहे हो |

नेवज बहुघृत मिष्ट सों (हो), पूजौं भूख विडार, सीमंधर0

ॐ ह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं

निर्वपामीति स्वाहा |5|

पूजा अर्थ सहित

आभार -पंडित रत्न लाल जैन बैनाड़ा जी

उद्यम होन न देत, सर्व जग मांहिं भर्यो है,

मोह महातम घोर, नाश परकाश कर्यो है |

पूजौं दीप प्रकाश सों (हो) ज्ञान ज्योति करतार, सीमंधर0

ॐ ह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यः मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा |6|

कर्म आठ सब काट, भार विस्तार निहारा,

ध्यान अग्नि कर प्रकट सरब कीनो निरवारा |

धूप अनूपम खेवतें (हो) दुःख जलै निरधार, सीमंधर0

ॐ ह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यः अष्टकर्म विध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा |7|

मिथ्यावादी दुष्ट लोभऽहंकारी भरे हैं |

सब को छिन में जीत, जैन के मेरु खरे हैं |

फल अति उत्तम सों जजौं (हो) वांछित फलदार, सीमंधर0

ॐ ह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा |8|

जल फल आठों द्रव्य, अरघ कर प्रीति धरी है,

गणधर इन्द्रनहू तैं थुति पूरी न करी है |

द्यानत सेवक जानके (हो) जगतैं लेहु निकार, सीमंधर0

ॐ ह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा |9|

जयमाला

सोरठा - ज्ञान सुधाकर चंद, भविक खेतहित मेघ हो |

पूजा अर्थ सहित

आभार -पंडित रत्न लाल जैन बैनाड़ा जी

भ्रम-तम-भान अमंद, तीर्थंकर बीसों नमौं ||

चौपाई 16 मात्रा

सीमंधर 'सीमंधर स्वामी', 'जुगमंधर' जुगमंदिर नामी |

बाहु 'बाहु जिन' जग जन तारे, करम 'सुबाहु' बाहुबल धारे |1|

जातु 'संजातं' केवलज्ञानं, 'स्वयंप्रभ' प्रभु स्वयं प्रधानं |

'ऋषभानन' ऋषि भानन तोषं, 'अनंतवीरज' वीरजकोषं |2|

'सौरीप्रभ' सौरीगुणमालं, सुगुण विशाल 'विशाल' दयालं |

'व्रजधार' भवगिरि वज्जर हैं, 'चंद्रानन' चंद्रानन-वर हैं |3|

'भद्रबाहु' भद्रनि के करता, 'श्रीभुजंग' भुजंगम हरता |

'ईश्वर' सब के ईश्वर छाजैं, 'नेमिप्रभ' जस नेमि विराजैं |4|

'वीर सेन' वीरं जग जाने, 'महाभद्र' महा भद्र बखाने |

नमौं 'जसोधर' जसधरकारी, नमौं 'अजितवीरज' बलधारी |5|

धनुष पांचसौ काय विराजै, आयु कोडि पूरब सब छाजै |

समवशरण शोभित जिनराजा, भव-जल-तारनतरन जिहाजा |6|

सम्यकरत्नत्रय निधिदानी, लोकालोकप्रकाशक ज्ञानी |

शतइन्द्रनिकर वंदित सोहैं, सुन नर पशु सबके मन मोहैं |7|

दोहा - तुमको पूजैं, वंदना, करैं, धन्य नर सोय |

द्यानत सरघा मन धरै, सो भी धरमी होय ||

ॐ ह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यः महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा |

विद्यमान बीस तीर्थंकरों का अर्घ्य

(पूरी पूजा नहीं की हो तो चढ़ाये)

उदक-चंदन-तंदुलपुष्पकैश्चरु-सुदीप-सुधूपफलार्घ्य कैः |

धवल मंगल-गानरवाकुले जिनगृहे जिनराजमहं यजे |1|

अनन्तवीर्य-सूर्यप्रभ-विशालकीर्ति-वज्रधर-चन्द्रानन-भद्रबाहु-श्रीभुजंग-

पूजा अर्थ सहित

आभार -पंडित रत्न लाल जैन बैनाड़ा जी

ईश्वर- नेमिप्रभ- वीरसेन- महाभद्र- यशोधर- अजितवीर्येति विंशति

विद्यमानतीर्थंकरेभ्य नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।